पराग

टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन

बच्चों का मधुर मासिक

आभार : डा. देशदीपक

नवम्बर १९६६

हम दोनों मां और पिता को प्यार करते हैं
वे 'एनर्जी फूड' बिस्कुट लाते हैं

जे॰ बी॰ मंघाराम के
एनर्जी फूड
बिस्कुट

माता-पिता !
आप अपने बच्चों के हृदयों को
जे. बी. मंघाराम के मजेदार और स्वादिष्ट बिस्कुटों और मिठाइयों से जीतिए।

जे. बी. मंघाराम एण्ड कं.

ग्वालियर (भारत)

पराग

अक्तूबर १९६६
१०४वां अंक

WWW.KISSEKAHANI.COM

फोटो : पी. के. भाटिया

अनुक्रमणिका

मुखपृष्ठका चित्र—

बालिका पेड़ोंके झुरमुटमें : भा. वा. जतकर १

मजेदार कहानियां—

किताबकी:.. : रमेश भाटिया १३
एक और एक ग्यारह : फणी मजूमदार १६
रामूकी बहादुरी : प्रियदर्शी प्रकाश ३६
दो नन्ही-मुन्नी कहानियां : हरपालसिंह 'पाल' ४३
नन्ही चिड़िया और ज्ञानी सांप : राजऋषि ४४

चटपटी कविताएं—

गरम जलेबी : सीताराम गुप्त १२
सालगिरहकी दावत : किशोरीरमण टण्डन ३२
अक्षर ये ढाई ही : विश्वबंधु ४९
तब भूल समझमें आई : मंगरूराम मिश्र ५६
भूखा मुझे उठाया है : श्रीप्रसाद ५६
तितली रानी : चंद्रपालसिंह यादव 'मयंक' ५७
डरपोक चुहिया : शंभूप्रसाद श्रीवास्तव ५७

मंच एकांकी—

टोली-प्रवेश : मस्तराम कपूर 'उर्मिल' ८

मनोहर कार्टून-कथा—

छोटू और लंबू : शेहाब २४

धारावाही उपन्यास—

सरकस : माधवन नायर 'मालि' २०

अन्य रोचक सामग्री—

राम-सरोखा-३ : सुशीला रजनी पटेल ४
विज्ञानके कदम : कौशल्यादेवी १९
नंदू और पड़ोसी चंगू (फोटो-कथा) : ब्रह्मदेव २८
छुट्टीका बहाना : सुरेश सावंत ३९
गैलीलियो (लेख) : सुरजीत ४०

स्थायी स्तंभ—

कुछ अटपटे कुछ चटपटे : संपादक ६
छोटी छोटी बातें : सिम्स २३
जीनेकी कला—१ : अलकारानी जैन ३०
आओ मेरी खिड़कीमें बैठो : आशालता ३५
खेल-कूद—टेबिल टेनिसकी कहानी-१ : हरिमोहन ४८
खिलौनोंका डिब्बा : अरुणकुमार ५२
रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५४ : 'पराग' कला विभाग ५९

राम-भक्त शबरी चख चखकर मीठे मीठे बेर रामको दे रही है

राम-झरोखा

(३)

बच्चो, पिछले अंकोंमें तुम राम, लक्ष्मण तथा सीताके पंचवटी पहुंचने तथा वहां सीता द्वारा रामसे सोनेके हिरनको मारकर लानेका आग्रह करने तककी कथा पढ़ चुके हो। राम उस हिरनको मारने चल दिए। थोड़ी देरमें सीता और लक्ष्मणको आवाजें सुनाई दीं—'हे सीते, हे लक्ष्मण!' सीताने समझा कि राम किसी मसीबतमें पड़ गए हैं, इसलिए उन्होंने लक्ष्मण-से रामकी सहायताके लिए जानेको कहा। लक्ष्मणके चले जानेके बाद रावण, जो पास ही छिपा हुआ था, साधुका भेष बनाकर आया और भिक्षा मांगने लगा। जब सीता उसे भिक्षा देने

कुटीके बाहर आईं, तो वह उन्हें जबरदस्ती अपने रथपर बिठाकर लंकाकी ओर ले चला ।

जाते जाते सीताने एक पर्वत पर कुछ वानरोंको बैठे देखा। सीताने, यह सोचकर कि ये शायद रामको मेरा समाचार दे दें, अपने आभूषण उतारकर नीचे फेंक दिए। वानरोंने उन आभूषणोंको उठा लिया ।

राम और लक्ष्मण जब हिरनको मारकर कुटियामें लौटे, तो सीताको न पाकर वे उन्हें ढूंढ़ने निकले । रास्तेमें उन्हें जटायु पक्षी मिला, जिसे सीताको छुड़ानेके प्रयत्नमें रावणने घायल कर दिया था । सारी बात बतानेके बाद जटायुकी मृत्यु हो गई । उसका अंतिम संस्कार करके राम-लक्ष्मण आगे बढ़े ।

आगे बढ़ते हुए वे शबरी नामकी एक वृद्धाकी कुटीपर पहुंचे, जो अनेक वर्षोंसे रामके आनेकी बाट जोह रही थी । उसने उन्हें चख चखकर चुने हुए मीठे बेर खिलाए (पहले चित्रमें शबरी रामको बेर भेंट कर रही है) ।

सीताकी खोजमें आगे बढ़ते हुए रामकी भेंट उन्हीं वानरोंसे हुई, जिन्होंने सीता द्वारा फेंके गए आभूषण उठाए थे। वानरोंने वे आभूषण उन्हें दिखाए। आभूषणोंको देखकर रामको सीताकी याद आ गई और वह और भी दुखी हो गए (दूसरे चित्रमें वानर शोकग्रस्त रामको आभूषण दिखा रहे हैं) ।

रामके आदेशपर वानरोंके राजा सुग्रीव ने हनुमानजीको सीताका पता लगानेको भेजा ।

इसके बाद रामने वानरोंकी सहायतासे लंकापर चढ़ाई की । रावणका भाई विभीषण रामसे आ मिला । लंकाकी विजयमें अब कोई बाधा नहीं रही ।

रावणने अपने भाई कुंभकरण और पुत्र मेघनादकी सहायतासे रामकी सेनाओंका मुकाबला किया। घनघोर युद्ध हुआ। आखिर रावण मारा गया । रामकी इस लंका-विजयको आज भी अधिकांश भारतीय विजय-दशमी अथवा दशहरेके त्योहारके रूपमें मनाते हैं ।

उधर वनवासकी अवधि भी खत्म हो गई थी । इसलिए राम विभीषणको लंकाका राज्य सौंपकर और सीताजीको साथ लेकर हंसी-खुशी अयोध्या लौटे गए । ●

वानर रामको सीताके आभूषण दिखा रहे हैं

दृश्य निर्माण : सुशीला रजनी पटेल
छाया : 'पराग' कला विभाग

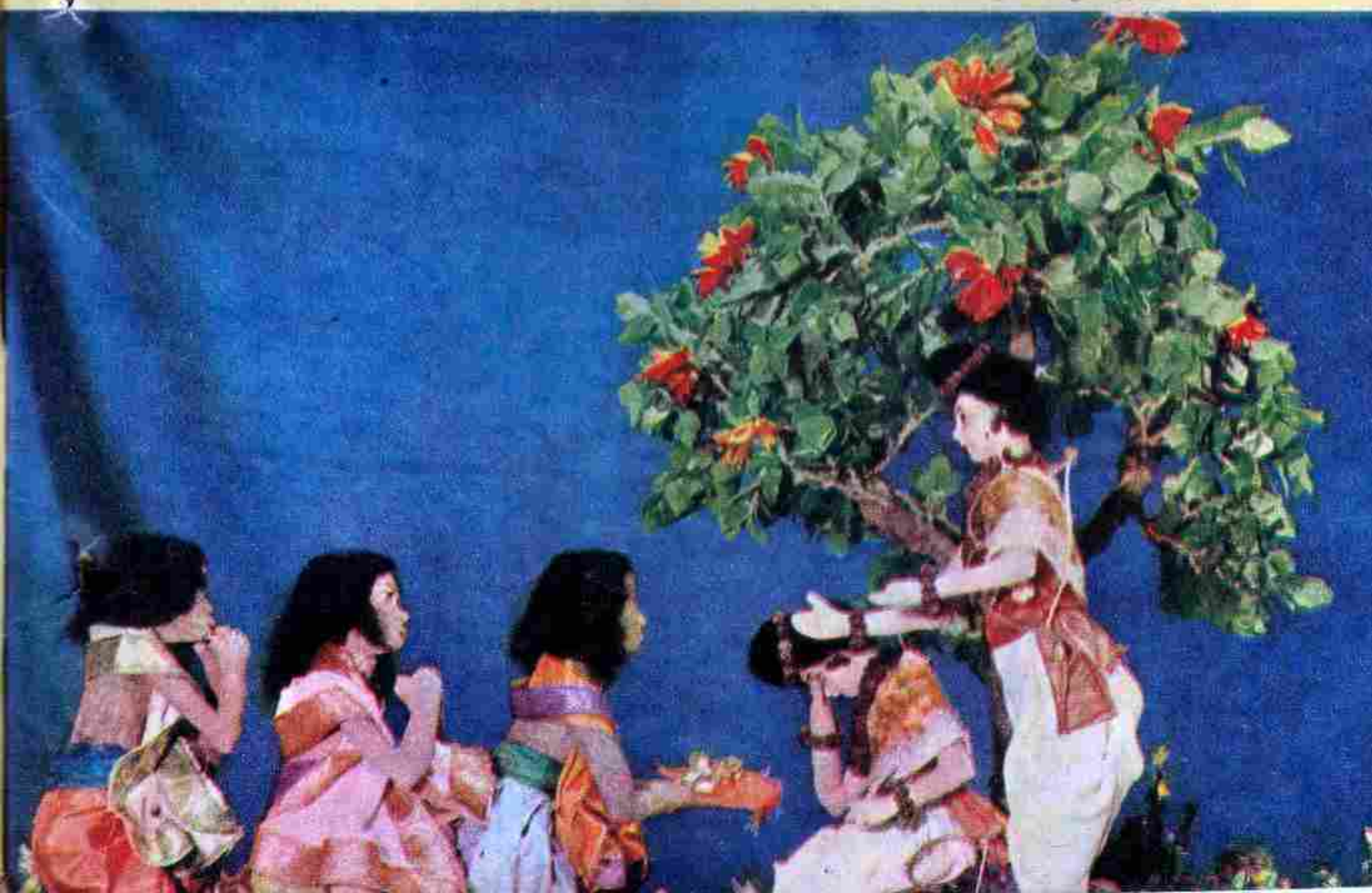

कुछ अटपटे कुछ चटपटे

स्नेहदीप अग्निहोत्री, कानपुर :

जब आदमीको गधा कहा जाता है, तो गधेको आदमी क्यों नहीं कहा जाता?

कहनेकी बात तो दूर, कुछ तो एकदम आदमी ही नजर आते हैं!

त्रिभुवनराम भट्ट, खंडवा :

क्या यह सच है कि कुछ लोगोंके दिमागमें गोबर भरा रहता है?

इस तरहका वहम नहीं पालना चाहिए—खास तौर से अपने बारेमें!

सुमित्राकुमारी, अधाम :

बिना बुलाए मेहमानके प्रति मेजबानका क्या कर्त्तव्य है?

धन्यवाद अर्पित करना कि बुलानेका कष्ट दिए बिना ही उन्होंने अनुकंपा की!

विजयकुमार, लहेरिया सराय :

चुभन पैरोंमें होती है, चीख मुंहसे निकलती है, क्यों?

लाउडस्पीकर रेकर्ड-प्लेयरसे ऊंचे टंगा होनेके कारण!

कीर्तिकांत त्रिवेदी, दुर्ग :

काले व्यक्ति और गोरे व्यक्ति दोनोंकी परछाईं काली ही क्यों होती है? गोरे व्यक्तिकी परछाईं सफेद क्यों नहीं होती?

क्योंकि गोरे व्यक्ति अदृश्य होना पसंद नहीं करते!

सुमतचंद्र जैन, नई दिल्ली—५ :

गालीका आविष्कार किसने किया?

जिसने सबसे पहले प्रक्षेपणास्त्रोंके प्रयोग किए!

शेख शब्बीर दाउद, पूना–२ :

आदमी अपने बचपनकी तोतली भाषा क्यों भूल जाता है?

ससुरालमें हंसी न उड़े, इसलिए!

रामावतार गग्गड़, बम्बई–१८ :

कहावत है—जितने छोटे उतने खोटे; शास्त्रीजी इतने छोटे थे, तो क्या वह भी खोटे थे?

शास्त्रीजी बड़े छोटे थे तुम छोटे ही छोटे हो!

ज्यादातर लोग विदेशी मालको पसंद करते हैं, भारतीय मालको बहुत कम—ऐसा क्यों?

क्योंकि हमारे कारीगर हड़ताल ज्यादा करते हैं, पढ़ताल कम!

केशवप्रसाद बरनवाल, पानीतोला :

कंजूसको मक्खीचूस क्यों कहा जाता है?

क्योंकि मक्खियां खाद्य-कर वसूल करनेमें सबसे आगे होती हैं!

बच्चोंकी तुलना बादशाहोंसे क्यों की जाती है?

क्योंकि उन्हें भी खाली बैठे खुराफातें सूझती हैं!

विजयलक्ष्मी, नई दिल्ली–१४ :

डेढ़ बजेको साढ़े एक और ढाई बजेको साढ़े दो क्यों नहीं कहते?

जिन डेढ़ या ढाई फुटे बच्चोंकी बार बार पुकार होती है, उनके नाम इसी तरह बिगड़ जाते हैं!

सुभाषचंद्र, लश्कर :

हमारी सरकार उद्घाटन मंत्री नियुक्त करे, तो कैसा रहे?

अधिकतर मंत्रियोंका रहस्योद्घाटन होते ही वे इस्तीफे जो दे देंगे!

अशोककुमार, ताजपुर :

गुस्सेसे 'लाल' तो हो सकता हूं, पर 'बहादुर' कैसे बनूं?

अगर गुस्सेकी बनिस्बत तपसे लाल बनो, तो बहादुर अपने आप बन जाओगे!

'मूंछें मर्दकी शान हैं', फिर सभी बड़ी बड़ी मूंछें क्यों नहीं रखते?

क्योंकि शान बघारना कोई अच्छी बात नहीं!

भारतभूषण सचदेव, मेरठ छावनी :

सेंसर बोर्डकी कैंची और दर्जीकी कैंचीमें क्या अंतर है, जबकि दोनों कटिंगके काम आती हैं?

पहली प्रोड्यूसरकी जेब काटती है, दूसरी उन्हें सीती है!

पुष्पा, गया :

सभी चीजोंका मूल्य तो बढ़ गया, पर रुपयेका मूल्य क्यों घटा?

हमेशा दूसरोंके दरवाजेपर खड़े रहनेके कारण!

रविंद्रकुमार गुप्ता, कलकत्ता–७:

जीवन अधिक बलवान है या मृत्यु?

बच्चोंके अटपटे प्रश्नोंके चटपटे उत्तर हम इस स्तंभमें छापते हैं। जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदरसे पुरस्कार मिलेंगे। जिन्हें पुरस्कार मिले हैं, उनके नामके पहले ★ का निशान लगा है। प्रश्न कार्डपर ही भेजो और एक बारमें तीनसे ज्यादा न भेजो। इस स्तंभमें पहेलियोंके उत्तर नहीं दिए जाएंगे। पता याद कर लो: संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)' पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१

जीवन, जो अपने रहते मृत्युको पास नहीं फटकने देता!

कु. मुमताज नसरीन सिद्दीकी, पौढ़ी (गढ़वाल):

इज्जत, शोहरत और दौलतमें आप किसको पसंद करते हैं?

हम संपूर्ण स्त्री जातिको सम्मानकी दृष्टिसे देखते हैं!

शरदकुमार माथुर, इलाहाबाद :

घरमें झाड़ू लगाना अच्छी बात है, लेकिन जब चोर झाड़ू लगा जाते हैं, तो बुरा लगता है—क्यों?

पारिश्रमिक आवश्यकतासे अधिक ले जानेके कारण!

पी. प्रमिला, बिलासपुर :

यदि सारे विश्वके लोग एक जगह एकत्र होकर पांच मिनिट तक 'हो हो' करके चिल्लाएं, तो उनके शब्दोंकी ध्वनि कितने मील तक सुनाई देगी?

जब सब चिल्लानेमें ही लगे होंगे, तो सुनाई किसे देगी?

महेंद्रकुमार जैन, रतलाम :

भूखेके पेटमें चूहे दौड़ते हैं, तो प्यासेके पेटमें?

जबान तालूसे चिपक जाती है, कंठमें कांटे खड़े हो जाते हैं—हर बातका असर पेटपर ही नहीं पड़ता!

ओ. पी. गुरंग, चैल :

हम रोज बातें करते हैं, फिर भी हमारी बातें खत्म नहीं होतीं—क्यों?

क्योंकि गोल दायरेका सिरा कभी हाथ नहीं आता!

सत्यप्रसाद महापात्र, जगदलपुर :

क्या कारण है कि बुद्धिमान व्यक्ति अक्सर गंजा होता है?

सिरपर सुरक्षाके साधनोंकी आवश्यकता न रहनेके कारण!

बिमलकुमार लाल, जमशेदपुर – ५ :

क्या झापड़ और पापड़ साथ साथ खाए जा सकते हैं?

जरूर—अगर पापड़ भी झापड़की तरह जबड़ातोड़ हों!

बी. बी. बंसल, साकची :

क्या समय किसीकी प्रतीक्षा करता है?

क्यों नहीं—हर आने वाला महीना 'पराग' की प्रतीक्षा करता है!

निखिलेशदास, नई दिल्ली–१६ :

भुलक्कड़ लोग क्या नहीं भूलते?

अपनी आदत!

निर्मलकुमार दीक्षित, कानपुर–५ :

यदि मैं आपके जन्म-दिवसके उपलक्ष्यमें आपको एक दाढ़ी-मूंछोंका जोड़ा भेंट करूं, तो आप मेरे जन्म-दिवसपर मुझे क्या भेंट करेंगे?

दाढ़ीका एक कामता बाल!

अमरजीतसिंह, दिल्ली–१४ :

मुद्रा-अवमूल्यनका आपकी दाढ़ीपर क्या प्रभाव पड़ा?

पहले आधा दूध वह पी जाती थी, अब उसे उतारकर दूध पीना पड़ता है!

प्रदीपकुमार जायसवाल, वाराणसी :

हमारे आंसू खारे क्यों होते हैं?

लाइमजूस, लैमनड्राप, टॉफी आदिकी बिक्री ठप्प न हो जाए, इसी लिए!

रीता खण्डेलवाल, आगरा–२ :

यदि हमारे सिरमें बालोंकी जगह गेहूं, जौ, मक्का आदि उगने लगें, तो?

तो तुम्हें भी भारत सरकारका खाद्य मंत्री बना दिया जाए!

★ मफतलाल बजारी, द्वारा शंकरलाल रामरतन, बर्मा शेल एजेण्ट, बालोतरा (राज०):

जब बादल गरजते हैं, तब पानी बरसता है; जब सैनिक गरजते हैं तब गोलियां बरसती हैं; परंतु जब नेता गरजते हैं तब क्या बरसता है?

वोटें!

★ अभयकुमार सिंह, अपर फ्लोर, डी. सी. डी. एफ. आफिस, बस्ती (उ. प्र.):

मच्छर अत्यंत दुबले-पतले आदमीको देखकर क्या सोचता है?

यही कि अमरीकन गेहूं न मिलनेसे क्या मच्छरोंकी खाद्य समस्या भी यह रूप ले सकती है! ●

(नई दिल्लीकी एक बस्तीमें सुनसान गलीका एक भाग। जाड़ोंका मौसम, रातके लगभग साढ़े सात बजेका समय, आसपास घुप्प अंधेरा। खंभेके नीचे बिजलीकी रोशनीमें गिरीश गेंदसे अकेला ही खेल रहा है। एक बार खेल रोककर वह अंगुलियां जीभके नीचे दबाकर सीटी बजाता है। उसरमें दूरसे एक सीटी सुनाई पड़ती है। कुछ देर बाद हरिकृष्ण भागता भागता अंधेरेमेंसे रोशनीमें प्रवेश करता है।)

गिरीश (खेल रोककर) : अरे, तुम तो ऐसे टपक पड़े, जैसे कहीं पास ही छिपे बैठे थे!

हरिकृष्ण : मैं जब घरसे निकला, तो तुम्हारी सीटी सुनाई दी, बस पच्चीस मीलकी स्पीडसे चला आ रहा हूं!

गिरीश : अच्छा, अपने पैसे ले आए तुम?

हरिकृष्ण (रूमाल में लगी गांठ दिखाकर) : हां, हां, लेकिन इनका करना क्या है?

गिरीश : हां, तुम तो कल आए नहीं थे न; लेकिन तुम्हें आज विपिनने कुछ नहीं बताया?

हरिकृष्ण : उसने तो दूरसे आवाज देकर इतना ही कहा कि शामको जरूर आना और पैसे ले आना।

बाल-एकांकी प्रतियोगिता में
द्वितीय पुरस्कार प्राप्त नाटक

टोली-प्रवेश

WWW.KISSEKAHANI.COM

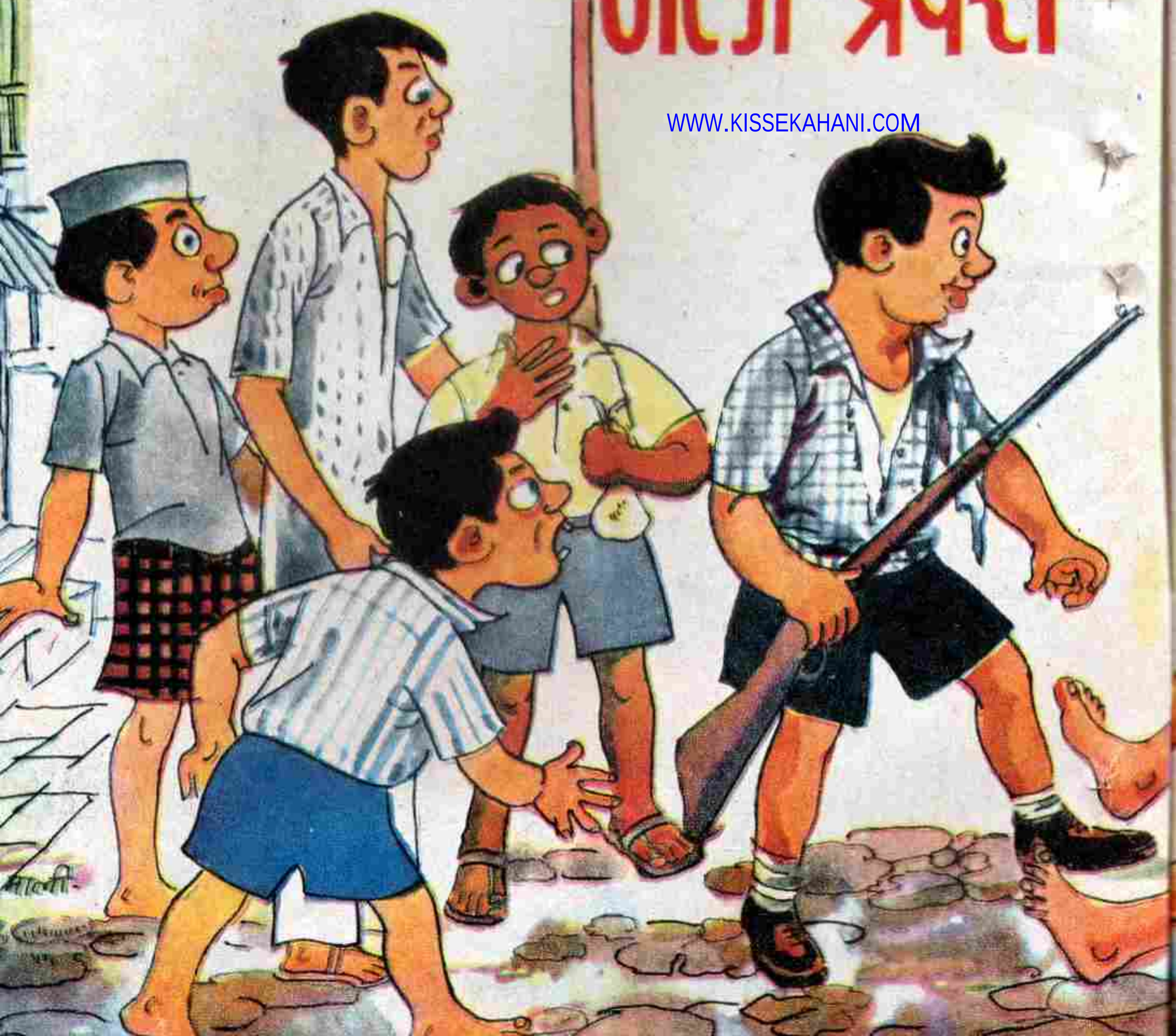

गिरीश : वह रमेशका कुत्ता था न. . .

हरिकृष्ण : राजा? क्या हुआ उसे?

गिरीश : कल बेचारा मर गया।

हरिकृष्ण : अरे, परसों तो वह हमारे साथ ग्राउंडमें खेल रहा था!

गिरीश : लेकिन कल अचानक बीमार हो गया और दो-तीन घंटेमें ही मर गया।

हरिकृष्ण : बेचारा कितना अच्छा था! मुझे तो वह दूरसे ही पहचान लेता था।

गिरीश : वह तो हम सबको पहचानता था। लेकिन हम पांच-छह दोस्तोंके सिवाय और किसीको खुदको छूने भी नहीं देता था।

हरिकृष्ण : रमेशको तो बहुत दुःख हुआ होगा।

गिरीश : दुःख तो हम सबको ही है। राजा सिर्फ रमेशका ही नहीं, हमारा भी साथी था। इसी लिए तो हमने रमेशके लिए एक नया कुत्ता खरीदनेकी स्कीमं बनाई है।

हरिकृष्ण : अच्छा! यह तो बहुत अच्छी बात है। लेकिन लाएंगे कहांसे नया कुत्ता?

गिरीश : चार नंबर कोठीका माली है न। उसके घरमें कुतियाने चार बच्चे दिए हैं। तीन तो बिक गए, चौथा हमने अपने लिए रखवा लिया है। बहुत सुंदर पिल्ला है। बड़ा होकर राजा जैसा ही लगेगा. . .

(अचानक पटाखा छूटनेकी आवाज होती है। दोनों चौंक कर इधर-उधर देखते हैं। एक अजनबी लड़का हाथमें बंदूक लिये प्रवेश करता है।)

गिरीश : ए लड़के. . . क्या कर रहे हो यहांपर?

लड़का : कुछ नहीं, यों ही जरा टहल रहा हूं।

हरिकृष्ण : यह हाथमें क्या है?

लड़का : बंदूक।

हरिकृष्ण : दिखाओ तो...

लड़का : नहीं दिखाता।

गिरीश : अरे, बड़ी हेकड़ी दिखाता है। क्या नाम है तेरा?

लड़का : कैलाश; क्यों क्या इरादा है?

गिरीश : इरादा?. . . बंदूक देते हो या लगाऊं करारा झापड़?

कैलाश : नहीं देता, मेरी चीज है, मेरी मर्जी।

हरिकृष्ण : तो यहांसे भाग जाओ।

कैलाश : क्यों? क्या सड़क तुम्हारी है?

गिरीश : हां, हमारी है। हमारी यहां मीटिंग होने वाली है।

कैलाश : मैं नहीं जाता, कर लो, क्या करते हो?

(गिरीश और हरिकृष्ण एक दूसरेको देखते हैं।)

गिरीश (हरिकृष्णसे) : सुपनुधीपनीर कोपनी आपनाने दोपनो। उपनुसके एपनेक मुपनुक्के सेपने ठीपनीक होपनो जावनाएपनेगा।

हरिकृष्ण : भीपनीम सेपनेन कापना मुपनुक्का।

(कैलाश यह अजीब भाषा सुनकर हैरानीसे उनकी ओर देखता है।)

गिरीश : सुपनुधीपनीर कोपनोसीपनीटी दोपनो।

(हरिकृष्ण सीटी बजाता है, जवाबमें एक सीटीकी आवाज आती है।)

हरिकृष्ण : ए लड़के, भाग जाओ यहांसे, नहीं तो हमारी टोलीका भीमसेन तुम्हारा कचूमर निकाल देगा।

कैलाश : अच्छा, मैं तुम्हें अपनी बंदूक दिखा दूं, तो क्या तुम मुझे अपनी यह बोली सिखा दोगे?

हरिकृष्ण : यह तो हमारी टोलीकी बोली है। जो टोलीमें होगा, हम उसीको सिखाते हैं।

कैलाश : तो मुझे अपनी टोलीमें शामिल कर लो।

गिरीश : तुम कहां रहते हो?

कैलाश : सामनेवाले मकानमें। हम परसों ही

-- मस्तराम कपूर 'उर्मिल'

भोपालसे आए हैं।

गिरीश : विपिन हमारी टोलीका सरदार है। वह आएगा, तो हम उससे कहेंगे।

कैलाश (बंदूक आगे बढ़ाकर) : लो, देख लो इसे। यहां गोली डालो, फिर यह घोड़ा दबाओ और. . .

(बंदूक की आवाज होती है। गिरीश और हरिकृष्ण बारी बारीसे बंदूक चलाकर देखते हैं। इतनेमें वहां दो लड़के और आते हैं। सुधीर भारी-भरकम शरीरका लड़का है और मोहन उससे ठीक उल्टा दुबले-पतले शरीरका।)

सुधीर : हरिकृष्ण, तुमपर दो आने जुर्माना किया जाता है।

हरिकृष्ण : क्यों?

सुधीर : कल क्यों नहीं आए थे?

हरिकृष्ण : हमारे चाचाजी आ गए थे. . .

सुधीर : बस बस, चाचाजी आएं या मामाजी; जुर्माना देना ही पड़ेगा। क्यों, मोहन, ठीक है न?

मोहन : बिलकुल ठीक, सोलहों आने ठीक।

हरिकृष्ण : तुम कौन होते हो जुर्माना करने वाले? विपिन कहेगा, तो दे देंगे।

सुधीर : विपिन तुम्हारी तरफदारी करता है, लेकिन हम इस बार नहीं मानेंगे। हमें भी तो जुर्माना देना पड़ता है। क्यों, मोहन, ठीक है न?

मोहन : बिलकुल सोलहों आने ठीक, लेकिन विपिन-के घर आज मेहमान आए हुए हैं। वह शायद आज नहीं आएगा।

गिरीश : नहीं नहीं, विपिन जरूर आएगा। लो मैं आवाज लगाता हूं।

(गिरीश दो अंगुलियां जीभके नीचे दबाकर जोरकी सीटी बजाता है। दूरसे उत्तरमें एक सीटीकी आवाज आती है।)

गिरीश : लो, वह आ रहा है।

(कैलाश आश्चर्यसे गिरीशकी ओर देखता है और फिर दो अंगुलियां जीभके नीचे रखकर सीटी बजानेकी कोशिश करता है, किंतु सीटी नहीं बजती। दूसरे लड़के हंस पड़ते हैं और वह शर्मिंदा हो जाता है।)

सुधीर : यह लड़का कौन है?

गिरीश : सामनेके मकानमें रहता है। ये लोग कल ही आए हैं।

सुधीर : यहां क्या करने आया है?

हरिकृष्ण : यह हमारा दोस्त है।

मोहन : एक ही दिनमें तुम्हारा दोस्त बन गया?

सुधीर : लेकिन हम अपनी टोलीमें किसीको शामिल नहीं करेंगे। क्यों, मोहन, ठीक है न?

मोहन : बिलकुल सोलहों आने ठीक है।

हरिकृष्ण : तुम कौन होते हो फैसला करने वाले?

मोहन : देखो, भई, बात बातपर झगड़ा करना ठीक नहीं। विपिनको आ जाने दो।

सुधीर : हर बातका फैसला विपिन ही करेगा, तो हम कुछ नहीं हैं? क्यों, मोहन?

मोहन : बिलकुल सोलहों आने ठीक है!

(विपिन आता है।)

विपिन : क्या बात है, सुधीर? क्यों गर्मी दिखा रहे हो?

सुधीर : देखो, विपिन, यह लड़का दलमें नहीं है। इसे बाहर निकालो **(मोहनकी ओर देखता है)**।

मोहन : बिलकुल सोलहों आने ठीक है. . .

विपिन : कौन है यह?

हरिकृष्ण : मेरा दोस्त है कैलाशकुमार। इसके पास एक बंदूक भी है। बहुत अच्छा निशाना लगाता है।

विपिन : अच्छा! **(कैलाशसे)** दिखाओ तो जरा अपनी बंदूक।

(कैलाश प्रसन्न होकर बंदूक देता है।)

विपिन : बंदूक तो बहुत अच्छी है। कैसे चलाते हैं इसे?

(कैलाश बंदूक अपने हाथमें लेकर हवामें फायर करता है। आवाजसे सुधीर चौंक पड़ता है।)

गिरीश : यह सुधीर सबको हैकड़ी दिखाता फिरता है। दिल तो इसका कबूतर जैसा है। जरा-सी आवाजसे डर गया।

सुधीर : कौन डर गया? हम तो बड़ी बड़ी बंदूकोंसे भी नहीं डरते। क्यों, मोहन?

मोहन : बिलकुल सोलहों आने ठीक. . . हम तो तोपोंसे भी नहीं डरते!

हरिकृष्ण : हमारे दलमें एक बंदूकवाला भी होना चाहिए।

कैलाश : मेरे पास फुटबाल भी है। हम सब लड़के फुटबाल खेला करेंगे।

विपिन : ठीक है, लेकिन तुम अभी तक हमारी टोली-के सदस्य नहीं हो, इसलिए तुम यहां नहीं ठहर सकते।

सुधीर : हां हां, बिल्कुल ठीक है।

(कैलाश चुपचाप बंदूक लेकर कुछ दूर हट जाता है और फिर लड़कोंकी ओर पीठ करके खड़ा हो जाता है।)

विपिन : मोहन, तुम रमेशके घर गए थे?

मोहन : हां, आज गया था।

विपिन : कैसा है वह अब?

मोहन : अब तो कुछ चलने-फिरने लगा है। लेकिन उसे राजाकी बहुत याद आती है।

सुधीर : राजा बहुत प्यारा कुत्ता था। मुझे भी उसकी बहुत याद आती है।

गिरीश : हम सबको उसकी याद आती है। क्यों, हरि?

हरिकृष्ण : हां हां, वह हम सबका कुत्ता था।

विपिन : और यह नया कुत्ता भी हम सबका होगा। हम सब उसे प्यार कर सकेंगे।

सुधीर : प्यार तो बादमें करेंगे, पहले कुत्ता ले तो आओ।

विपिन : कल आ जाएगा। अढ़ाई रुपयेकी तो बात है। अच्छा लाओ, अपने अपने पैसे जमा करो।

(विपिन रूमाल बिछाता है और सब लड़के अपनी अपनी जेबें खाली करके पैसे रूमालपर डालते हैं। कैलाश बड़े ध्यानसे उन्हें देखता है। विपिन पैसे गिनता है।)

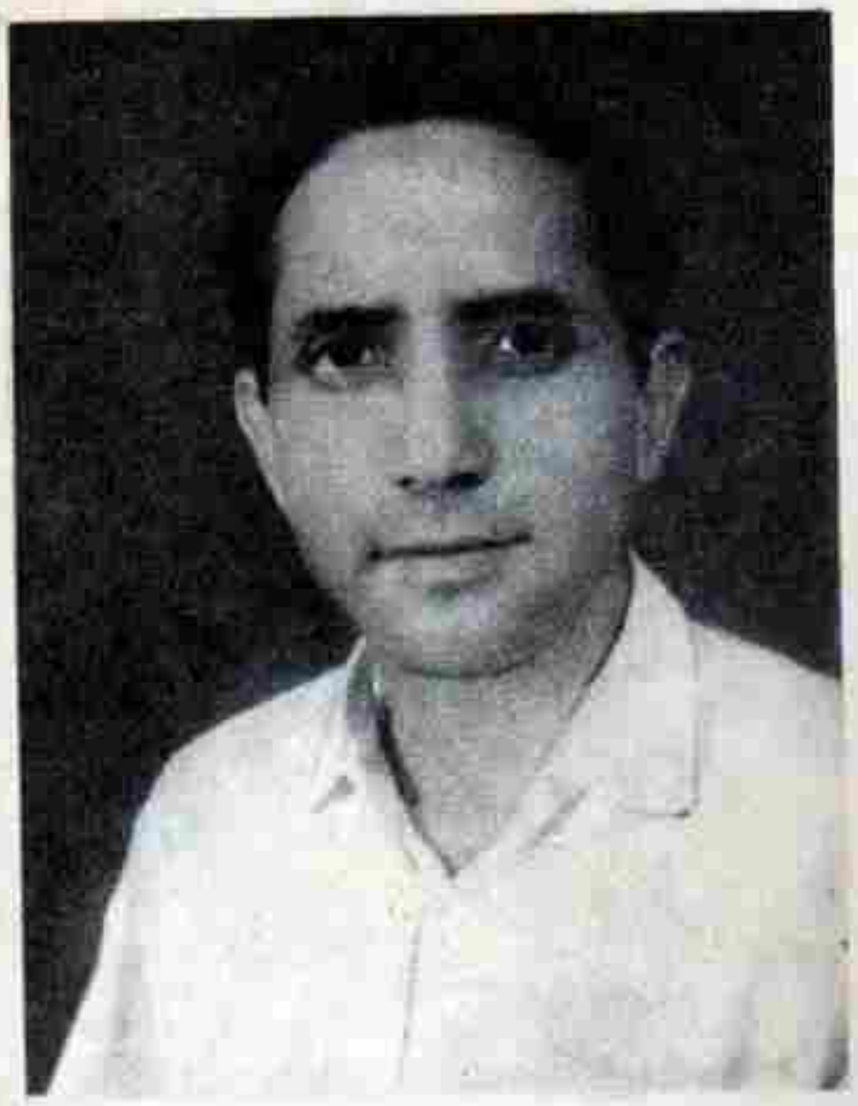

लेखक-परिचय

श्री मस्तराम कपूर 'उर्मिल' का जन्म-स्थान कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश) है। शिक्षा मंडीमें पाई। लगभग पंदरह वर्षोंसे बच्चोंके लिए लिख रहे हैं।

'किशोर-जीवनकी कहानियां' (दो भाग), 'स्पर्धा' (नाटक) तथा 'बच्चोंके नाटक' (एकांकी संग्रह) पुस्तक-रूपमें प्रकाशित हो चुके हैं। वैसे बच्चोंके लिए फुटकर बहुत लिखा है, जिसमेंसे लगभग पचास कहानियां और नाटक भिन्न भिन्न बाल-पत्रिकाओंमें अब तक छप चुके हैं।

आपकी अधिकांश कहानियां खुदकी बचपनकी स्मृतियोंपर आधारित हैं। इस समय बाल-साहित्यपर शोध-कार्यमें व्यस्त हैं।

पता : बी–२४ कर्बला, लोदी रोड, नई दिल्ली-३।

विपिन (पैसे गिनकर) : दो रुपए और दस पैसे।

मोहन : यानी चालीस पैसे कम रह गए।

गिरीश : अगर हम कलका जेब-खर्च भी जमा कर दें, तो चालीस पैसेकी कमी आसानीसे पूरी हो जाए।

विपिन : लेकिन कुत्ता तो आज ही लाना है। मालीने आजका ही वायदा किया है। सुबह वह उस कुत्तेको बेच देगा।

मोहन : हां हां,सोलहों आने ठीक। मैं कल उसके घर गया था। उसने सब कुत्ते दे दिए हैं। सिफ हमारा कुत्ता बचा है। कहता था कुछ ग्राहक इस कुत्तेके पांच रुपये देनेको तैयार हैं।

विपिन : सौदा तो हमारे साथ हो चुका है।

सुधीर : लेकिन सौदा तो आज तकका है।

हरिकृष्ण : अच्छा, तुम लोग ठहरो, मैं अभी ले आता हूं चालीस पैसे।

विपिन : कहांसे?

हरिकृष्ण : मांसे मांगूंगा।

विपिन : मां पूछेगी किस लिए चाहिएं, तो?

हरिकृष्ण : मैं कहूंगा, हमारे दोस्तका कुत्ता मर गया है, हम सब उसके लिए एक नया कुत्ता खरीदना चाहते हैं।

विपिन : अगर मांने पैसे नहीं दिए, तो?

हरिकृष्ण : मैं सच सच सारी बात बता दूंगा, तो मां जरूर दे देगी।

विपिन : अच्छा, जाओ।

(वह जाने लगता है, इतनेमें कैलाश आगे बढ़कर उसे रोकता है।)

कलाश : ठहरो, हरि।

(हरिकृष्ण रुक जाता है)

कैलाश : मेरे पास आठ आने हैं।

विपिन : लेकिन तुम तो हमारी टोलीके नहीं हो?

कैलाश : तो क्या हुआ। यह लो आठ आने।

सुधीर : नहीं नहीं, हमें तुम्हारे पैसे नहीं चाहिएं। भाग जाओ यहांसे।

कैलाश : क्यों? क्या सड़क तुम्हारी है?

मोहन : सोलहों आने ठीक बात पूछी, वाह!

सुधीर (पहले मोहनकी ओर देखता है, फिर कैलाशसे) : भागता है या लगाऊं दो झापड़?

कैलाश (गुस्से से) : ए पैटन टैंक, जबान संभालकर बोल।

(पैटन टैंकका संबोधन सुनकर सब लड़के हंस पड़ते हैं। सुधीरको और गुस्सा आता है और वह कैलाशकी कमीज पकड़ लेता है। दोनों गुत्थम-गुत्था होते हैं। सुधीर कैलाशकी कमीज फाड़ देता है और कैलाश लंगड़ी मारकर सुधीरको नीचे पटक देता है। विपिन बीचमें पड़कर दोनोंको छुड़ाता है। इतनेमें कैलाशके पिताजी वहां आते हैं।)

कैलाशके पिता : कैलाश! यह क्या हो रहा है?

(कैलाश चुप रहता है और सब लड़के भी चुप हैं।)

पिता : यहां क्या कर रहे हो? अरे यह तुम्हारी कमीज किसने फाड़ी?

(कैलाश अपनी कमीजकी ओर देखता है और चुप रहता है)

पिता : लड़ाई-झगड़ा हो रहा था? क्यों, चुप क्यों हो?

कैलाश : नहीं, पिताजी, हम लोग खेल रहे थे . . .

पिता : कपड़े फाड़नेका खेल खेल रहे थे? कौन हैं ये लड़के?

कैलाश : ये मेरे दोस्त हैं, पिताजी।

पिता : अच्छा. . . कल तुम यहां आए हो, आज तुमने इतने सारे दोस्त भी बना लिए!

कैलाश : जी. .. ये सब बहुत अच्छे लड़के हैं।

(शेष पृष्ठ २७ पर)

गरम जलेबी

मैं गरम जलेबी रसवाली!

लड्डू की हमजोली, पर
बरफी से बहुत पुरानी हूं;
काकी हूं सगी इमरती की,
मैं रसगुल्ले की नानी हूं!

मेरे आगे कल की बच्ची
चमचम, मिठाइयां बंगाली!

कुरमुरी, करारी, पापड़-सी,
पर भरी हुई रस की गागर;
हर सुबह नाश्ता सजने पर,
रहता आगे मेरा नंबर!

बालूशाही तो बुढ़िया है,
खुरचन महंगी नखरेवाली!

लाखों के मुंह में मुझे देख,
अब भी भर आता है पानी;
अब भी बच्चों की मनभाती,
बूढ़ों की जानी-पहचानी!

मेरी तारीफ बहुत करतीं,
दादियां पोपले मुंहवाली!

मंदिर के पांडेजी मुझ को
लखकर प्रसन्न हो जाते हैं,
मुझ को पाने को चौबेजी
अपना हर दांव चलाते हैं!

जिजमान जलेबी लाते जब,
उस दिन मन जाती दीवाली!

—सीताराम गुप्त

कहानी

किताब की तलाश

WWW.KISSEKAHANI.COM

– रमेश आटिया

काकाको कौन नहीं जानता। मुहल्लेके किसी कोनेमें निकल जाइए, बच्चोंकी खिलखिलाती भीड़ देखिए, तो समझ जाइए कि काकाकी महफिल जमी है। काकाके पैर जूतोंसे बाहर झांकते रहें, उनके गहरे रंगके खादीके कुरतेपर पैबंदपर पैबंद लगते रहें, पर उनकी चारों ओर नन्हे-मुन्नोंकी भीड़ कम नहीं हो सकती। वास्तवमें काकासे अधिक मजेदार व्यक्ति मिलना मुश्किल है।

पके आम जैसे बूढ़े चेहरेसे ऊपर उठकर तोतेकी चोंच-की तरह मुड़ती नाक और उसपर रोबसे कान पकड़े बैठी चांदीके फ्रेमकी ऐनक बरबस मन मोह लेती है। मंद मंद मुस्काते होंठोंके बीच लटकते दो-एक दांत दूरसे ही चमकते हैं। और इनके कुरतेके दूसरे बटन तक फैली बर्फ-सी सफेद दाढ़ीका तो कहना ही क्या। जब भी काका घरसे निकलते, गली-मुहल्लेके बच्चे दौड़कर उन्हें घेर लेते। यूं तो मुहल्लेमें रोज ही भीड़ लगती थी—कभी डुगडुगीकी तालपर इतराते बंदर-बंदरियाके लिए, तो कभी एकसे अनेक कबूतर बनाने वाले मदारीके लिए, लेकिन काकाकी चारों ओर भीड़ लगानेका अपना ही मजा था। कहीं काकाकी कमान-सी मुड़ी कमरपर सवारी करनेका अवसर मिल जाए, तो सब खेल-तमाशे धरेके धरे रह जाएं।

काकाके दिमागमें कहानियां तो जैसे लबालब भरी थीं। इधर बच्चे इकट्ठे हुए और उधर कहानी शुरू—कभी लाल परीकी और कभी अलादीनके जादुई चिरागकी। काकाकी अलमारी किताबोंसे ठसाठस भरी थी और वह इन किताबोंकी सारी कहानियां बच्चोंको सुनाना चाहते थे। पर, बच्चोंकी हनुमान सेनासे फुरसत मिले तब न।

आखिर एक दिन काकाको फुरसत मिल ही गई। सभी बच्चे किसीके जन्मदिनकी दावतमें गए हुए थे। मौसम सुहावना था, आकाशमें बादल मंडरा रहे थे। ठंडी हवाके झोंकोंसे दरवाजे और खिड़कियोंके पर्दे बार बार हिल उठते थे। काकाने आराम कुर्सीको कोनेमेंसे खींचा और पांव पसारकर लेट गए। काकाको परियोंकी कहानियां तो बहुत याद थीं, परंतु आज वह कोई नई कहानी बच्चों-को सुनाना चाहते थे।

बहुत-सी नई पत्रिकाएं आई हुई थीं। काकाने एक किताब और कुछ पत्र-पत्रिकाएं भी ले लीं।

काकाने पढ़ना शुरू किया—'बागके मालीका एक लड़का था, जिसे पढ़ने-लिखनेके बजाए पेड़ोंपर उछलना-कूदना अधिक अच्छा लगता था। वह हर रोज मालीको बीज बोते देखता था और सोचता कि यदि बीजकी तरह किताबोंकी भी बो दिया जाए, तो पेड़ उगेंगे कि नहीं।

'किताबोंसे उसका लगाव बहुत कम था। इसलिए एक दिन गड्ढा खोदकर उसने अपनी किताबें गाड़ दीं और हर रोज वहां पानी देने लगा. . .'

कहानी बहुत ही मनोरंजक थी। अभी कुछ ही पन्ने

मुझे दो मार्बल, एक लट्टू और एक पतंग दो और मैं तुम्हें पैरी की एक मिठाई दूंगा

मोल-भाव करने में बिलकुल पक्का ! लेकिन पैरी की मिठाइयाँ ऐसी मज़ेदार और लुभावनी होती हैं कि बच्चे और बूढ़े सभी उसकी चाह रखते हैं। आप जहाँ भी हों, जो भी आपका काम हो, हर हालत में पैरी की मिठाइयाँ आपको खुश करेंगी। चाहे खुदरा लीजिये या सुन्दर छपे डिब्बों में। मिलकर खाइये ! पैरी की मिठाइयों से ज़िन्दगी में चार चाँद लग जाते हैं।

Parry's

पैरीज़—उच्चकोटि की मिठाइयाँ बनानेवाले

क्या आपने आजमाया है : मिल्क टॉफी • सुपर बटरस्कॉच • लैक्टो बन बन्स • जिंजर कैप्स

पैरीज़ कानफेक्शनरी लिमिटेड, मद्रास

JWT/PRS 3353 A

पढ़े थे कि काकाको प्यास लगी। काकाने किताब रख दी और उठ खड़े हुए। कुछ देरमें लौटे, तो किताबका ध्यान ही नहीं रहा और काका किसी पत्रिकाके पन्ने उलटने लगे। सवेरेकी ठंडी हवा और आरामदेह कुर्सी, काकाको जल्दी ही नींद आ गई।

काकाने सोते सोते सपनेमें देखा एक बहुत सुंदर बाग, जिसमें कल-कल करते झरने बह रहे थे, फव्वारे चल रहे थे, तालाबमें कमलके फूल महक रहे थे, फलोंसे लदे वृक्षोंपर पक्षी चहचहा रहे थे। काकाके मुंहमें पानी आ गया और वह लगे आम तोड़ने। इतनेमें काकाने देखा कि बहुतसे बंदर उनकी चारों ओर इकट्ठे हो गए हैं। कोई काकाकी बांह नोचना चाहता है, तो कोई उनकी कमरपर ही सवार होनेकी ताकमें है। एक बंदर तो दूरसे काकाको घूर घूरकर खीखिया रहा था। आम खानेकी बात तो दूर रही, काकाको अपनी जान बचानेकी चिंता सताने लगी। इतनेमें एक बंदर काकाकी दाढ़ी खींचने लगा। काकाके मुंहसे जोरकी चीख निकली और उनकी आंख खुल गई। आंख खुलते ही काकाने देखा कि बहुतसे बच्चे उनकी चारों ओर जमा हैं और वह खुद ही अपनी दाढ़ी खींच रहे हैं।

"काका रो पड़े, काका रो पड़े!" मुन्नूने शोर मचाया।

"नहीं, मुन्नू, काका डर गए," मिन्नीने तुतलाते हुए कहा।

"आ हा! काका डरकर रो पड़े, डरकर रो पड़े," सभीने एक स्वरमें चिल्लाना शुरू किया।

"चुप रहो, मैं तो तुम्हें खुश करनेके लिए ऐसा कर रहा था," काकाने बात टालते हुए कहा।

"और हां, तुम्हारी पार्टी कैसी रही?" काकाने जरा रुककर पूछा।

"बहुत ही अच्छी," शामू बोला। "आइसक्रीम तो बहुत ही बढ़िया थी।"

"और इत्ते बले बले लशगुल्ले," गीताने तुतलाते हुए हाथ फैलाए।

बीनाके मुंहमें तो अभी तक पानी आ रहा था। छोटा रामू कैसे चुप रह सकता था, जेबसे गुब्बारे निकालता हुआ बोला, "काका, हमें तो गुब्बारे ही पसंद आए, देखो मैं जेब भर लाया हूं।"

इतनेमें मिन्नी बोली, "काका, पार्टी तो खतम हुई, अब हमें कहानी सुनाओ।"

"हां हां, हम तो कहानी सुनेंगे," सभीने हां में हां मिलाई।

कहानीका नाम सुनते ही काकाको किताबकी याद आई, पर किताब नदारद!

"मेरी किताब कहां गई?" काका चिल्लाए। "मुन्नू, मेरी किताब ढूंढ़ो, मैं तुम्हें बहुत-सी कहानियां सुनाऊंगा। चुन्नू, तुम अल्मारीके पीछे देखो, यहां बड़े बड़े चूहे हैं, कहीं किताबको वे ही न ले गए हों! तुम उस कोनेमें देखो, कहीं खिड़कीसे बाहर न गिर गई हो! तुम दूसरे कमरेमें देखो, तुम बाहर बरामदेमें देखो. . .।" इस तरह काकाने सारे बच्चोंको इधर-उधर भेज दिया।

बड़ी सरगर्मीसे किताबकी खोज शुरू हुई। मुन्नू घुटनोंके बल बैठा जमीनको यूं सूंघ रहा था मानो किताबको जमीन ही निगल गई हो। गीता तो फूंक मार मारकर फर्शकी मिट्टी ही उड़ा रही थी। चुन्नू एक कुशल जासूसकी तरह किवाड़ोंकी सांकल देख रहा था। रामूको तो अपनी जेबके गुब्बारोंपर ही शक हो रहा था और वह एक एक गुब्बारेको फुला फुलाकर जांच कर रहा था। अनिताने अपनी गुड़ियाके सारे कपड़े ही टटोल डाले थे और बीनाने सारे बिस्तर उलट दिए थे, पर किताबका कुछ पता न था।

काका झल्लाकर बोले, "तुम बहुत निकम्मे हो, आठ आदमी मिलकर एक आठ इंच लंबी किताब नहीं ढूंढ़ सकते!

"देखो, मुन्नू, तुम इस अल्मारीके ऊपर चढ़ जाओ, वहां किताबोंका भारी ढेर रखा है, किसीने किताबको वहां न रख दिया हो।" मुन्नू पलक झपकते ही अल्मारीके ऊपर चढ़ गया। पर उसका हाथ लगनेसे किताबोंका ढेरका ढेर लुढ़क पड़ा और एकके ऊपर एक भारी भरकम किताबें काकाकी नाकपर सीधे ही आ गिरीं।

"भाड़में जाओ, तुम और तुम्हारी कहानी," काका गुस्सेमें चिल्लाए। "तुम्हें दिखाई नहीं देता कि मैं यहां बैठा हूं, कम्बख्त कहींके।" दूरसे मिन्नी एक किताब उठाकर आती दिखाई दी। काका बहुत खुश हुए।

"शाबाश, मिन्नी, शाबाश, तुमने किताब ढूंढ़ निकाली है, मैं तुम्हें खूब इनाम दूंगा। कहांसे मिली यह किताब?"

काका खुशीसे किलक ही रहे थे कि पता लगा यह तो वही सड़ी-गली किताब थी, जिसे काकाने कूड़ेमें फेंक दिया था।

"तुम सब गधे हो। तुम दस जन्ममें भी किताब नहीं ढूंढ़ सकते। मुझे खुद ही किताब ढूंढ़नी पड़ेगी। अब देखना कैसे मिलती है किताब!" और काका उठ खड़े हुए।

"यह रही किताब, यह रही किताब," मुन्नू चिल्लाया। "यह कुर्सीमें थी, काकाके नीचे।"

"किताब मिल गई, किताब मिल गई," सभी खुशीसे शोर मचाने लगे। "बहुत अच्छे, मुन्नू बेटे," काका बोले। "तुमने बहुत बड़ा काम कर दिखाया है, अब मैं तुम्हें बहुत-सी कहानियां सुनाऊंगा।"

काकाने किताब ले ली। सभी बच्चे उत्सुकतासे कहानीकी प्रतीक्षा करने लगे। पर यह क्या? काकाका चश्मा कहां गया? इतनी झल्लाहटके बाद काकामें अब और हिम्मत नहीं थी। वह धम्मसे कुर्सीमें बैठ गए।

परंतु नन्हे-मुन्नोंकी हनुमान-सेना कहां मानने वाली थी। बड़े जोर-शोरके साथ चश्मेकी तलाश शुरू हुई। संकल्प दृढ़ था। मुन्नूने नेतृत्व संभाला।

"अनिता, तुम अपनी गुड़ियाके कपड़े फिरसे देखो। चुन्नू, तुम दरवाजेके पीछे जाओ।"

"पर पहले हम काकाकी कुर्सी तो देख लें," चुन्नूने सुझाव दिया। "कहीं काका चश्मेको भी किताबकी तरह ही न दबाए बैठे हों।"

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

WWW.KISSEKAHANI.COM

कहानी

एक और एक

यह मकान भी क्या है—पूरा एक मुहल्ला है! कितने सारे लोग इसमें रहते हैं। एक बिल्डिंग और उसके अंदर पचास-साठ फ्लैट। हो गया ना पूरा एक मुहल्ला। जाने कहां कहांके लोग इसमें रहते हैं—कोई बंगाली है, तो कोई मद्रासी, तो कोई उत्तर प्रदेशका। बिल्डिंगका नाम है—'मूनलाइट' यानी चांदनी। इसमें रहने वालोंकी एक अलग एक छोटी-सी दुनिया है। वे कुछ न कुछ करते ही रहते हैं। आज थी बैडमिंटनकी प्रतियोगिता। एक ओर थीं मिसेज लिटन—अधेड़ उम्रकी मोटी, एकदम थुलथुल और दूसरी ओर था वह—यानी मुन्ना जिसकी उम्र अभी सिर्फ बारह साल है।

मिसेज लिटन और मुन्नाके बीच जो मुकाबला हुआ, तो उसमें जीत हुई मुन्नाकी और मिसेज लिटनने खुश होकर अपने हाथसे मुन्नाको ट्रॉफी भेंट की।

इस हंगामेके बीच एक हंगामा और खड़ा हो गया। मिस देशपांडेका प्यारा कुत्ता मिस-चीफ जंजीरसे खिसककर एक कारके नीचे जा छिपा। सब बच्चोंने चारों ओरसे उसे घेरकर बेहद डरा दिया था। बड़ी मुश्किलसे मुन्नाने कुत्तेको कारके नीचेसे निकाला और उनके हवाले कर दिया।

उस कुत्तेके झगड़ेमें सारे बच्चोंने मिलकर ऐसा हंगामा मचाया कि दौड़नेमें राजूके पैरके नीचे सेवलमका पैर दब गया। दोनोंमें कहा-सुनी यहां तक बढ़ी कि अगर बड़े लोग बीच-बचाव न कर देते, तो मारपीट हो जाती। आज ही नहीं, ये लड़के अक्सर लड़ा करते हैं। राजू खुदको उत्तर प्रदेशका शेर और सेवलमको मद्रासी चूहा कहा करता है।

दूसरे दिन मुंडेरपर बैठे राजू, बेलू और रॉकी बात कर रहे थे। बेलूने कहा, "हां, तो मैं कह रहा था कि सामनेवाले मोटर गैरेजमें जो लड़का रहता है ना, आजकल अपना राजू उसका चेला बना हुआ है। उसीने इसको टायरमेंसे

ग्यारह

फणी मजूमदार

हवा निकालना सिखाया है।"

"अच्छा!" रॉकीने आश्चर्यसे आंखें फाड़कर कहा।

"हां, अरे यह कोई मुश्किल काम थोड़े ही है, ठहरो अभी दिखाता हूं," दीवारसे उतरते हुए बड़े गर्वसे राजूने कहा।

इस समय कंपाउंडमें सिर्फ भोंसले साहबकी गाड़ी थी। वह अभी अभी आफिससे लौटे थे। राजूके इस हुनरका पहला शिकार उन्हींको बनना पड़ा। माचिसकी तीली लिये वह उनकी कारकी ओर बढ़ा। बालकनीपर खड़ा सेवलम यह सब देख रहा था—'हुं, अच्छा, बच्चू, अभी मजा चखाता हूं। उस दिन तूने मेरा पैर कुचला था, मुझे मद्रासी चूहा कहा था...' और वह भोंसले साहबके फ्लैटकी ओर भागा।

और उस रात राजूपर कसकर मार पड़ी।

●

जब राजूको पता चला कि यह सारी हरकत सेवलमकी थी, तो उसने भी बदला लेनेकी ठान ली। इसलिए जब दूसरे दिन शंकर चाचाके यहां २६ जनवरीके प्रोग्रामकी तैयारीके लिए बिल्डिगके सब बच्चे जमा हुए, तो उनमें राजू नहीं था। राजू भला होता भी कैसे? उसे तो किसी और प्रोग्रामकी तैयारी करनी थी।

"हां, बोलो, बच्चो, इस बार कैसा प्रोग्राम करना है?" शंकर चाचाने जब सामने बैठे बच्चोंसे पूछा, तो सचिनने मुन्नाके कोहनी मारकर कहा— "बोल ना, मुन्ना..."

"देखिए, शंकर चाचा, पिछले साल हमने बहुतसे प्रोग्राम किए थे—साउथ इंडियन डांस, पंजाबका भांगड़ा, पहाड़ी लोकनृत्य, रवींद्र संगीत, और ये सब प्रोग्राम अलग अलग थे..."

"हां हां, तो उसमें क्या हुआ?" सचिनने आश्चर्यसे पूछा।

"हर प्रोग्राम दूसरे प्रोग्रामसे इतना भिन्न मालूम दे रहा था जैसे इनका आपसमें कोई संबंध ही नहीं। चाचा, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि इन सबको मिलाकर एक कर दिया जाए, जिससे यह मालूम हो कि हम सब एक हैं, हम सब हिन्दुस्तानी हैं," मुन्नाने कहा।

शंकर चाचा बोले—"पता नहीं कैसे तुम्हारे खयालमें यह बात आई। पर मुझे खुशी है कि तुमने यह बात सोची। हमारे देशमें अनेक प्रदेश हैं, पर बड़े खेदकी बात है कि हर कोई अपनेको देशका नहीं, बल्कि उस विशेष प्रदेशका समझता है, जिसमें वह पैदा हुआ है।"

"पर, चाचा, क्या मुझे यह भूल जाना चाहिए कि मैं गुजराती हूं?" सचिनने पूछा।

"नहीं, भूलनेकी बात नहीं। तुम इस तरह समझो ना—तुम इस बिल्डिगके दस नंबरके फ्लैटमें रहते हो, वह छह नंबरके फ्लैटमें रहता है और वह तेईस नंबरमें, इसी तरह पहले हम सब हिन्दुस्तानी हैं, उसके बाद तुम गुजराती हो, वह महाराष्ट्रियन और वह बंगाली..."

सब बच्चोंने मुस्कराकर सिर हिला दिया। अब बात उनकी समझमें आ गई थी।

"हां, शंकर चाचा, आप ठीक कहते हैं," सबने एक आवाजमें कहा।

"अब मैं समझ गया कि तुम कैसा प्रोग्राम चाहते हो। सचमुच यह प्रोग्राम अवसरके अनुकूल ही होगा। पर, तुम्हें डांस कौन सिखाएगा?"

१२ साल तथा इससे ज्यादा उमर के बच्चे अपना सेव्हिंग्ज बँक खाता खुद चला सकते है। ऐसे खातेपर किसी भी समय अधिक से अधिक रु. १०,०००/= तक बॅलेन्स रखा जा सकता है।

बैंक औफ इन्डिया में बचत के लिए विशेष सुविधाएं हैं:—

■ सेव्हिंग्ज बँक एकाउण्टस्—

□ ४% प्रतिवर्ष चक्रवृद्धि ब्याज □ सालभर में १५० चेक

□ पैसा निकालने के लिए नोटीस की जरूरत नही है।

■ मियादी डिपॉजिट—

□ ७½% प्रतिवर्ष तक ब्याज।

होनहार बालक—

इसके पास सही उत्तर है।

क्या आपके पास अपने बच्चोंकी उच्च शिक्षा की समस्या का सही उत्तर है?

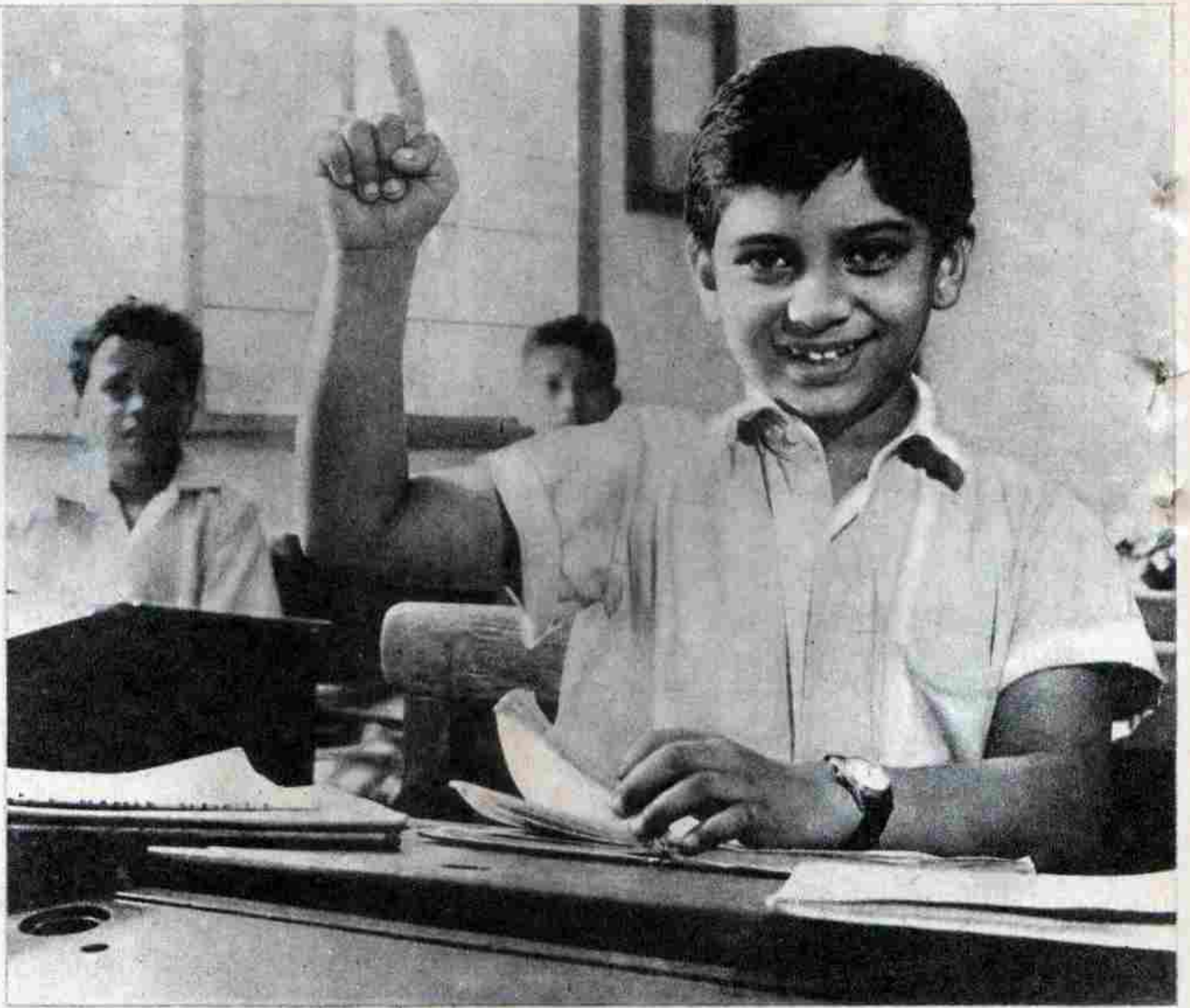

दी बैंक औफ इन्डिया लि.

टी. डी. कन्सारा, जनरल मैनेजर

RAAS/B/77-C HIN

"सोमा दीदी । उन्होंने वादा किया है ।" और इस तरह उन बच्चोंकी सारी समस्या हल हो गई । शंकर चाचा प्रोग्राम तैयार कर देंगे और सोमा दीदी डांस सिखा देंगी । बस, इस सालका प्रोग्राम कितना अच्छा होगा, यह सोचता हुआ मुन्ना जब जीनेसे नीचे उतर कर आया, तो उसने देखा कि सेवलम और राजूमें हाथा-पाई हो रही थी । बिल्डिगमें रहने वाले बच्चे दो दलोंमें बंट गए थे और बारी बारीसे उन्हें उकसा रहे थे—"क्या कहने हैं! और मार साले को . . . चटनी बना दे!" पर दोनोंमेंसे किसीकी भी चटनी बननेसे पहले मुन्ना बीचमें आ गया।

"देखो, तुम बीचसे हट जाओ । आज इस राजूकी तबियत ठिकाने लगा दूंगा!" सेवलम-ने मुन्नाको एक ओर हटाते हुए कहा ।

"अरे, तू क्या तबियत ठिकाने लगाएगा, मद्रासी चूहे!" राजूने फिर सेवलमपर हाथ उठाया, पर वह हाथ मुन्नाके हाथमें आ गया ।

"तुम दोनों हाथ मिलाओ और वादा करो कि फिर कभी नहीं लड़ोगे ।"

दोनों दल ठंडे पड़ गए । सेवलम या राजू दोनोंमेंसे कोई भी दोस्तीका हाथ बढ़ानेको तैयार न हुआ । अंतमें मुन्नाने बिल्डिगके सारे बच्चोंकी एक मीटिंग बुलाई जिसमें बहुमतसे यह प्रस्ताव पास हुआ कि जब तक सेवलम और राजू दोस्ती नहीं करते तब तक कोई भी बच्चा उनसे न तो बात करेगा और न उनके साथ खेलेगा ।

●

आजकल मुन्नाको रातमें भी नींद ठीकसे नहीं आती । रातकी खबरें सुनकर वह सवेरे-की खबरोंका इंतजार करने लगता है । सवेरे तड़के उठकर आज भी उसने रेडियोका बटन सबसे पहले घुमाया । पर, यह क्या! एक आवाज कह रही थी —'प्रधान मंत्री शास्त्रीका देहांत हो गया' । घबराए हुए मुन्नाने दौड़कर गीता और सतीशको जगाया । सब लोग रेडियोको घेरकर बैठ गए । सबकी आंखें गीली हो गईं । सारा राष्ट्र शोकमें डूबा एक महान नेताको अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा था ।

सवेरेका धुंधलका साफ होता गया । धूप चमकने लगी । अचानक कंपाउंडमें कुछ जोर

(शेष पृष्ठ ४७ पर)

विज्ञानके कदम

दिमागका वजन

भौतिक शास्त्र और शरीर विज्ञानमें जिस तत्त्वको दिमाग या 'ब्रेन' कहते हैं, वह भूरे रंगका एक पदार्थ होता है, जो हमारी खोपड़ीके ऊपरी हिस्सेमें हड्डियोंके मजबूत घेरेमें चारों ओरसे सुरक्षित करके रखा होता है । आम तौरपर एक औसत आदमीमें इसका वजन लगभग तीन पौंड या सवा किलोग्रामसे कुछ अधिक होता है।

पुरुषके दिमागसे स्त्रीका दिमाग ज्यादा वजन-दार होता है । लेकिन इस वजनका कम-ज्यादा होना कम बुद्धिमान और ज्यादा बुद्धिमान होना सिद्ध नहीं करता । कई बार जड़मूर्ख व्यक्तिके भी दिमागका वजन काफी ज्यादा हुआ करता है ।

सौरमंडलमें कितने चाँद?

सूर्यकी चारों ओर जो पृथ्वी, मंगल आदि ग्रह चक्कर लगाते हैं, इन सबको मिलाकर सौर-मंडल कहते हैं । इन ग्रहोंकी चारों ओर भी कई उपग्रह चक्कर काटा करते हैं जिनको चांद या चंद्रमा कहते हैं ।

पूरे सौरमंडलमें ३१ चंद्रमा हैं—कमसे कम हमारी जानकारीमें इतने तो हैं ही । बृह-स्पति (ज्यूपीटर) सौरमंडलका सबसे बड़ा ग्रह है । इसकी चारों ओर १२ चंद्रमा चक्कर काटते हैं, इनमेंसे एक उल्टी दिशामें घूमता है—अर्थात् यदि बाकी सब चंद्रमा उत्तरसे दक्षिणकी ओर घूमते हैं, तो यह दक्षिण से उत्तरकी ओर चक्कर काटता है ।

शनि नामक ग्रहके साथ भी ९ चंद्रमा हैं, इनमें से एक 'टाइटन' (सबसे बड़ा) चंद्रमा है । सौरमंडलमें यह अकेला चंद्रमा है, जिसका अपना वायुमंडल है ।

'यूरेनस' नामक ग्रहकी चारों ओर ५ चंद्रमा चक्कर लगाते हैं, वरुण और मंगलके पास दो दो उपग्रह अर्थात् चंद्रमा हैं । बुध, शुक्र और यमके पास कोई चंद्रमा नहीं है ।

इस प्रकारसे ये ३० चंद्रमा हो गए । ३१ वां चंद्रमा हमारी अपनी पृथ्वीकी प्रदक्षिणा करता है—वही जिसे तुम चंदा मामा कहते हो और जिसपर उतरनेका प्रयास अमरीका और रूसके वैज्ञानिक कर रहे हैं और उसके धरातलके चित्र उतारनेमें सफल हो गए हैं ।

—कौशल्यादेवी

अब तक तुमने पढ़ा था—

कोमन सरकसका मालिक अपने जानवरोंको बेटोंकी तरह चाहता था। जानवर भी उसे जी-जानसे प्यार करते थे। इससे सरकसमें काम करने वाले आदमियोंका रवैया बदल गया। सरकसके मैनेजर केलनने इसका फ़ायदा उठाया और कंपनीका दीवाला निकालकर उसका मालिक बन बैठा। कोमनको लाचार हो अपने जानवर लेकर कंपनीसे चले जाना पड़ा।

कोमनने फ़िर एक नया सरकस खड़ा करनेका संकल्प किया, लेकिन उसके पूरा होनेसे पहले ही वह चल बसा। जानवर बेसहारा हो गए। कोमनके लड़के हंसमुखको बचपनमें ही कोई अजनबी उठा ले गया था। अब जानवरोंकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था।

तभी कोमनकी एक पुरानी वसीयतके अनुसार केलनने जानवरोंको धमकी दी कि वे एक महीनेके भीतर मकान खाली कर दें।

उसी रात जानवरोंके नेता वानर चिम्पनको कोमन सपनेमें दिखाई दिया। इसीसे प्रेरणा पाकर वह मालिकके अधूरे सपनेको पूरा करनेमें जुट गया।

ठीक एक महीने बाद केलन मकान खाली कराने आया, लेकिन उसे वहां बजाय जानवरोंके उनका एक पत्र मिला। पत्रमें उसे नए सरकसके उद्घाटन-समारोहमें शामिल होनेका न्यौता दिया गया था।

लो अब इससे आगे पढ़ो।

मलयालम उपन्यास

(२)

यह सचमुच बड़ा अजीब सरकस था; मालिक भी जानवर और तमाशा दिखाने वाले भी जानवर। इस सरकसमें कोई आदमी नहीं था और इसे केवल बच्चे ही देख सकते थे। इसलिए बच्चे भी बहुत ज़्यादा उत्तेजित थे।

बड़ोंके लिए मनाही थी, इसलिए वे बच्चोंसे जल रहे थे। 'जैसे जानवर सरकस चला ही सकते हों; बकवास; यह किसी ठगकी चालबाजी है; तुम्हें नहीं जाना चाहिए,' उन्होंने बच्चोंसे कहा। लेकिन बच्चे जानते थे कि बड़े ऐसा क्यों कह रहे हैं। इसलिए वे सरकसका उद्घाटन देखने चले गए।

खिड़कीपर लोमड़ टिकट बेच रहा था। वे उससे टिकट लेकर तंबूमें घुसे। तमाशा छह बजे शुरू होना था, लेकिन पांच बजे ही तंबू भर गया था। जगहके लिए छीना-झपटी हो रही थी, बच्चे एक-दूसरेको धक्का दे रहे थे, लड़ रहे थे और चीख-चिल्ला रहे थे। अजीब गुल-गपाड़ा मचा हुआ था।

कुछ देर बाद एक तुरही बजी। तमाशा शुरू होनेका संकेत हुआ। शोर बंद हो गया। जैसे ही दो भालू घेरेमें आए, बच्चोंने अपनी गरदनें सीधी कर लीं। विपरीत सिरोंपर वे कसरती झूलोंपर झूले और उसी क्षण उन्होंने अपने अपने झूलोंपरसे पकड़ ढीली कर दी और उड़ते हुए एक-दूसरेके झूलोंपर चले गए। हवामें ऊंचे तैरते हुए उन्होंने कभी आगे, कभी पीछे और कई बार उसीपर कलाबाजियां खाईं। कई बार जब वे एक-दूसरेके पाससे गुजर रहे थे, तो उन्होंने अपनी लाल टोपियां बदल लीं। बच्चोंने इससे पहले इनसानी झूला-कलाकारोंको देखा था। अब उन्होंने पाया कि भालू उनसे भी ज्यादा होशियार हैं। उन्होंने जोर जोरसे देर तक तालियां बजाईं और वाहवाही की।

जैसे ही भालुओंने प्रस्थान किया, मैनेजर चिम्पनने चेतावनी दी— "प्यारे बच्चो, जब तमाशा दिखाया जा रहा हो, तो उस समय शोर मत मचाओ। इससे तमाशा दिखाने वालोंका ध्यान बंटता है। वे गिर सकते हैं और इससे उनकी जान भी जा सकती है। इनसानी सरकसोंमें नीचे लगा हुआ जाल बचाव करता रहता है। हमारे पास जाल नहीं है। हमारा सरकस नया है और अभी बहुत कुछ सामान आना बाकी है। मेरी चेतावनी याद रखना, बच्चो, जब करतब दिखाए जा रहे हों, तो खामोशी रखना। जब वे करतब दिखा चुकें, तब जितनी चाहो वाहवाही करो।"

कपकप

मूल लेखक :
माधवन नायर 'मालि'

WWW.KISSEKAHANI.COM

इसके बाद चीते आए। नजलू लकड़ीके एक तख्तेसे पीठ लगाकर खड़ा हो गया। चालीस गज दूर दंतुला अपने दोस्तकी तरफ पीठ करके और आंखोंपर पट्टी बांधकर खड़ा हो गया। चाकूका ढेर तैयार था। उन चाकुओंके हत्थोंमें कपड़ा लिपटा हुआ था और वह कपड़ा तेलमें भीगा हुआ था। दंतुलेने चाकू उठाए, हत्थोंमें आग लगाई और उन्हें नजलूकी तरफ फेंका—आगेकी ओर नहीं जैसे चाकू फेंकने वाले इनसानी कलाकार करते हैं, बल्कि पीछेकी ओर — और खड़े खड़े भी नहीं बल्कि कलाबाजियां खाते हुए। एकके बाद एक चाकू नजलूके शरीरसे सटा सटा तख्तेमें जाकर गड़ गया। जब सब चाकू फेंके जा चुके, तो नजलू बाहर निकल आया और बच्चोंने जलते हुए चाकुओंमें चीतेकी निर्दोष रूपरेखा देखी।

"और अब, बच्चो, महान जादूगर— जम्बू लोमड़...!" चिम्पनने घोषणा की।

फौरन जम्बू घेरेमें आया और उसने भीड़के सामने सिर झुकाकर अभिवादन किया। उसने काले जूते, काली पतलून, काला कोट, काली टाई और एक ऊंचा काला टोप पहन रखा था। उसके दाएं हाथमें जादूकी एक काली छड़ी थी। सचमुच वह सिरसे लेकर पांव तक काला जादूगर लग रहा था।

इससे पहले कभी किसी लोमड़ने जादूके ऐसे खेल नहीं दिखाए थे। जम्बूने मसखरे कोचिम्पनको धीरे धीरे हवामें तम्बूकी छत तक उठा दिया और फिर उसे उसी तरह जमीनपर ले आया। सिंहनको लकड़ीके एक पिंजरेमें बंद करके उसने आग लगा दी। आगकी लपटों और घने धुंएने पिंजरे और शेर दोनोंको आंखोंसे ओझल कर दिया। बच्चे डर गए, क्योंकि उन्होंने सोचा कि बेचारे सिंहनको जिंदा आगमें जलाया जा रहा है। लेकिन उस समय उनके आश्चर्यकी सीमा नहीं रही, जब सिंहनने बाहरसे तंबूमें प्रवेश किया और भीड़मेंसे गुजरते हुए घेरेमें कदम रखा और मुस्कराते हुए जादूगरसे हाथ मिलाया। जम्बूका अगला करतब असाधारण था। उसने जमीनमें एक छोटा-सा गड्ढा खोदा, उसमें आमका बीज रखा, फिर उसे मिट्टीसे ढक दिया और उसपर पानी डाला। देखते ही देखते बीजमें कोंपलें फूट आईं और वह पौधा बन गया और बहुत बड़े पेड़के रूपमें बदल गया। इस पेड़की शाखाओंपर फूल निकल आए, फूल फलमें बदल गए और फल पक गए। जम्बू पेड़पर चढ़ा और उसने आम तोड़कर बच्चोंके बीच फेंक दिए। फिर पल भरमें आम गायब हो गए और पेड़ भी गायब हो गया। यह सब केवल झूठमूठका था।

फिर घेरेमें सात ऊंट और सात घोड़े आए। ऊंटोंने हरी और घोड़ोंने लाल-ऊनी बंडियां पहनी हुई थीं। उन सबने हाकियां पकड़ रखी थीं। कोलतारके खाली पीपे तैयार रखे थे। वे सब उनपर चढ़ गए। यह सचमुच एक

नई तरहका हाकीका खेल था। भागने-दौड़नेकी जगह खिलाड़ी अपने पांवोंसे कोलतारके उन पीपोंको, जिनपर वे खड़े थे, लुढ़का रहे थे। यह करतब इतना मुश्किल था कि नौसिखिया अपना संतुलन गंवा बैठता, जमीनपर गिर जाता और अपनी हड्डियां या दांत तोड़ बैठता। इतनेमें निर्णायक कोचिम्पन बीचमें आया। उसने बीचमें एक गेंद रखी और सीटी बजाई। मैच शुरू हो गया। खेलकी गति देखकर दांतों तले उंगली दबानी पड़ती थी। एक बार भी कोई खिलाड़ी नहीं गिरा। ऊंटोंने एक गोल कर दिया। घोड़ोंने भी जवाबमें एक गोल कर दिया। ऊंटोंने फिर एक गोल किया, घोड़ोंने फिर उसका जवाब दिया। मैच बराबर था और खत्म होने वाला था। खेलमें मुश्किलसे एक मिनिट ही बचा था कि ऊंटोंने चटसे एक गोल कर डाला और खेल खत्म कर दिया। आखिरी सीटी बजी। जो बच्चे घोड़ोंकी हिम्मत बंधा रहे थे, निराश हो गए। ऊंटोंके भक्तोंके चेहरे खिल उठे। कुछको गुस्सा आ गया। लड़ाई-झगड़ा शुरू हो गया। दोनों दलोंमें मारपीट होने ही वाली थी कि तभी गजन अपने करतब दिखानेके लिए घेरेमें आ गया। बच्चे सोचने लगे, जाने यह क्या दिखाने वाला है।

तीस फुट ऊंचे दो खंभोंपर इस्पातका एक मोटा तार बंधा हुआ था। गजन सीढ़ियां चढ़कर तारपर पहुंचा और वहां उसने अपना संतुलन बना लिया। चिम्पनने अपनी चेतावनी फिर दोहराई—"प्यारे बच्चो, शोर मत मचाओ। इससे गजनका ध्यान बंट जाएगा और अगर यह गिर गया, तो निश्चय ही मर जाएगा। इसका करतब असाधारण है। ऐसा करतब पहले कभी नहीं देखा गया। भगवानके लिए शांत हो जाओ।"

अपनी सूंड़ और अपने कानोंको हिलाते हुए हाथी बीच तार तक पहुंच गया। नीचे जमीनपर कोचिम्पन एक 'ट्रे' लिये तैयार खड़ा था, जिसपर एक दर्जन प्याले और तश्तरियां और दूधका एक 'जग' था। दोनों भालू सीढ़ी थामे हुए थे। कोचिम्पन सीढ़ीके आखिरी डंडे तक चढ़ा। गजनने अपनी अगली दाईं टांग उठाई और उसपर कोचिम्पनने एक तश्तरी रख दी। गजनने अपनी सूंड़ ऊपर उठा रखी थी। उसने अपनी टांगको झटका दिया और तश्तरी हवामें उछली और चक्कर काटती हुई सूंड़के सिरेपर जाकर टिक गई। कोचिम्पनने एक प्यालेमें ऊपर तक दूध भरा और गजनकी टांगपर रख दिया। प्याला भी हवामें उछला और चक्कर काटता हुआ सूंडके सिरेपर रखी तश्तरीपर जा कर टिक गया। फिर यह क्रम चलता रहा—प्याले और तश्तरी तब तक एक एक करके सूंड़के सिरेपर पहुंचते रहे, जब तक कि सारेके सारे वहां नहीं पहुंच गए। ऐसा लग रहा था जैसे किसी आदमीने उन्हें वहां सजाया हो और इस सारी उछल-कूदमें एक बूंद दूध नहीं गिरा। जब गजनने अपनी सूंड़को थोड़ा हिलाया, तो बच्चे दम साधे देखते रहे। एक एक करके सारे प्याले और तश्तरियां उसकी टांगपर आ गए और कोचिम्पनने उठाकर वे सब नीचे खड़े भालुओंको पकड़ा दिए। फिर गजन भी नीचे जमीन पर उतर आया। बच्चोंने जोर-जोरसे वाहवाही की। उस शोरसे तंबू हिल गया और हवामें अजीब-सी हलचल पैदा हो गई।

हंसी-मजाकके करतब भी थे। कोचिम्पन मसखरा था। उसकी वेशभूषा अपने आपमें हंसाती थी। कोट-पतलून, कमीज और टाईमें अलग अलग रंगों और नमूनोंका मेल था। रंगीन लकीरों और बिंदियोंने उसके चेहरेको अजीबो-गरीब ढंगसे मनोरंजक बना दिया था। इससे ज्यादा उसके सिरपर मसखरों वाली टोपी थी। उसने अपनी हंसी-मजाककी बातों, तमाशों, स्वांग और व्यवहारसे बच्चोंको हंसा हंसाकर लोटपोट कर दिया। बीच बीचमें उसने कुछ साहसी करतब बहुत ही फूहड़ और हास्यास्पद ढंगसे दिखाए। फिर भी बच्चे जानते थे कि कोचिम्पन यह सब जानते-बूझते कर रहा है, वरना वह असलमें बड़ा कुशल नट है।

कलाबाजी भी थी और कलाबाज था—सिंहन। वह घेरेमें आगे, पीछे और किनारे किनारे सिरके बल घूम गया। वह एक कतारमें खड़े ऊंटों और घोड़ोंपर कूदा—एक बार, दो बार और यहां तक कि तीन बार। सिरके बल किए जाने वाले उसके करतब इतने तेज और अलग-अलग थे कि बच्चे सोचमें पड़ गए कि सिंहन हाड़-मांसका बना हुआ है या रबड़का।

"और अब, बच्चो, आज रातका आखिरी खेल . . ." तभी चिम्पनने घोषणा की।

बच्चे सोच रहे थे कि तंबूके अंदर बारिश होना भला कौनसा खेल है! लेकिन यह कोई आम बारिश नहीं थी बल्कि लाल बारिश थी और यह बादलोंसे नहीं बल्कि गजनकी सूंड़मेंसे आ रही थी। वह उनपर लाल रंगका पानी छिड़क रहा था। बच्चोंने फुहारसे बच निकलनेकी कोशिश की। लेकिन गजनने जल्दीसे अपनी सूंड़ एक पीपेमें डुबोई और फिर नीले रंगके पानीकी फुहार छोड़ दी। बच्चे बाहर निकलने वाले रास्तेकी तरफ भागे, लेकिन इससे पहले ही गजनने उनपर हरे और पीले रंगके पानीकी पिचकारी छोड़ दी। और परिणाम यह हुआ कि हर बच्चेके कपड़े चार चार रंगके हो गए।

लेकिन बच्चे झुंझलाए नहीं। वे तो बहुत खुश थे। यह कितने कमालका सरकस था। वे इसे बार बार देखना चाहते थे—हो सके तो रोज। और उस रात सब बच्चोंने एक ही सपना देखा—जानवरोंके सरकसका।

"कुज्जाप्पू, जानवरोंका सरकस तालशेरी कस्बेमें आया हुआ है। मैं अगले शनिवारको देखने जा रहा हूं। तुम मेरे साथ चलोगे?" कण्णनने पूछा।

कुज्जाप्पूके नन्हे-से हृदयमें हलचल मची हुई थी। उसने पहले कभी सरकस नहीं देखा था। अब एक सरकस तालशेरीमें आया हुआ था। यह मामूली सरकस भी नहीं था—और तालशेरी केवल आठ मील दूर था। फिर भी वह नहीं जा सकता था। वह चुप रहा।

"तुम जवाब क्यों नहीं देते, कुज्जाप्पू?" कण्णनने पूछा।

कुज्जाप्पूने एक गहरी लंबी आह भरी। "मैं कैसे जा सकता हूं, कण्णन? तुम तो मेरी हालत जानते ही हो।"

कण्णन कुछ अधीर हो गया। "लेकिन यह ध्यान रखो, कुज्जाप्पू, कुछ ही दिनोंमें सरकस किसी दूसरे कस्बेमें चला जाएगा और तुम जीवनका यह सुनहरा अवसर गंवा बैठोगे। आखिरी बार फिर पूछता हूं—मेरे साथ चलोगे या नहीं?"

कुज्जाप्पूने गंभीरतापूर्वक विचार किया। सरकस जानेका मतलब था खतरा और वह उस खतरेके बारेमें सोचकर ही कांप उठा। लेकिन उसके लिए सरकस देखनेका लालच भी बहुत बड़ा था। आखिर उसने साहस बटोरकर कहा, "मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।"

"हमें सड़क आने तक तीन मील और फिर कस्बा आने तक पांच मील पैदल चलना होगा," कण्णनने कहा। "मैं यहां इस रास्तेपर तुम्हारी बाट देखूंगा। हमें दोपहर एक बजे तक चल देना चाहिए। समयपर आ जाना। अच्छा तो शनिवार तकके लिए नमस्कार।"

कण्णनके जानेके बाद कुज्जाप्पू एक पेड़के तले बैठ गया। तीसरे पहरका सूर्य खूब तेज चमक रहा था, फिर भी धूप तीखी नहीं थी क्योंकि ऊपर पत्ते-पत्तियां एक बड़े-से हरे छातेकी तरह छाई हुई थीं। पास ही एक छोटी नदी बह रही थी। मवेशी चर रहे थे। कुज्जाप्पूने उनपर कोई ध्यान नहीं दिया। वह विचारोंमें डूबा हुआ था और वे विचार बहुत ही पीड़ा देने वाले थे।

कुज्जाप्पू केवल साढ़े आठ वर्षका था। वह पहले ही बहुत दुःख-मुसीबतें झेल चुका था। उसने उन मुसीबतोंके बारेमें सोचा और फिर उस आदमीके बारेमें भी सोचा, जो उसे वे सब दुःख देता था। वह था उसका मालिक चाप्पन। वह काला, मोटा, घने बालोंवाला, मोटे मोटे होंठ और बड़े बड़े बदसूरत दांतोंवाला आदमी था। चाप्पन प्रायः बिना बातके या छोटी छोटी बातोंपर कुज्जाप्पूको मारता था। वह गुस्सेसे चिल्लाता—"छुटकू बदमाश, मैंने तुझे खानाबदोशोंसे खरीदा। मैं तुझे खिलाता-पिलाता हूं। लेकिन तू इस कृपाके योग्य नहीं है।"

कुज्जाप्पूको अपनी कोई गलती याद नहीं आई। वह हमेशासे विनयी, आज्ञाकारी और परिश्रमी था। वह जानता था कि खाने-पीनेके लिए वह चाप्पनका ऋणी है—हालांकि खाना काफी नहीं होता था। उसके लिए माता-पिताका न होना बहुत बड़ा दुर्भाग्य था। वे होते, तो उसे अच्छी तरह खिलाते-पिलाते और चाप्पनकी तरह मारते-पीटते नहीं।

कण्णनकी हालत बिल्कुल अलग थी। वह केवल चौदह वर्षका था, फिर भी उसके पास काम था, पैसा था। वह तालशेरीमें मुहम्मदकी कपड़ेकी दूकानमें काम करता था। वह हिसाबमें बड़ा होशियार था। हिसाबके बड़े बड़े सवाल बस चुटकियोंमें हल कर सकता था। चार-पांच अंकोंके सवालोंको जल्दीसे जोड़ सकता था, घटा सकता था, गुणा कर सकता था और भाग दे सकता था। वह हर रोज सोलह मील पैदल चलता—सुबह दूकानकी तरफ जाते हुए आठ मील और शामको घर वापस आते हुए आठ मील। कभी कभी रास्तेमें उसकी कुज्जाप्पूसे भेंट हो जाती थी।

चाप्पनके घरमें एक बुढ़िया रहती थी। इस सारी

(शेष पृष्ठ २६ पर)

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

"यार, जब मैं युद्ध-मंत्री था, तब देशसे युद्ध ऐसा गायब हुआ जैसे गधेके सिरसे सींग!"

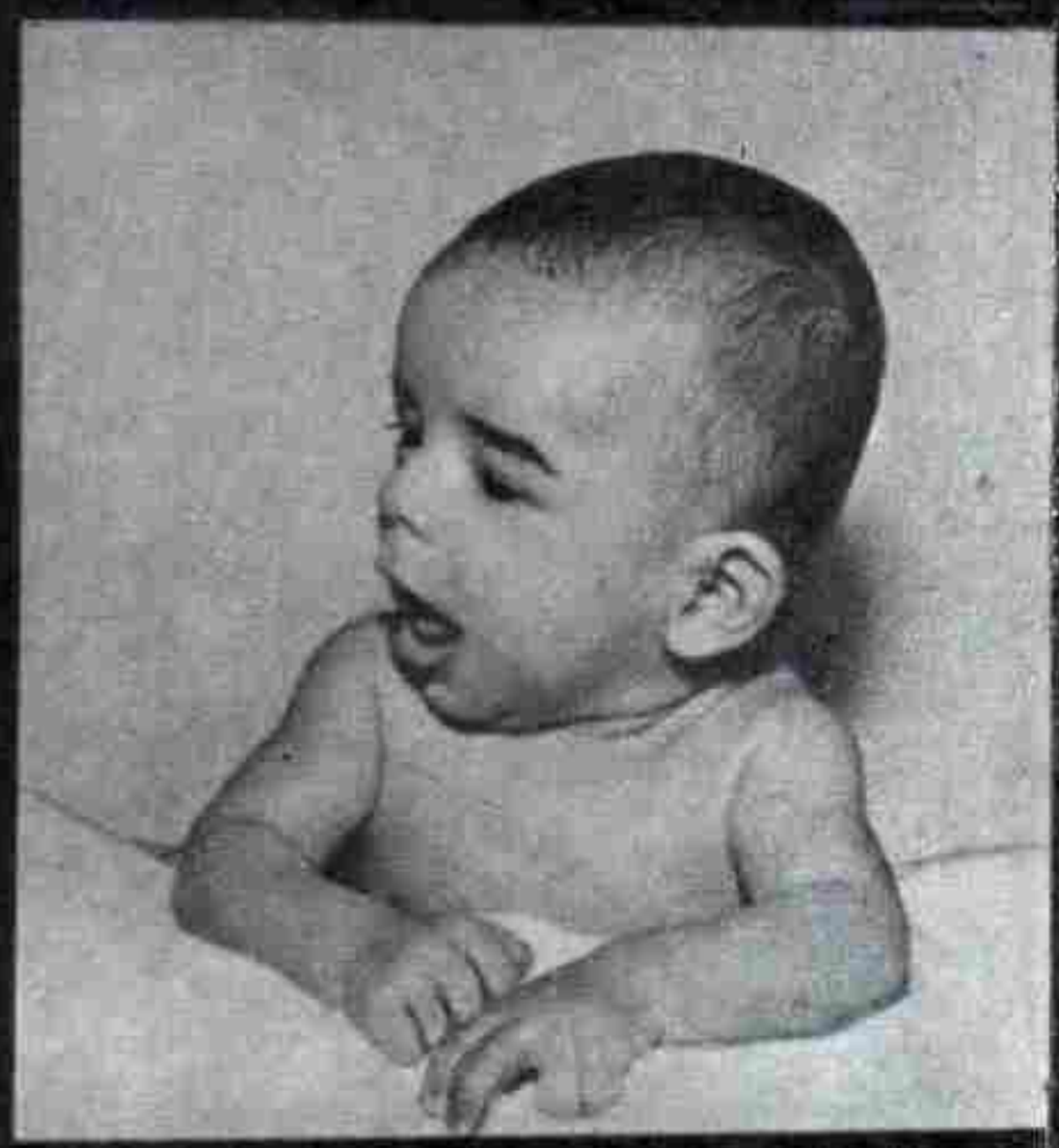

"ठीक कहते हो, भाई, अब जबसे तुम खाद्यमंत्री बने हो, तबसे देशसे खाद्य पदार्थ भी..."

WWW.KISSEKAHANI.COM

क्या तुम ने जिंदगी में कभी कोई कविता लिखी है?
जी नहीं!
तब तो तुमने जीवन के दो हिस्से गंवा दिए!
अच्छा क्या तुम मेरा हाथ देख कर भविष्य बता सकते हो?
नहीं, बिलकुल नहीं!
बुध्दू! तब तो तुमने अपनी जिंदगी के तीन हिस्से गंवा दिए!
ठीक है, साहब, लेकिन ज़रा यह तो बताइए क्या आप लोगोंने कभी ईमानदारी और मेहनत से दो पैसे कमाने की कोशिश की है?
राम राम! अरे ऐसे छोटे काम की उम्मीद तुम हम बड़ों से करते हो, बौड़म दास?
तब तो तुम दोनोंने जिंदगी के चारों हिस्से गंवा दिए — रोज रोज मेरे नौकर से उधार माल खा कर जाते हो, आज तुम्हारे कपड़े उतार कर ही तुम्हें यहां से बिदा करूंगा!

स र क स (पृष्ठ २३ से आगे)

लंबी-चौड़ी दुनियामें एक वही कुज्जाप्पूका ध्यान रखती थी। कुज्जाप्पू उसे दादी कहकर पुकारता था। दादी उसे अच्छी तरह खिलाती-पिलाती, कहानियां सुनाती, लाड-प्यार करती, लेकिन जब चाप्पन घरमें होता, तो वह उसे अपने पास तक नहीं आने देती थी, क्योंकि वह भी उस बदमाशसे डरती थी। कुज्जाप्पूको याद आया कि कुछ दिन पहले कैसे वह असावधानीमें रंगे हाथों पकड़ ली गई थी। उस दिन चाप्पन घरमें नहीं था। इसलिए दादीने कुज्जाप्पूके सामने पूरा खाना परोसा और फिर उसके पास बैठ गई। अभी कुज्जाप्पूने आधा खाना ही खाया था कि अचानक चाप्पन आ गया।

"तो तुम इस छुटकू बदमाशको इतना सारा खाना खिलाती हो, है न?" उसने गुस्सेमें दादीसे पूछा। फिर उसने दादीको ज्यादा खाना देनेके लिए गालियां दीं और कुज्जाप्पूको कसकर ठोकर मारी।

पेड़के नीचे बैठे बैठे कुज्जाप्पूको दादीका हर नेक काम याद आया। उसने अपने आपसे वह प्रश्न किया, जो वह कई बार पूछ चुका था—दादी सचमुच कौन है? उसे कोई उत्तर नहीं मिला। उसने दादीसे भी बहुतसे प्रश्न किए थे—दादी, क्या तुम चाप्पनकी मां हो? चाप्पनने मुझे खानाबदोशोंसे कब खरीदा? जब खानाबदोशोंने मुझे पाया, उससे पहले मैं कहां था? क्या मैं भी खाना-बदोश हूं? लेकिन दादीने हमेशा टाल-मटोल कर दी।

"ओह, दादी, अगर तुम मुझे प्यार करती हो, तो मुझे सच सच बता दो," उसने एक दिन प्रार्थना की।

दादीकी आंखोंमें आंसू भर आए। उसने कोमल स्वरमें धीरेसे कहा, "मेरे प्यारे बच्चे, मैं झूठ नहीं बोल सकती। मैं सच भी नहीं बता पाऊंगी। यह एक राज है और अभी उस राजको खोलनेका समय नहीं आया है। इसलिए अब इस बारेमें और कोई बात न पूछना।"

कुज्जाप्पू स्कूल नहीं जाता था। कण्णनके सिवा उसका कोई दोस्त भी नहीं था। उसके साथी केवल चाप्पनके मवेशी थे। वह मवेशियोंको प्यार करता था और वे भी उससे प्यार करते थे। वह उन्हें रोज चराने ले जाता। उनमेंसे कुछको उसने सरकसके करतब सिखाए थे। उसने यह करतब किसीसे नहीं सीखे थे। उसे विश्वास था कि हनुमानकी उसपर कृपा है। वह बड़ी भक्तिसे वानर देवता-की पूजा करता था। कभी कभी उसे स्वप्नमें देवताके दर्शन भी होते। जिन जानवरोंको उसने करतब सिखाए थे, वे सबके सब होशियार थे। लेकिन वेलुम्पन कुत्ता और फारूता सबसे ज्यादा होशियार थे और वे उसे विशेष रूपसे प्रिय भी थे।

अपने अतीत और वर्तमानके बारेमें सोचते हुए कुज्जाप्पू बैठा था। जानवरोंका सरकस—वह शनिवारको कण्णनके साथ सरकस देखने जाएगा। उसने वचन दे दिया है। लेकिन क्या उसने जल्दबाजी नहीं की? अगर चाप्पनको मालूम हो गया, तो क्या होगा? वह जंगली उसे दंड देगा, शायद उसे मार भी डाले। चाप्पन-ने कुज्जाप्पूको पगडंडी तक जानेकी आज्ञा दे रखी थी। उसके परे उसे जानेकी आज्ञा नहीं थी। तो फिर वह ताल-शेरी कैसे जाए? कुज्जाप्पूकी समझमें कुछ नहीं आया। वह उलझनमें था।

अखिर कुज्जाप्पू उठा। उसने मवेशियोंको इकट्ठा किया और घर लौट आया। उसे थोड़ी-सी देर हो गई थी। चाप्पनके लिए इतना ही काफ़ी था। "तो तू इतनी देरसे आता है, बदमाश!" वह चिल्लाया और उसने कुज्जाप्पू-के कान उमेठे। कुज्जाप्पूने चुपचाप पीड़ा सह ली। उसकी रोनेकी भी हिम्मत नहीं हुई। उसने रूखा-सूखा खाया और फिर फर्शपर पड़कर सो गया। वह हमेशा फर्शपर ही सोता था। उसके पास चटाई नहीं थी।

सुबह जब चाप्पन खेतोंपर चला गया, तो कुज्जाप्पू-ने दादीको शहर जाकर सरकस देखनेकी अपनी योजना बताई। दादीको बड़ा अचंभा हुआ। "तू पागल हो गया है क्या? अगर चाप्पनको मालूम हो गया, तो वह तेरी खाल ही उधेड़ देगा। भूल जा सरकस-वरकस!" दादीने कहा। बेचारे लड़केकी आंखोंमें आंसू छलक आए। दादीको दुःख हुआ। "रो मत, मेरे बच्चे, शनिवारको चाप्पन घर-में नहीं होगा। उसके मालिकने भगवान जाने किस गंदे कामके लिए आज्ञा दी है। वह राक्षस सोमवारसे पहले नहीं लौटेगा। तब जाकर सरकस देख आना। चाप्पन-को पता न चले, मैं इस बातका पूरा पूरा ध्यान रखूंगी।"

आखिर शनिवार आ पहुंचा। यह कुज्जाप्पूके जीवन-का सबसे बड़ा दिन था। वह तेज चालसे कण्णनके साथ चला। लगता था जैसे उसके पांवकी बेड़ियां टूट गई हों, जैसे वह हवामें उड़ रहा हो। यह नई आजादी अद्भुत थी। वह पहली बार शहर जा रहा था—पहली बार सरकस देखनेके लिए। और कोई मामूली सरकस नहीं, बल्कि जानवरोंका वह सरकस जो दुनियामें अपने ढंगका बस एक ही है।

दोनों मित्र पहले पगडंडीपर, फिर सड़कके किनारे किनारे चलते रहे। उन्होंने एकके बाद एक मील पार किया और फिर भी उनको जरा-सी थकान नहीं हुई। ऐसे अवसर पर वे थक भी कैसे सकते थे।

दूरसे बैंड बाजेकी ध्वनि सुनाई दी। "यह सरकसका बैंड है!" कण्णनने चिल्लाकर कहा।

दोनों लड़के और तेज चालसे चले। थोड़ी देर बाद सरकसका तंबू दिखाई दिया। वे प्रवेश-द्वारकी ओर तेजीसे बढ़े। दरवाजा बंद था। "हमें टिकट खरीदने होंगे। हर टिकट चार आनेका है," कण्णनने कहा। चवन्नी—कुज्जाप्पूके लिए यह बहुत बड़ी राशि थी। उसने कभी पूरी चवन्नी देखी भी नहीं थी। कुज्जाप्पूका बुरा हाल था। जब कण्णनने कहा कि फिक्र मत करो, मैं तुम्हारा टिकट भी खरीद लूंगा, तब कहीं जाकर कुज्जाप्पूके दममें दम आया।

सरकस देखकर कुज्जाप्पू खुशीसे झूम उठा। हाथी, शेर, लोमड़, वनमानुष, चीते, भालू, ऊंट, घोड़े—सबने अपने अपने करतब दिखाए। अहा, कितने बढ़िया थे। ढाई घंटे तक रोमांचकारी खेल चलता रहा। कुज्जाप्पूका जी किया कि सरकसका खेल कभी खत्म न हो।

वापस आते हुए रास्ते भर कण्णन ही बातें करता रहा। कुज्जाप्पूने शायद ही कोई शब्द सुना हो। उसके दिमागमें तो सरकस भरा हुआ था। कण्णनने उसे अपने आपसे बातें करते हुए सुना— 'कितना अच्छा हो अगर मैं भी इस सरकसमें काम कर सकूं!' उसने आश्चर्यसे कुज्जाप्पूकी तरफ़ देखा और फिर वह खिलखिलाकर हंस पड़ा। "कुज्जाप्पू, यह जानवरोंका सरकस है। तुम आदमी हो, जानवर नहीं। जानवर तुम्हें अपने सरकसमें नहीं लेंगे।"

"काश, मैं जानवर होता!" बेचारे कुज्जाप्पूने आह भरी।

पगडंडी पर पहुंचकर वे अलग अलग हो गए। कुज्जाप्पू अकेला घरकी तरफ़ चल पड़ा। बादलोंमेंसे पीला चांद झांक रहा था। दरवाजेकी सीढ़ियोंपर कोई बैठा था। कुज्जाप्पूने पहचाननेकी कोशिश की। चाप्पन? नहीं, चाप्पन तो बाहर गया हुआ है और सोमवारको लौटेगा। दादी होगी। वह उसे सरकसके बारेमें बताएगा। "दादी! ओ दादी!" पुकारता हुआ वह दरवाजेकी तरफ दौड़ा।

और फिर उसने एक आवाज सुनी, जिससे उसकी रीढ़की हड्डी तकमें कंपकंपी दौड़ गई। "ओ, तू सर्कस देखने शहर चला गया!" और सचमुच उसके सामने चाप्पन एक मोटी-सी छड़ी लिये खड़ा था।

कुज्जाप्पूने सुन रखा था कि मरनेके बाद आदमी यमलोक चला जाता है। यम उन आदमियोंको दंड देते हैं जिन्होंने धरतीपर रहते पाप किए हों। वह उन्हें आगमें भूनते हैं, तेलमें तलते हैं, उनके शरीरमें कीलें ठोंकते हैं और सैकड़ों तरीकोंसे उन्हें यंत्रणा देते हैं। तो क्या यम और चाप्पन एक ही हैं? डरसे कांपते हुए उसने इधर-उधर मदद पानेके लिए देखा। चाप्पनकी आंखोंकी पुतलियोंने आने वाली दुर्घटनाकी सूचना दी। "क्या मैंने तुझे पगडंडीसे आगे जानेके लिए मना नहीं कर रखा था? और इस पर भी तू शहर गया! तो तू मेरी आज्ञाका पालन नहीं करता। अच्छा ही हुआ कि मेरा काम समयसे पहले ही खत्म हो गया, वरना तू मेरी आंखोंमें इसी तरह धूल झोंकता रहता, अहसानफ़रामोश कुत्ते!" और चाप्पनने मोटी छड़ी उठाई।

दादी दौड़ती हुई आई और इससे पहले कि छड़ी लड़केके सिरपर जा पड़े, उसने छड़ीको पकड़ लिया। "चाप्पन, दोष मेरा है। मैंने इससे वहां जानेके लिए कहा था। मुझे दंड दे। यह रहा मेरा सिर। अगर मारना ही है, तो मुझे मार, लेकिन बेचारे लड़केको छोड़ दे," दादीने प्रार्थना की।

चाप्पनने उसे एक ठोकर मारी, जिससे वह लुढ़कती हुई जमीन पर जा गिरी। फिर उसकी छड़ी कुज्जाप्पूके सिरपर पड़ी। कुज्जाप्पू चीखा, नीचे गिर पड़ा और गिरते ही बेहोश हो गया। (क्रमशः)

(अनुवाद : ललित सहगल)

टोली प्रवेश

(पृष्ठ ११ से आगे)

पिता : अच्छा, अब घर चलो।

कैलाश : अभी दो मिनिटमें आता हूं, पिताजी।

(कैलाशके पिता चले जाते हैं। विपिन कैलाशके कंधेपर हाथ रखता है।)

विपिन : शाबाश! तुम बहुत अच्छे लड़के हो। तुम सच सच कह देते, तो हमें झाड़ पड़ जाती।

गिरीश : अरे यार, मैं तो तुम्हें छोटा-सा लड़का समझ रहा था। तुमने तो हमारे दलके भीमसेनको पटक दिया!

हरिकृष्ण : भीमसेन नहीं, पैटन टैंकको।

(सब लड़के हंस पड़ते हैं)

मोहन : नाम तो बहुत ठीक रखा है।

सुधीर (खिसियाकर) : हां हां, मेरी खूब मजाक उड़ाओ। लेकिन अपने तजुर्बेसे एक बात कहता हूं कि अगर हम कैलाशको अपने दलमें शमिल कर लें, तो एक बहुत बड़ा फायदा होगा।

विपिन : वह क्या?

सुधीर : हम अखाड़ेमें इससे पटेबाजी सीखेंगे।

हरिकृष्ण : एक और फायदा यह भी होगा कि यह हमें बंदूक चलाना भी सिखाएगा।

विपिन : लेकिन सबसे अच्छी बात तो यह है कि कैलाशके पास फुटबाल है। हम अपनी फुटबालकी टीम बनाएंगे।

गिरीश : तो फिर आजसे कैलाश हमारी टोलीका सदस्य हुआ।

कैलाश : क्या मैं अब आठ आने दे सकता हूं?

विपिन : हां, लाओ।

विपिन (पैसे मोहनको देते हुए) : ये लो, मोहन, अभी जाकर मालीसे कुत्ता ले लो। कल इतवार है। सुबह नौ बजे हम यहींपर मिलेंगे। जब लंबी सीटी बजे, तो कुत्तेको लेकर यहांपर आ जाना। फिर सब मिलकर रमेशके घर चलेंगे और उसे खुश कर देंगे।

गिरीश : किसीने उसे बताया तो नहीं कि हम उसके लिए कुत्ता खरीदने वाले हैं?

मोहन : अरे नहीं, उसे बिल्कुल पता नहीं है।

गिरीश : तब तो मजा आ जाएगा।

विपिन (जाते जाते) : याद रखना, कल सुबह नौ बजे ठीक . . .

मोहन : ठीक, सोलहों आने. . .

(सब लड़के इधर-उधर हो जाते हैं।)

पर्दा गिरता है ●

नंदू और पड़ोसी चंगू

१—नटखट नंदू 'लाली पॉप' मिलते ही खुशीके मारे नाच उठा ।

२—तभी पड़ोसी चंगू आंखें तरेरता हुआ आया और बोला, "मुझे दो लाली पॉप, तुम छोटे हो, तुम्हें क्या हक है इसे खानेका!"

३—नंदू बोला, "भाई चंगू, हम पड़ोसी हैं। हमें मिलजुलकर रहना सीखना चाहिए। तुम्हें ऐसी भाषाका प्रयोग शोभा नहीं देता।"

४—चंगू क्रोधसे बोला, "तुम बड़ोंको सीख दोगे?" यह कहकर . . .

५—चंगूने आगे बढ़कर एक चपत लगा दी नंदूको। नंदू भले ही आकारमें छोटा था, परंतु साहसकी कमी उसमें नहीं थी।

६—इसपर नंदूने एक लात चंगूके जमाकर उसे नीचे गिरा दिया और उसकी छातीपर चढ़ बैठा। चंगू माफी मांगने लगा।

...ब्रह्मदेव

७—नंदूने चंगूसे कहा, "यह लो, एक लाली पॉप तुम भी खाओ।"

८—चंगू शर्मसे गड़ गया। फिर नंदू और चंगूमें मित्रता हो गई। दोनों खुशीसे नाचने लगे।

जीने की कला-१

आज्ञाकारी होना पुराना फ़ैशन है

—अलकारानी जैन

हां, हम कहेंगे कि माता-पिताकी आज्ञा मानना पुराना फैशन है। यह प्रजातंत्रका युग है। हम किसीका हुक्म क्यों मानें? माता-पिता पुराने ढर्रेके स्कूल-कालिजों-में पढ़े हो सकते हैं। नए ढर्रेके स्कूल-कालिजोंमें तो प्राध्यापक भी लड़के-लड़कियोंसे लगते हैं! किसीका हुक्म मानना गुलामीकी निशानी है। लेकिन इस चमकीले सिक्केका एक दूसरा पहलू भी है :

आज्ञा माननेकी तरह आज्ञा देना भी पुराना फैशन है—चाहे वह माता-पिता बेटे-बेटियोंको दें या बेटे-बेटियां माता-पिताको दें। आज्ञा देनेसे डिक्टेटरशाहीकी बू आती है। यह प्रजातंत्रका सिक्का नहीं है। अपनेसे छोटोंको आज्ञा देना तो खैर—पुराना फैशन ही सही—समझमें भी आता है, पर अपने बड़ोंको आज्ञा देनेका तो सवाल ही नहीं उठता। तुम आश्चर्य करोगे कि प्रति दिनके जीवनमें हम अनजानेमें कितनी ही बार स्वयं प्रजातंत्रके इस उसूलको उठाकर ताकपर रख देते हैं। आओ देखें कैसे :

'खाना रख देना!'

मोहन एस. एस. सी. में पढ़ रहा है। उसके माता-पिता उसे बहुत चाहते हैं। लेकिन वे नहीं जानते उसकी जिम्मे-दारियां कितनी बढ़ गई हैं! वह अपने एक घनिष्ट मित्रको शामको सिनेमा दिखानेका वादा कर चुका है। उसके पिता बच्चोंका ज्यादा सिनेमा देखना पसंद नहीं करते। वह समझते हैं कि सिनेमा देखनेसे बच्चे बिगड़ जाते हैं। अगर उनसे पूछा जाएगा, तो सिवा इनकारके कुछ हाथ नहीं आएगा। इसलिए सुबहको स्कूल जाते समय वह अपनी मांसे कहता है, "शामको मैं देरसे आऊंगा। मेरे लिए खाना उठा कर रख देना।"

मां उसकी ओर आश्चर्यसे देखती है। कहती है, "क्यों, कहां जाएगा, रे?"

"जाऊंगा कहीं—तुमसे मतलब?"

"अरे, मैं जानता हूं यह कहां जाएगा," पास ही कहींसे उसके पिता बोल उठते हैं। "यह सिनेमा जाएगा और जब लौटकर घरमें घुसेगा, तो मैं इसकी टांगें तोड़कर रख दूंगा।"

"हां, जाऊंगा, जाऊंगा, जाऊंगा!—सब मुझपर हुक्म चलाते हैं—" और पैर पटकता हुआ मोहन घरसे बाहर निकल जाता है।

मोहन अपने घनिष्ट मित्रको सिनेमा दिखाता है या नहीं? उसके पिताजी उसकी टांगोंको तोड़ देनेका संकल्प पूरा करते हैं या नहीं? सवाल ये नहीं हैं। सवाल है किसने किसको आज्ञा दी? क्या मोहनकी माताजी उसके लिए चौका-चूल्हा थामे बैठी रहें?—इसलिए कि वह उसे शामको गरम गरम भोजन कराना चाहती थीं? क्या उसके पिता अपने बच्चोंके द्वारा अपनी आज्ञाकी अवहेलना होते देखनेका चैलेंज स्वीकार करें? न करें, तो क्या वह घरके स्वामी होनेका अपना अधिकार खो बैठें? और यदि उन्होंने संध्याको स्वयं सपरिवार पिक्चर देखनेका प्रोग्राम बना रखा हो, तो? क्या मोहनने उनकी सुविधा देखकर अपने मित्रको वचन दिया था? इस सबसे लगता है कि यदि मोहन स्वयं उनकी आज्ञा माननेकी स्थितिमें नहीं था, तो उसका हल यह नहीं था कि वह स्वयं अपने माता-पिताको अपनी प्रतीक्षा करनेकी आज्ञा दे। एक दूसरा तरीका भी है—आओ देखें इसे भी :

घर भरकी सुविधा

"मां," मोहन स्कूल जाते समय कहता है, "वह पंकज है न, मेरी क्लासमें ही पढ़ता है, अच्छा लड़का है न? वही तो जिसे मैंने आपसे उस दिन मिलाया था।"

"हां, तो?"

"तो, मां, वह कहता है कि मैं उसे सिनेमा दिखाऊं और मैं कहता हूं कि ना, बाबा, मां मेरे लिए चूल्हा थामे बैठी रहेगी—मैं इस चक्करमें नहीं फंसता।"

मांकी आत्मा संतुष्ट हो गई। उसका मोहन उसका कितना खयाल रखता है! ऐसे बेटेके लिए तो वह दो रात चूल्हा थामे बैठी रहे। वह कहेगी, "अरे, चूल्हा तो खैर मैं देरमें चढ़ा लूंगी, पर वह भी तुझे सिनेमा दिखाता है कभी?"

"दिखाएगा, मां, पर पिताजी तो मेरा सिनेमा देखना पसंद

ही नहीं करते—क्या करूं?"

"तू सिनेमासे सीधा घर आइयो, उन्हें मैं समझा लूंगी," मां कहती है।

लो, मां भी पिताके विरुद्ध बेटेके षड्यंत्रमें शामिल हो गई! ऐसेमें अपने जोड़े हुए जेबखर्चको भी साफ बचा लिया जाए, तो कैसा? मोहन विभोर होकर कहता है, "तुम कितनी अच्छी हो, मां! लेकिन पैसे तो पिताजी ही देंगे ना?"

मोहनके पिताजी उसे पैसे देते हैं या नहीं यह मोहनकी समझदारीपर ही निर्भर करता है। तरकीबें बहुतसी हैं, पर सिर्फ एक बारके लिए एक तरकीब बताई जा सकती है, बशर्ते कि मोहनके पिताजी इसे न पढ़ें। मान लो मोहनकी माताजी उसे उसी समय दो टिकटोंके दाम उसके पिताजीसे दिलानेकी सिफारिश करती हैं। ऐसे समय मोहन मासूम चेहरा बनाकर अगर अपने पिताजीका कालर ठीक करने लगे, तो?

पिताजीकी आत्मा भी प्रसन्न हो गई! दो टिकटोंके साथ इंटरवलमें पौपकौर्न खानेके पैसे भी वसूल किए जा सकते हैं—नहीं क्या?

किसने किसको आज्ञा दी? पिताजी बहुत कहेंगे तो इतना ही : "देख बे, तेरी आदत बहुत बिगड़ती जा रही है। इस महीने दूसरी पिक्चर देखनेको कहा, तो तेरी हड्डी-पसली एक कर दूंगा।"

विश्वास रखो, यदि तुम अति पर नहीं उतर आए, तो तुम्हारे मोहनकी हड्डी-पसली अलग अलग ही रहेगी। फरक यही है कि पहले तुम अपना कालर ऊंचा करते हो या अपने पिताजीका।

विनम्रता बनाम खुशामद

क्या इसे खुशामदका नाम दिया जा सकता है? यदि हां, तो जरूरी है कि पहले हम विनम्रता और खुशामदके बीचका फरक समझ लें। दोनों हीके द्वारा हम दूसरेके बड़प्पन और अधिकारको स्वीकार करते हैं। किंतु विनम्रतामें हम दूसरेकी समझदारीका मान करते हैं, जबकि खुशामदमें सिर्फ दूसरेको बेवकूफ बनाकर जैसे-तैसे अपना उल्लू सीधा करनेकी भावना होती है। अब यह मोहन या तुमपर निर्भर है कि तुम अपनेसे बड़ोंको समझदारोंकी श्रेणीमें गिनते हो या नहीं।

दूसरी कमी इस उदाहरणमें यह है कि यदि मोहनके पिता उसकी इस विनम्रताका उत्तर इनकारमें ही देते हैं, तो वह अपने मित्रको सिनेमा दिखानेसे तो रह ही गया।

नहीं, विनम्रता कोई सामयिक उपाय नहीं, जो केवल तत्काल काम निकालनेके लिए बरती जाती हो। विनम्रता स्वभावका एक गुण होता है। अधिक महत्व इस बातका नहीं है कि मोहनको तत्काल सिनेमा जानेकी इजाजत मिलती है या नहीं। अधिक महत्व इस बातका है कि मोहन जिद, जोर, जबरदस्ती दिखाकर अपने माता-पिताको स्थायी रूपसे अपने विरुद्ध कर लेता है या उनको अपने साथ अक्सर ही सहमत होनेके लिए मानसिक रूपसे तैयार करता है।

बड़ोंको अपने अनुरूप ढालो

यह एक अजीब बात है, लेकिन सही है, कि अपनेसे बड़े या बलवान या ज्यादा समझदार व्यक्तिको धींगा-मुश्तीसे वशमें नहीं किया जा सकता। उन्हें आराम देकर, उनके बड़प्पनकी भावनाको सहलाकर, उनकी दिक्कतों व परेशानियोंमें हिस्सा बंटाकर उन्हें स्थायी रूपसे वशमें किया जा सकता है। तुम्हारी विनम्रतासे भले ही वे तुरंत नत न हों, किंतु निरंतर प्रयाससे वे स्थायी रूपसे तुम्हारी इच्छाओंका मान करने लगेंगे—और तुम्हारे ऊपर गर्व करेंगे सो अलग।

यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारे माता-पिता या बड़े भाई-बहन तुमपर हुक्म न चलाएं, तो पहले स्वयं उनपर हुक्म न चलानेका निश्चय करो। इससे घरके भीतर एक प्यार-भरे समझौतेकी स्थिति पैदा होती है। यों भी, मोहन अगर इतना ही विनम्र या समझदार हो, तो एकदम अपने मित्रसे सिनेमा दिखानेका पक्का वादा नहीं करेगा। अगर माता-पिताकी आज्ञा लेनेकी बात कहनेमें उसे पुराना फैशन लगता है, तो एकदम नए फैशनकी बात यह है—"मैं चाहता तो हूं कि हम-तुम दोनों एक साथ सिनेमा देखें। मैं मांसे पूछ देखता हूं कि उन्हें मेरे लिए भोजन लिए बैठे रहनेमें ज्यादा परेशानी तो न होगी—फिर तुम्हें बताता हूं।"

माता-पिताके विचार बदलो

नए जमानेके बड़े बच्चोंको अपने पुराने जमानेके माता-पिताके विचार जब-तब दकियानूसी भी लग सकते हैं। लेकिन उनके बरतावसे झल्लाकर या अपनी मनमानी करके उनके विचार नहीं बदले जा सकते। जब भी तुम उनकी इच्छाओंके विरुद्ध आचरण करोगे, तभी—यदि उनका जोर चलता होगा तो—तुम्हें सजा मिलेगी, नहीं तो वे मन ही मन इतना दुखी होंगे कि तुम्हारे जन्मकी घड़ीको कोसेंगे। जिन बच्चोंके माता-पिता ऐसा सोचते हों, उन जैसा दुर्भागी और कौन होगा?

धीरजसे, समय समयपर छोटे-मोटे चुटकुलोंसे (लेकिन किसी भी हालतमें बहससे नहीं) समझदार किशोर या नवयुवक अपने माता-पिताके विचार भी बदल सकते हैं। मां-बाप भले ही खुलकर अपनी हार बेटे-बेटियोंके सामने स्वीकार न करें, लेकिन इतना निश्चय है कि अगर वे कोसेंगे भी, तो जमानेको कोसेंगे—कभी भी अपने जिगरके टुकड़ोंको नहीं। मिसालके तौरपर एक चुटकुला दिया जा सकता है :

मोहन अपने पितासे, उनकी फुरसतका समय देखकर,

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

● छाया : राज

सालगिरह की दावत

आज हमाली छालगिलह है,
यह दावत है उछकी,
छक कल माल उलाओ, मित्लो,
जो इच्छा हो जिछकी ।

पहले छे मैं बली हो गई,
हां, यह बात छही है ।
पर छंतोछ इछी छे कर लूं,
ऐछी बात नहीं है ।

खूब बली होने दो मुझको,
कलतब दिखलाऊंगी,
छंछद का चुनाव लल कलके,
मंत्ली बन जाऊंगी!

पाछ नया कानून वहां छे
ऐछा कलवाऊंगी—
एक बलछ में छालगिलह दो,
छबकी मनवाऊंगी!

—किशोरीरमण टण्डन

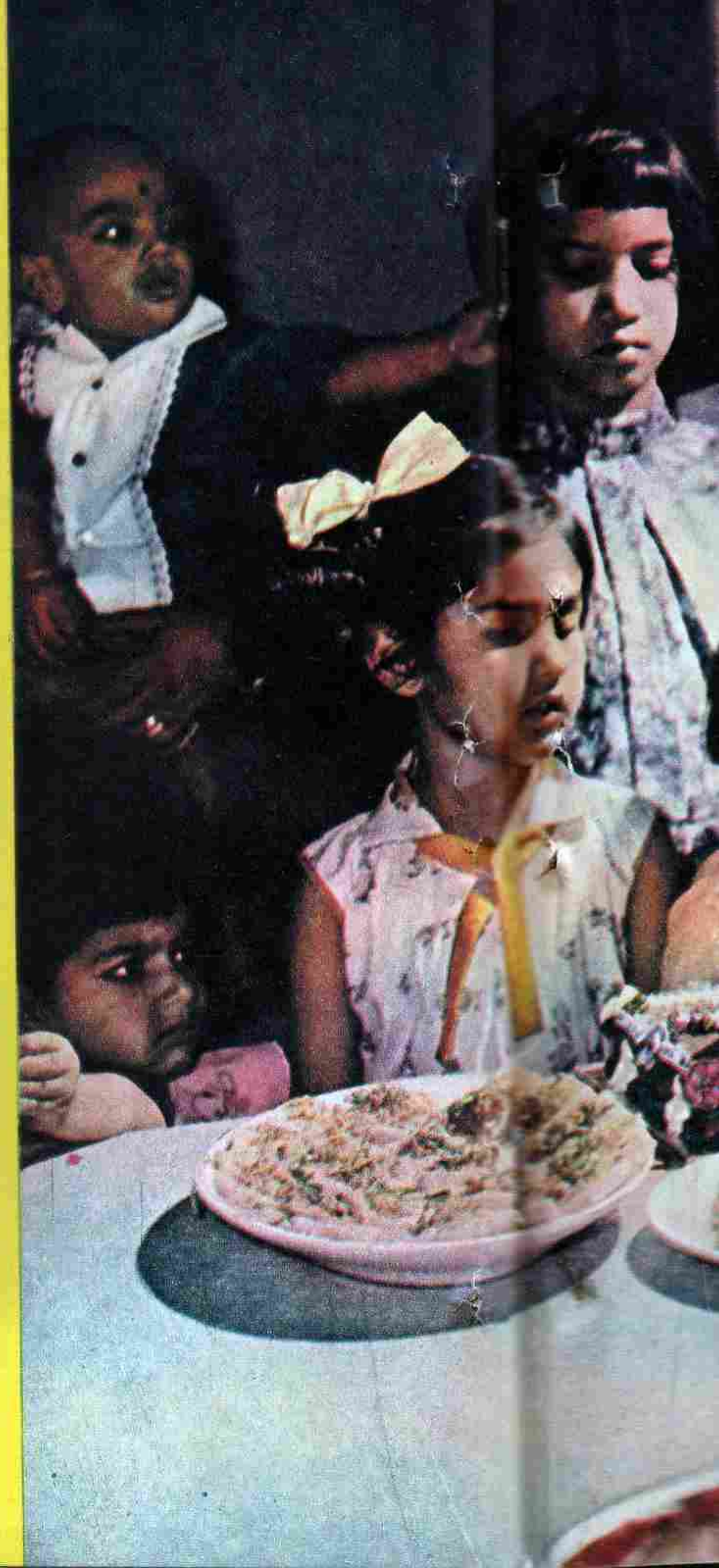

डैडी आप क्या लिख रहे हैं ?
चैक है ,बेटा।
चेक क्या होता है ?
यह बैंक के नाम आदेश है कि अमुख व्यक्ति को रुपया दे दो। मुझे कुछ किताबें खरीदनी हैं। दुकानदार को रुपये की बजाय चैक ही भेज दूंगा। वह इसे अपनी बैंक में जमा करा देगा। उसकी बैंक इसे हमारी बैंक से भुना लेगी। चैक रुपये का काम करेगा। और यह तरीका सुरक्षित भी है। चैक रुपया केवल उस दुकानदार को ही मिलेगा। चैक खो भी जाय, फिर भी हमारा रुपया सुरक्षित है। है न, आश्चर्य की बात।
ठीक है, डैडी। आपका खाता तो पंजाब नेशनल बैंक में ही है न।
हाँ, बेटा। वही मेरा बैंक है। यह देश के सबसे पुराने और सबसे बड़े बैंकों में से एक है। देश भर में इसकी ४७५ से अधिक शाखाएं हैं।
पंजाब नेशनल बैंक
PR-PNB-4624-1

(१५)

मारे हंसीके सुशी पागल हुई जा रही थी, "हो हो हो! सारी हेकड़ी धरी रह गई नत्थूकी। सर्टिफिकेट मिल गया उसको कि वह पागल है, हो हो हो..."

मेरी समझमें कुछ नहीं आ रहा था। मैंने कहा, "ओ बावली, कुछ मुंहसे तो बोल, आखिर हुआ क्या?"

"नत्थूकी नानीजीकी चिट्ठी आई है, लिखा है...हो हो हो..."

"क्या लिखा है?"

"लिखा है—'प्यारी बेटी, नत्थू एक्सप्रेस गाड़ीसे उतरने वाला था, वह क्यों नहीं आया?

WWW.KISSEKAHANI.COM

हमें बड़ी चिंता है, क्योंकि यहां सुननेमें आया है कि एक पागल-सा लड़का चलती गाड़ीसे गिर गया। जल्दी नत्थूकी कुशलताके समाचार लिखो...' हो हो हो! सुबहसे सब लड़के नत्थूको 'पागल' कहकर चिढ़ा रहे हैं। गोपालसे तो नत्थूकी मारामारी होते होते बची। गोपालने नत्थूको 'पागल है' कहा, तो नत्थू बोला, 'अपने घरके आगे तो कुत्ता भी शेर होता है। तू मेरे दरवाजे आकर तो बोल, भुरकस न निकाल दूं तो कहना'..."

तभी मुहल्लेमें शोर मचा। मैं भागकर खिड़की-पर पहुंची, तो देखा—नत्थू और गोपाल गुत्थम-गुत्था हुए पड़े हैं और सारे लड़के 'बकअप, बकअप! पलटी दे दो, गोपाल!' करनेमें लगे हुए हैं। नत्थूने गोपालके पटापटा चार हाथ जमा दिए और बदलेमें गोपालने नत्थूको पटककर खूब लातोंका प्रसाद दिया।

मैं सोच ही रही थी कि हाय, बेचारोंको कोई छुड़ाता क्यों नहीं कि गोवर्द्धन और प्रभू भी आ गए। गोवर्द्धनकी लंबाई-चौड़ाईसे सब डरते ही थे, सो उसके आते ही गोपाल और उसके तरफदार भाग निकले। गोवर्द्धन और प्रभू उनके पीछे दौड़े और उन्हें मुहल्लेके बाहर तक खदेड़ आए। आकर गोवर्द्धनने नत्थूकी मिजाज-पुर्सी शुरू की: "बहुत चोट तो नहीं आई, नत्थू!"

"चोट क्या आती! मैंने गोपालके बच्चेकी वह मरम्मत की है कि वह भी याद करता होगा... आह!" तभी शायद नत्थूकी टूटी कमर दुःख गई।

"इसमें क्या शक है! इसमें क्या शक है!" प्रभू बोला। "मगर अचानक ये लोग तुम्हें इस तरह चिढ़ाने क्यों लगे हैं?"

"क्योंकि नत्थूकी नानीजी सठिया गई हैं!" गोवर्द्धनने कहा। "नहीं पहुंचा नत्थू, तो समझ लेना चाहिए था कि किसी कारणसे नहीं आ पाया होगा।"

"पर क्यों नहीं पहुंचे तुम, नत्थू? प्रोग्राम तो तय था," प्रभूने पूछा।

"क्या बताऊं?" नत्थू बोला, "कम्बख्त गाड़ीमें भीड़ इतनी थी कि उसमें घुसा ही नहीं जा सकता था!"

"तो क्या इसी लिए हार मानकर लौट आए? मैं होता, तो घुस ही जाता, चाहे जितनी भीड़ होती," प्रभू बोला।

"साथमें सामान भी तो था," नत्थूने कहा।

"तो क्या हुआ? यह तो कुलीकी जिम्मेदारी थी।"

"कुलीको ही तो जिम्मेदारी सौंपी थी। उसने जैसे तैसे मेरा बिस्तरा और संदूक एक डिब्बेकी खिड़कीसे अंदर ठूंस दिए, पर मेरे घुसने-के कोई आसार नहीं थे। उधर डिब्बेके अंदरसे लोग मेरा सामान बाहर फेंकनेको उतारू थे, इधर कुली उन्हें गालियां दे रहा था कि गाड़ी तुम्हारे बापकी नहीं है, हमने भी टिकट खरीदा है।"

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

रामूकी उम्र दस-बारह सालसे अधिक न थी, लेकिन बातें बड़े-बूढ़ोंकी तरह करता था।

कलकत्तेसे थोड़ी दूर एक उपनगर था। वह नगर चारों ओरसे पहाड़ और जंगलोंसे घिरा हुआ था। रामू दीवालीकी छुट्टीमें कलकत्तासे वहां घूमने गया था। वहां उसकी मौसी रहती थी। रामू चूंकि अपनेको बड़े शहरका लड़का मानता था, इसलिए जिस किसी चीजको देखता, नाक-भौंह सिकोड़ता। हर बातपर बड़ोंकी तरह लंबी-चौड़ी बातें सुनाता। बस्तीके हमउम्र मित्र उसके साथ रहते। वही उसे इधर-उधर घुमाते, लेकिन रामूकी बातें सुनकर वे अवाक् रह जाते।

दीनूने उससे कहा, "वह देखो जंगल। लोग कहते हैं उसमें शेर-चीते रहते हैं। कभी ऐसा सघन जंगल देखा है?"

रामूने हुंकारी भरी और बोला, "यह भी कोई जंगल है! यह तो कुछ भी नहीं है। जंगल तो सुंदरवन है; वहां न दिनमें सूरजकी रोशनी पहुंच पाती है, न रातमें चंद्रमाका प्रकाश। और शेर? असली चीते-शेर तो सुंदरवनमें रहते हैं। हमारे मामा वहां शिकार खेलने जाते थे। उन्होंने एक बार शेर मारा था।"

छोटका बड़े ध्यानसे बात सुन रहा था। उसने पूछा, "किस चीजसे मारा? पिस्तौलसे या राइफलसे?"

रामू दोनों हाथ कमरपर रखकर बोला, "मेरे मामाने पिस्तौल-राइफलसे कभी शिकार नहीं किया। वह कहते हैं कि पिस्तौल-राइफलसे शेर मारा, तो शिकार कैसा? शिकारका असली मजा तो आमने-सामने लड़नेमें है। उन्होंने वह शेर सिर्फ एक थप्पड़से मारा था!"

"एक थप्पड़से? सो कैसे?' सबने एक साथ पूछा।

कहानी

राम की बहादुरी

WWW.KISSEKAHANI.COM

रामू थोड़ा आगे बढ़कर एक पेड़के नीचे बैठ गया। फिर उसने ऊपर ताककर कहा, "मामाको थोड़ी तकलीफ अवश्य हुई थी, लेकिन वह घबड़ाने वाले जीव नहीं हैं। वह शेरके ठीक सामने खड़े थे। बीचमें छोटी-सी नदी थी।"

रामूके दोस्त भी उसके अगल-बगल बैठ गए। उन्होंने कभी यह सुना-पढ़ा नहीं था कि थप्पड़से भी शेर मारा जा सकता है। वे बड़े चावसे उसकी बातें सुनने लगे।

"जानते हो शेर कैसा था? वह था रायल बंगाल टाइगर। देशकी आजादीके बाद अब उसका नाम नेशनल बंगाल टाइगर हो गया है। उस नदीमें वह पानी पीने आया था। सामने आदमीको देखकर चौंका। उसने बड़ी बड़ी आंखोंसे मामाजीको देखा। उसकी जीभसे लार टपकने लगी। मामाजी जानते थे कि इसी शेरने उस दिन पेड़पर चढ़े एक आदमीको कूदकर पकड़ लिया था और खा गया था। उसीने सात-आठ दिन पहले एक नावसे छोटे-से बच्चेको खींच लिया था। आदमीके खूनके स्वाद-को अभी वह भूला नहीं था। और फिर इस समय तो सामने दो दो मानव खड़े थे। इसलिए वह अपना लोभ संवरण नहीं कर पाया . . ."

"दो दो कौन?" दीनूने प्रश्न किया।

"मामा लालू और उनके भाई कालू। लालू शिकारके लिए गए थे और कालू सूद वसूलने। वे सुंदरवनके किसानों-को रुपया ऋणपर देते थे और साल खतम होते होते सूद वसूल करने आते थे। उन्होंने लालू मामाको हाथकी उंगलीसे शेर दिखाते हुए कहा—'लालू भाई, इस शेरको यहांसे भगा दो। अगर इसने गर्जना शुरू किया, तो मेरा सूदका सारा हिसाब-किताब गड़बड़ हो जाएगा। इधर पहलेसे ही कुछ लोगोंका हिसाब मैं भूल रहा हूं।' मामाजी सतर्क हो गए। वह नहीं चाहते थे कि शेरके कारण कालू भाईका हिसाब गड़बड़ हो जाए और उन्हें नुकसान हो। मामाजी कमरपर दोनों हाथ रखकर सोचने लगे कि क्या करना चाहिए। शेर मारना यों उनके लिए कोई मुश्किल काम न था, केवल परेशानी इस बातकी थी कि वह नदी पारकर उस तरफ कैसे जाएं, चूंकि उन्हें तैरना बिल्कुल नहीं आता था। शेरको आवाज देकर इस पार बुलाया भी नहीं जा सकता था, क्योंकि शेर मनुष्योंकी भाषा भला कैसे समझता? और अगर आना भी चाहे, तो यह संभव नहीं था कि इस सर्दीमें वह नदी पार करेगा ही। अब उपाय क्या करना चाहिए, यही मामाजी सोचने लगे। इधर-उधर ताकते ही उन्हें एक उपाय सूझ गया। थोड़ी दूरीपर ही एक विशालकाय कछुआ आरामसे धूप सेंक रहा था। मामाजीने तत्काल पैंटकी जेबसे एक रस्सी, कील तथा हथौड़ी निकाल ली और धीरे धीरे कछुएकी ओर बढ़े . . ."

"ये सब चीजें क्या तुम्हारे मामाजी हमेशा अपने साथ रखते थे?" भोलाने टोका।

प्रियदर्शी प्रकाश

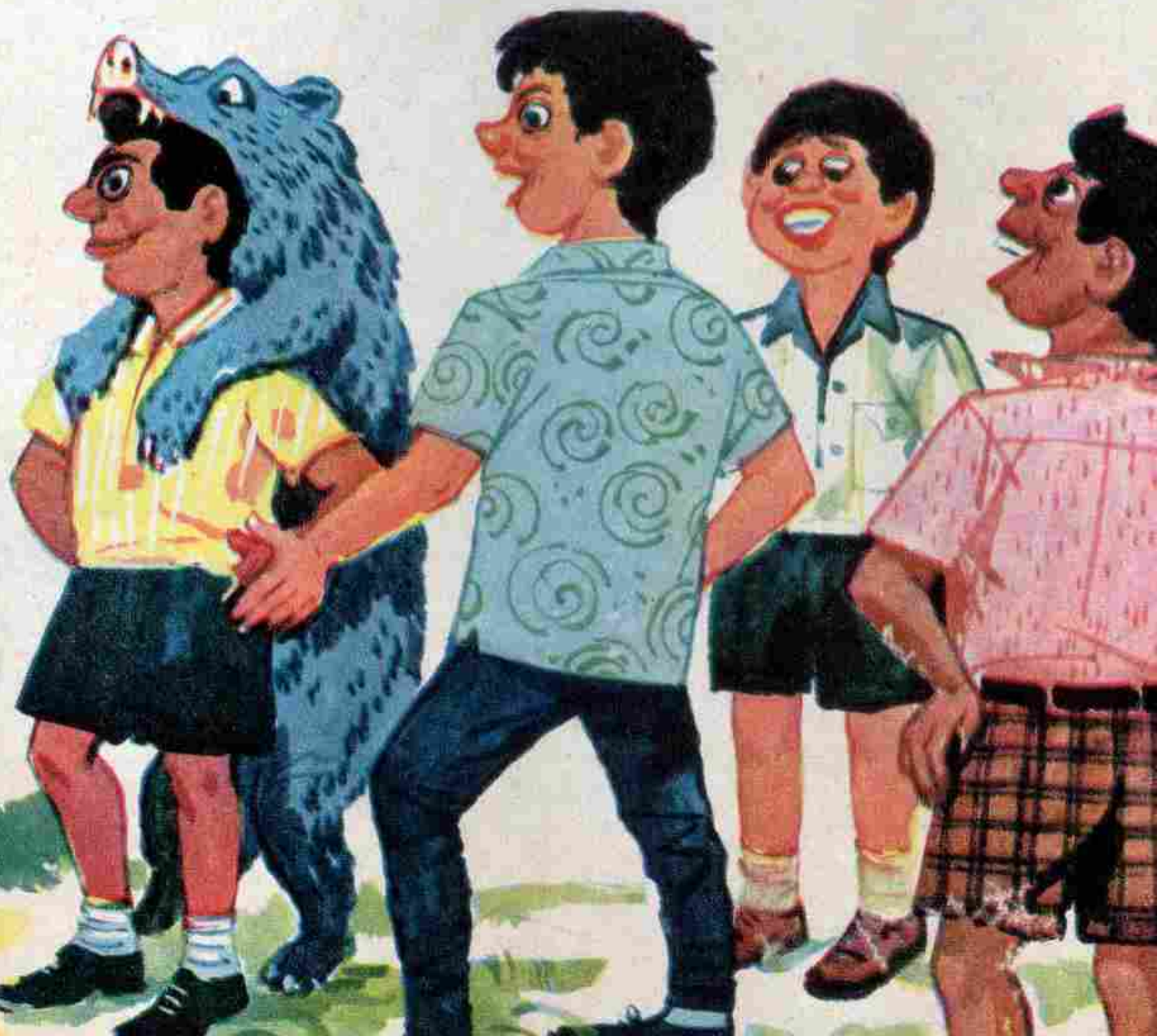

सपना! लेकिन सच, और आपका अपना-

जी हां— ये साठे के 'ऑरेंजक्रीम बिस्कुट' हैं। जिस स्वाद का आपको अबतक इंतज़ार था, उसका आनंद अब आप भरपूर मात्रा में ले सकते हैं। आजही ये बिस्कुट खरीदिये; आपके परिवार को ये बहुत पसंद आएंगे।

साठे बिस्कुट एण्ड चॉकलेट कं. लि. पूना-२

नवे

बिस्कुट

आनंद से भरपूर

heros' SBC-267- HIN

"वाह, रखेंगे कैसे नहीं? सुंदरवनमें कब किस चीजकी जरूरत पड़ जाए, इसका क्या कोई भरोसा रहता है? और इतना ही नहीं, उनकी पैंटकी दूसरी जेबमें कैमरा, दूरबीन, दियासलाई, दवाइयोंकी शीशियां और पता नहीं कितनी दूसरी चीजें भरी रहती हैं। हां, तो मैं बता रहा था कि मामाजी धीरे धीरे कछुएके निकट पहुंचे और कूद-कर उसपर चढ़ बैठे। बेचारा कछुआ भौंचक्का रह गया और डरकर उसने नदीमें छलांग लगा दी। उसके छलांग लगानेके साथ ही साथ मामाजीने झुककर कछुएकी पीठ-पर नाकके पास कील रख दी और हथौड़ा मारकर छेद कर दिया। इसके बाद रस्सी उस कीलमें फंसा दी। बस, कछुआ मामाजीके अधिकारमें हो गया।"

दीनूकी आंखें आश्चर्यसे फट-सी गईं। वह बोला, "लगता है, जैसे कछुआ उस समय स्टीमर बन गया था। क्यों, रामू भैया?"

रामू खुशीसे सिर हिलाकर बोला, "ठीक कहते हो, दीनू। उसके बाद मामाजीने रस्सीके सहारे कछुएका मुंह घुमा दिया और उस पार चलनेका इशारा किया। बेचारे कछुएने दस मिनिटोंमें मामाजीको उस पार पहुंचा दिया। शेर मामाजीके सारे काम देख रहा था। वह भी अवाक्-सा चुपचाप खड़ा था। यहां तक कि भागने तक-की भी उसे सुध न रही। मामाजीने तत्काल शेरके पास पहुंचकर एक जबरदस्त थप्पड़ उसके गालोंपर रसीद किया। बस, एक थप्पड़में ही शेर 'टें' बोल गया। मरते समय वह एक बार चिल्ला भी न सका। उसके बाद मामाजीने उस शेरको उठाकर कछुएकी पीठपर लादा और फिर इस पार अपने कालू भाईके पास आ पहुंचे।"

रामूके दोस्त यह कहानी सुनकर सकतेकी हालतमें हो गए। उन्होंने ऐसी अनहोनी घटना पहले नहीं सुनी थी। यह कहानी सुनकर फिर किसीको हिम्मत नहीं हुई कि वे उसे अपने नगरके जंगलके बारेमें बताएं। लेकिन लड़कों-को अपने नगरका मान तो रखना ही था। इसी लिए एक लड़केने पहाड़ दिखाते हुए पूछा, "इन पहाड़ोंके बारेमें तुम्हारा क्या विचार है, रामू भैया?"

दूसरा बोला, "हां देखो न. कितने ऊंचे और विराट् पहाड़ हैं!"

रामूने दोनों आंखें सिकोड़ लीं और होंठ बिचकाकर बोला, "धत्, ये भी भला पहाड़ हैं? पहाड़ोंका पहाड़ तो हिमालय है। ये सब पहाड़ तो टीले हैं। समझे?"

विजय एक बार दार्जिलिंग घूम आया था, वह बोला, "हां, रामू भैया, तुम ठीक कहते हो। हिमालय पहाड़ बहुत ऊंचा और बर्फसे ढंका है।"

रामूसे सहन न हुआ। धमकाकर बोला, "खाक ऊंचा है। तुम कभी चढ़े हो उसपर? बस, किताबोंमें जो पढ़ लिया, बक दिया।"

एकने कहा, "तेनसिंह और हिलारी तो उसपर चढ़े थे। उन्होंने ही तो कहा था कि वे पहाड़ बहुत ऊंचे हैं।"

"चुप रहो, चुप रहो," रामू अपना अपमान न सह सका। बोला, "बस, किताबोंकी कहानियां ही रटकर बैठ गए हो, असली बातका तो तुम लोगोंको पता ही नहीं है।"

छुट्टी का बहाना—

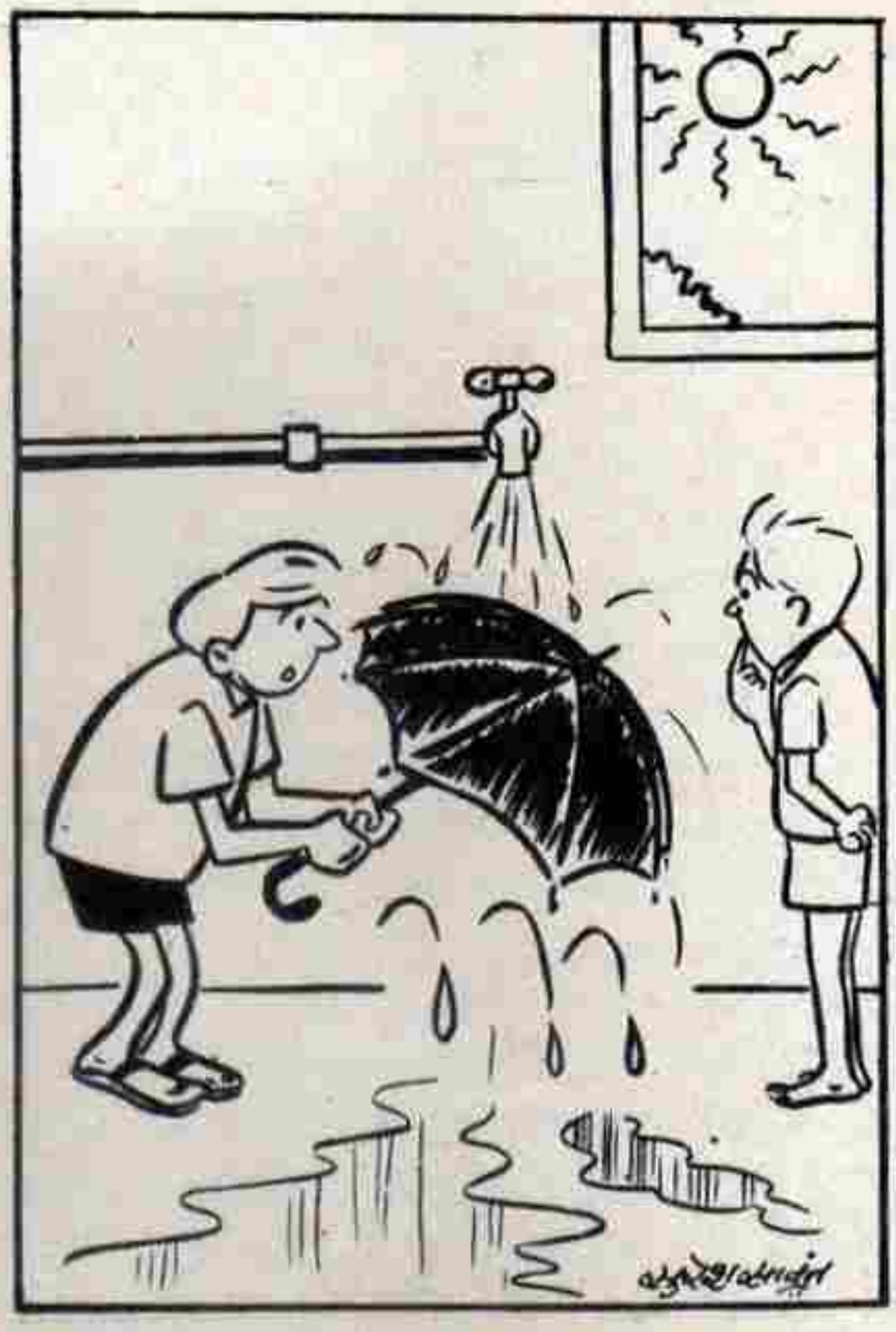

"अरे, ऊपर जाकर मांसे बताऊंगा कि बाहर कितने जोरों का मेंह पड़ रहा है, फिर स्कूलकी छुट्टी. . .!"

"कौन सी असली बात है?" कईयोंने एक साथ पूछ लिया।

"असली बात यह कि हिमालय पर दो आदमी नहीं, तीन आदमी चढ़े थे। तेनसिंह, हिलारी और मेरे सगे भाई प्रवीर," रामूने बड़ी गंभीरतासे उत्तर दिया।

"तब तुम्हारे भाईका नाम क्यों नहीं छपा?" एकने पूछा।

"छपेगा कैसे? भाई साहबने भी तो बस कमाल ही कर दिया। खुशीमें भला किसी बातका ध्यान रहता है?"

दो-एक लड़के जानेकी तैयारीमें थे, लेकिन उत्सुकता-के मारे फिर बैठ गए।

रामूने अपने दोस्तोंको कहानी सुनानी शुरू की: "अट्ठाईस हजार २ सौ फीट ऊपर उठकर हिलारी और तेनसिंहकी हालत खराब हो गई। तेनसिंहके पांव तब तक बर्फ बन गए थे और हिलारीकी नाकके छेदोंमें बर्फके टुकड़े जम गए थे, जिससे वह सांस भी न ले पा रहा था।"

दीनू डरता डरता बोला, "लेकिन नाकमें तो आक्सी-जन-पाइप लगी रहती है।"

रामू बिफरकर बोला, "बड़े जानकार बनते हो तुम? जानते भी हो कि उतनी ऊंचाईपर आक्सीजन भी बरफ बन जाती है! मेरे भाई साहब घर पहुंचे थे, तो उनकी

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

दूरबीन का निर्माता :

बच्चो, तुमने दूरबीन देखी होगी, जिसमेंसे दूरकी चीजें देखी जाती हैं। दूरबीनसे दूरकी चीजें नजदीक और बड़ी बड़ी दिखाई देती हैं। आम तौरपर इसका जहाजोंमें उपयोग होता है। दूरबीनसे ही हम चांद और सितारोंको देखकर उनके बारेमें जान सके हैं। इसको बनानेका श्रेय इटलीके वैज्ञानिक गैलीलियोको है।

गैलीलियो आजसे चार सौ साल पहले १४ फरवरी १५६४ में इटलीके पीसा नगरमें पैदा हुआ। पीसा नगरका नाम तुमने सुना होगा। पीसा नगरमें ही तो संसारका एक आश्चर्य है---पीसा मीनार। यह मीनार एक ओरको झुकी हुई है। इस विचित्र मीनारको देखनेके लिए हजारों सैलानी दूर दूरसे इस नगरमें जाते हैं।

गैलीलियोके पिता अपने समयके बहुत बड़े विद्वान् थे। उन्होंने गैलीलियोको बड़े परिश्रम और लगनसे पढ़ाया। वह उसे डाक्टर बनाना चाहते थे,पर भाग्यको तो कुछ और ही मंजूर था। उन्होंने गैलीलियोको डाक्टरीकी शिक्षा दिलानेके लिए एक कालेजमें भर्ती करवाया। गैलीलियो बचपनसे ही बहुत समझदार और प्रखर बुद्धिका था। वह दूसरे बच्चोंसे सदा अलग-थलग रहता था। वह हर वस्तुके बारेमें सोचा करता था कि यह कैसे बनी, इसे किसने बनाया और इससे क्या क्या काम लिये जा सकते हैं। क्या इससे भी अच्छी वस्तु बन सकती है? वह घंटों एकांतमें ऐसे प्रश्नोंको सुलझानेका प्रयत्न करता, जो उसके मस्तिष्कमें भिन्न भिन्न वस्तुओंको देखकर पैदा होते थे।

अब एक रोचक घटना सुनो जिसने गैलीलियोके जीवनमें क्रांति ला दी :एक दिन बालक गैलीलियो गिरजेमें आराधना करनेके लिए अपने माता-पिताके साथ गया था। गिरजेकी छत नीची थी। उसके बीचोंबीच एक बड़ा लैंप लटका हुआ था। उन दिनों बिजली तो थी नहीं, इसलिए लोग इस प्रकारके भारी लैंपोंमें चर्बी और मोम जलाया करते थे। संयोगकी बात है कि उस दिन आंधी आ गई। तेज हवाके कारण गिरजेका लैंप जोर जोरसे हरकत करने लगा। हवाका तेज झोंका आता, तो गिरजेका लैंप झटकेके साथ दूर चला जाता। जब हवा कम होती, तो फिर अपनी जगहपर वापस आ जाता। गैलीलियो बहुत समय तक लैंपको झूलते हुए देखता रहा। फिर उसने एक अजीब बातकी खोज की कि लैंप चाहे कितनी ही दूरपर जाकर वापस आए, उसे वापस लौटनेमें उतना ही समय लगता है, जितना कम दूरीको तय करनेमें लगता है। यह वैज्ञानिक सिद्धांत बादमें बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ। अब यह पेंडुलमका सिद्धांत कहलाता है। अब भी तुम्हारे घरमें ऐसी घड़ी मौजूद होगी जिसमें पेंडुलम लगा होता है। यह पेंडुलम घड़ी चलनेके साथ ही हरकत करने लगता है। यह पेंडुलम गैलीलियो हीका आविष्कार है।

गैलीलियो जितना अधिक वस्तुओंकी बनावटपर विचार करता,उतना ही उसका मस्तिष्क प्रखर होता जाता था। गैलीलियोकी प्रखर बुद्धिपर उसके माता-पिता और अध्यापक बहुत प्रसन्न थे। पर जल्दी ही उसके अध्यापक गैलीलियोसे उकता गए, क्योंकि वह उनसे अजीब अजीब प्रश्न पूछा करता था। कभी कभी तो वह उनके उत्तरोंपर बहस भी करने लगता, जो उस युगमें सख्त गुस्ताखी समझी जाती थी। एक दिन बहसके बीच गैलीलियोके अध्यापकने उसे बताया कि यदि भिन्न वजनकी दो वस्तुएं ऊंचाईसे धरतीकी ओर फेंकी जाएं, तो भारी वस्तु धरतीपर पहले गिरेगी और हल्की वस्तु बादमें गिरेगी। गैलीलियो अध्यापककी बात माननेको तैयार न हुआ। उसका कहना था कि सभी वस्तुएं चाहे हल्की हों या भारी, एक ही समयमें और एक ही गतिसे धरतीपर गिरती हैं। अध्यापकने अपनी बात मनवानेपर आग्रह किया, तो गैलीलियोने उससे कहा कि प्रयोग करके देखे लेते हैं। अस्तु उसने दो ईंटें उठाईं। एक हल्की थी और दूसरी उससे कई गुना भारी। इन ईंटोंको लेकर वह पीसा नगरकी संसार-प्रसिद्ध पीसा मीनारकी अंतिम मंजिलपर चढ़ गया। बहुतसे लोग यह तमाशा देखनेके लिए जमा हो गए। गैलीलियोने अंतिम मंजिलसे दोनों ईंटें नीचे गिरा दीं। लोग यह देखकर हैरान रह गए कि दोनों ईंटें एक ही समयमें और एक साथ धरतीपर गिरीं।

चूंकि इस प्रयोगसे गैलीलियोके अध्यापकका अपमान हुआ था, इसलिए कालेजके सभी अध्यापक गैलीलियोसे रुष्ट हो गए। उन्होंने उसकी शिक्षामें रोड़े अटकाने आरंभ कर दिए। विवश होकर वह कालेजसे निकल गया। वह इटलीके दूसरे नगर पीडुआमें चला गया। वहां वह गणितकी शिक्षा प्राप्त करने लगा। थोड़े ही समयमें वह गणितमें प्रवीण हो गया। और एक दिन ऐसा आया कि उसे पीडुआ विश्वविद्यालयमें गणितका प्राध्यापक नियुक्त कर दिया गया। १६०२ में गैलीलियोकी आयु अड़तीस बरस थी। तब उसने एक यंत्र बनाया, जिसे थर्मामीटर कहते हैं। थर्मामीटर तो तुम जानते हो। इससे शरीरके तापका सही अनुमान लगाया जाता है। बादमें उसने एक अन्य यंत्र बनाया जिससे मनुष्यकी नाड़ीके चलनेकी गतिका पता लग सकता था। इस यंत्रने डाक्टरोंको रोगियोका इलाज करनेमें बड़ी सहायता की और दूर दूर तक गैलीलियोकी बुद्धि और विद्वत्ताकी ख्याति फैल गई। उन्हीं दिनों गैलीलियो वीनस गया।

वहां गैलीलियोको पता लगा कि बैलजियमके किसी व्यक्तिने ऐसा यंत्र बनाया है, जिससे दूरकी वस्तुएं बड़ी दिखाई देती हैं। पर, उसमें त्रुटि यह थी कि इस यंत्रमें हर वस्तु उलटी नजर आती थी। गैलीलियो यह सुनकर दूरबीन बनानेकी तैयारियां करने लगा। उसने महीनोंके कठोर परिश्रमके बाद दूरबीनके दो शीशे तैयार किए और उगे तांबेकी बनी हुई एक नलकीके सिरोंपर फिट कर दिया। यह थी संसारकी पहली सफल दूरबीन। इसमें

गैलीलियो

– सुरजीत

कई कई मील दूरकी वस्तुएं बड़ी दिखाई देती थीं और साफ और सीधी नजर आती थीं।

यह दूरबीन क्या ईजाद हुई कि इटलीमें भूचाल आ गया। हजारों लोग इस दूरबीनको देखनेके लिए टूट पड़े। लोग इसे जादूका खिलौना समझते थे और गैलीलियोके लिए उनके दिलमें आदरके बजाय भय पैदा होने लगा। गैलीलियोने कई प्राध्यापकों और बड़े बड़े आदमियोंकी फरमाइशपर कई दूरबीनें बनाकर दीं। वह स्वयं भी अपनी दूरबीनको और अधिक उत्तम बनानेका प्रयत्न करता रहा। अपने इन प्रयत्नोंमें वह बहुत सफल रहा और आखिर एक दिन उसने ऐसी दूरबीन बनाई, जो दूरकी चीजोंको बत्तीस गुना बड़ा करके दिखाती थी। उन दिनों चांद, सूरज और सितारोंके बारेमें लोगोंकी जानकारी बहुत गलत और अजीब थी। लोगोंका विचार था कि धरती एक स्थानपर ठहरी हुई है और सूरज धरतीकी चारों ओर घूमता है। चांद और सितारे किसी चमकदार धातुके छोटे-बड़े टुकड़े हैं, जिन्हें आकाशमें जड़ दिया गया है और आकाश-गंगा वास्तवमें एक रास्ता है, जिसपर केवल देवता ही चल सकते हैं। गैलीलियोने जब अपनी दूरबीनसे चांद, सितारों और सूरजको देखा, तो वह लोगोंके गलत ज्ञानपर हैरान हुआ। उसे तुरंत पता लग गया कि चांद धरतीके गिर्द घूमता है और धरती सूरजके गिर्द घूमती है। आकाश-गंगा देवताओंका रास्ता नहीं, बल्कि लाखों-करोड़ों सितारोंका पुंज है, जिसमें कई सितारे सूरजसे भी लाखों गुना बड़े हैं। ये सितारे धरतीसे बहुत दूर होनेके कारण चमकदार अणुओंके समान दिखाई देते हैं।

जब गैलीलियोने लोगोंके सामने इन नई बातोंको प्रकट किया, तो देश भरमें एक हंगामा उठ खड़ा हुआ। क्योंकि इन बातोंसे बड़े बड़े पादरियों, प्रोफेसरों और विद्वानोंके झूठकी पोल खुलती थी। ये सब लोग गैलीलियोके दुश्मन हो गए। इन्होंने गैलीलियोका इतना विरोध किया कि गैलीलियोको वीनस छोड़कर फ्लोरेंस चले जाना पड़ा, जहां उसकी पुत्री रहती थी।

फ्लोरेंसमें आकर भी गैलीलियोने अपने प्रयोग जारी रखे। इस बार उसने एक नया यंत्र तैयार किया जिसे खुर्दबीन या सूक्ष्मदर्शक यंत्र कहते हैं। यह यंत्र दूरबीनके ही सिद्धांतपर बनाया गया था। इसकी सहायतासे नजदीककी छोटी और सूक्ष्म चीजें बहुत बड़ी नजर आती थीं। इस यंत्रके शीशे इतने शक्तिशाली थे कि मनुष्यके बालको जब शीशोंसे देखा जाता, तो वह एक मोटी रस्सीके समान नजर आता था। यह यंत्र बादमें मनुष्यके बहुत काम आया और अब तक आ रहा है। इसकी सहायतासे पहले पहल डाक्टरोंने मनुष्यके रक्तमें उन छोटे छोटे अणुओंको देखा, जो रोगके कीटाणुओंका मुकाबला करते हैं।

गैलीलियोने सोचा कि "इन सभी आविष्कारोंको एक पुस्तकमें इकट्ठा कर देना चाहिए ताकि आने वाले लोग इससे लाभ उठा सकें। इस पुस्तकमें उसने चांद, सूरज, सितारों और धरतीके बारेमें अपने दृष्टिकोणको विस्तार और तर्कके साथ लिखा। इसका समाचार न जाने कैसे रोममें ईसाइयोंके धर्मगुरु पोप तक पहुंच गया। उसने गैलीलियोको रोममें बुलाया और उसपर मुकदमा चलाया। इस बार उसे मौतकी सजा मिलती, यदि रोमके लोग उसका पक्ष न लेते। बड़े बड़े लोगोंकी सिफारिशपर पोपने उसे मुक्त तो कर दिया, पर उसकी पुस्तकको जब्त कर लिया और गैलीलियोसे वचन ले लिया कि वह अपने विचार किसीको न सुनाए और न ही कोई पुस्तक लिखे। गैलीलियोने पोपके कहनेपर यह लिख दिया कि 'सूरज, चांद और धरतीके बारेमें मेरे विचार गलत थे और अब मैं यह मानता हूं कि धरती स्थिर है और सूरज इसके गिर्द घूम रहा है।'

अदालतसे जब वह बाहर आया, तो उसने अपने एक मित्रको कहा, "मैं बूढ़ा और बीमार हूं, इसलिए मैंने पोपके कहनेपर यह बात लिख दी है, पर सच्चाई अपनी जगह अटल है। इसे कोई नहीं बदल सकता। धरती सूरजके गिर्द घूम रही है और घूमती रहेगी।"

पादरियोंके अंधविश्वास और विरोधका परिणाम यह निकला कि गैलीलियो इस सदमेसे दिन-प्रतिदिन बीमार होता गया। आखिर वह ८ जनवरी १६४२ में ७८ वर्षकी आयुमें स्वर्ग सिधार गया। ●

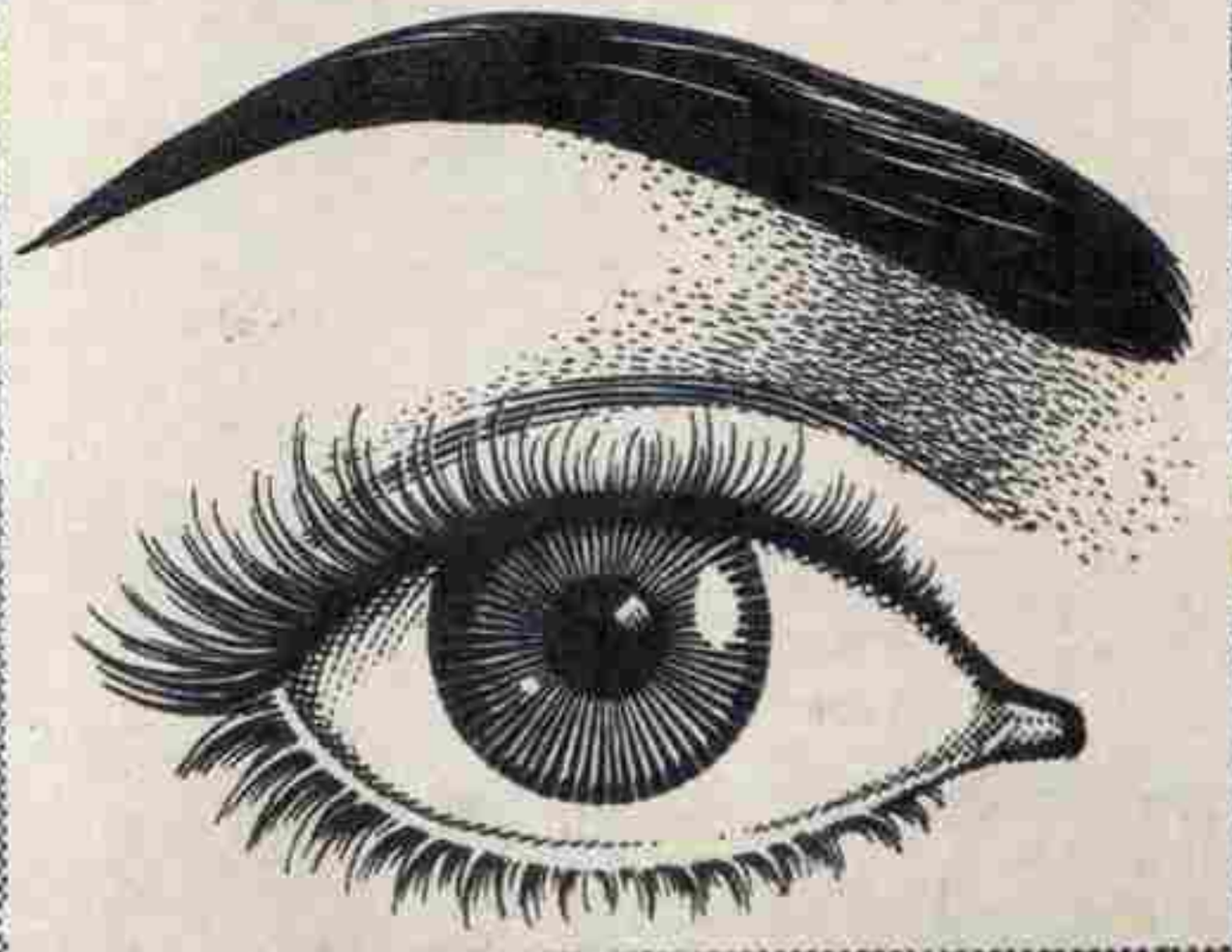

आंखों की सुरक्षा केलिये

भीमसेनी काजल

★ आंखों को नीरोग और सुन्दर बनाता है।

हर जगह मिलता है।

मुरारी ब्रदर्स, कमला नगर, देहली-7

GAYWAYS

वितरक : मेसर्स मनोचा ट्रेडिंग कं., अमृत मार्केट, सदर बाजार, दिल्ली-६

दो नन्ही-मुन्नी कहानियां | —हरपालसिंह 'पाल'

चुटकी भर राख

एक राजाके यहां दो ब्राह्मण रहते थे। उनमेंसे एक विद्वान् था तथा दूसरा मूर्ख । राजा विद्वान्का आदर मूर्खसे अधिक करता था। इसलिए मूर्ख मन ही मन कुढ़ता रहता था। जब यह बात राजाके कानों तक पहुंची, तो उसने मूर्खको बुलाया और उसे चुटकी भर राख देकर एक मित्र देशके राजाको दे आनेको कहा।

मूर्ख ब्राह्मण उस मित्र देशके राजाके हाथमें वह चुटकी भर राख रखकर बोला, "महाराज, हमारे राजाने यह आपके लिए भेजी है।"

राजाने पूछा, "यह राख कैसी है?"

मूर्ख ब्राह्मण उलझनमें पड़कर बोला, "महाराज, यह तो मुझे मालूम नहीं।

यह सुनकर मित्र देशके राजाने मूर्खको धक्के देकर निकाल दिया और अपने मंत्रीसे कहा, "मंत्री, राजाने जानबूझकर हमारा अपमान किया है। तुम शीघ्र सेना लेकर उसपर चढ़ाईकी तैयारियां करो।"

जब यह बात पहलेवाले राजाके पास पहुंची, तो उसने तुरंत विद्वान् ब्राह्मणको बुलाया और उसी तरह उसके हाथमें राखकी चुटकी देकर कहा कि उस राजाको दे आओ।

विद्वान् ब्राह्मणने एक चांदीका थाल मंगवाया। उसपर बहुमूल्य रूमाल बिछाकर उसे भांति भांतिके फूलोंसे सजाया। इसके पश्चात् बहुत सुंदर सोनेके एक पात्रमें उस राखको रखकर आदरके साथ मित्र देशके राजाके पास ले गया। पहले कुछ श्लोक पढ़कर उसने राखकी महिमाका बखान किया, फिर पात्र उठाकर राजाके पास रख दिया।

राजाने पूछा, "यह क्या है?"

विद्वान् ब्राह्मण बोला, "हमारे महाराजने एक बहुत बड़ा मंगल-यज्ञ किया है तथा यज्ञ-अवशेष आपके लिए भेजा है। आप इसे स्वीकार कीजिए।"

यज्ञका अवशेष जानकर राजाने उस पात्रको सिर नवाया और उसे पवित्र स्थानपर रखवा दिया। फिर उसने विद्वान् ब्राह्मणसे पूछा, "हमारे पास एक अन्य व्यक्ति भी तो यह लाया था।"

पंडित बोला, "राजन्, वह कोई मूर्ख होगा। हमारे महाराजने तो केवल मुझे ही भेजा है।"

पंडितकी बातोंसे राजा बहुत प्रभावित हुआ। उसने कहा, "अच्छा हुआ आप आ गए, नहीं तो हम आपके महाराजसे बहुत रुष्ट थे।"

इतना कहकर राजाने बहुत-सा धन देकर पंडितको विदा किया और राजाको यज्ञावशेष भेजनेके लिए धन्यवाद दिया।

अब पहलेवाले राजाने उस मूर्ख ब्राह्मणको बुलाकर कहा, "देखा, तुमने मित्र देशके राजाको हमारा विरोधी बना दिया था। इस पंडितने जाकर उसे प्रसन्न कर लिया है। हमारे पास राजाका पत्र आया है, जिसमें विद्वान् ब्राह्मणकी बहुत प्रशंसा की गई है।"

यह सुनकर मूर्ख ब्राह्मणने आंखें नीची कर लीं तथा बहुत लज्जित हुआ। ●

ताजा माल

एक विदूषक मछली खरीदनेके लिए एक दूकानपर गया। दूकानपर बहुत भीड़ थी। दूकानदारने विदूषकके मैले कपड़ोंको देखकर उसकी ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। विदूषकने उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करनेके लिए एक मछली उठाई और उसे पहले अपने मुंहके और फिर अपने कानके पास ले गया।

यह देखकर दूकानदारसे न रहा गया। वह अपना क्रोध प्रकट करते हुए बोला, "मूर्ख, तुझे इतना भी पता नहीं कि सूंघा नाकसे जाता है या कान-मुंहसे? वैसे सूंघनेकी जरूरत क्या है; मैं विश्वास दिलाता हूं कि यह माल बिलकुल ताजा है।"

विदूषक बोला, "मैंने सूंघा नहीं था। मैंने तो मछलीसे एक बात पूछी थी।"

"कौन-सी बात?" दूकानदारने पूछा।

"मैंने पूछा था," विदूषकने बताया, "क्या तुम्हें मेरे भाईका कुछ पता है, जो तीन-चार दिन पहले नदीमें डूब गया था।"

"फिर मछलीने क्या उत्तर दिया?" दूकानदारने व्यंग्यसे पूछा।

विदूषकने कहा, "यह कहती है कि मुझे नदीके ताजे समाचारोंका कोई ज्ञान नहीं, क्योंकि मुझे नदीसे निकले हुए दो सप्ताहसे भी अधिक समय हो चुका है!"

यह सुनकर आस-पास खड़े सारे व्यक्ति हंस पड़े। दूकानदार बहुत लज्जित हुआ और विदूषक बिना मछली खरीदे ही वापस चला गया। ●

कहानी

नन्ही चिड़िया और ज्ञानी सांप

- राजऋषि

एक चिड़िया गर्वसे आकाशमें उड़ रही थी। वह बहुत खुश थी और गा गाकर अपनी खुशी जाहिर कर रही थी। आकाशमें ऊंचे ऊंचे उड़कर संसारकी सभी वस्तुएं वह देख सकती थी। जब उड़ते उड़ते वह थक जाती, तो एक छोटेसे टीले-पर आकर बैठ जाती।

घासमें रहने वाले एक सांपने उसके गाने-की आवाज सुनी। वह अपने बिलमेंसे बाहर निकल आया।

"तुम बेशक आकाशमें अच्छी तरह देख सकती हो, पर मैं दावेके साथ कह सकता हूं कि मित्र और दुश्मनकी पहचान तुम आकाशमें उड़कर नहीं, बल्कि जमीनपर रहकर ही कर सकती हो," सांपने चिड़ियासे कहा।

चिड़िया हंसकर बोली, "इसमें क्या शक है, पर मैं यह जरूर जानती हूं कि मैं जमीनपर रहूंगी, तो तुम मुझे जरूर डस लोगे।"

सांप बोला, "इससे यह सिद्ध होता है कि तुम जमीनपर रहने वाले जीव-जंतुओंके बारेमें कुछ भी नहीं जानतीं। अरे, मैं जहरीला सांप नहीं हूं। जहरवाले सांपके लंबे लंबे दांत होते हैं, पर मेरे मुंहमें ऐसे दांत नहीं हैं। मैं तो छोटा-सा घासका सांप हूं। बड़े सांपोंसे मैं भी डरता हूं!"

चिड़िया कुछ देर सोचती रही। फिर सांपपर विश्वास कर-के वह टेकरीसे नीचे उतर आई।

"जरा यह तो बताओ कि अभी कौन हमारे पाससे गुजरा था? वह कैसे चलता था?" सांपने प्रश्न किया।

घासमें सरसराहट हुई, तो चिड़िया चौंक गई। पास ही खड़े लंबी लंबी टांगोंवाले एक जलपक्षीको देखकर वह डरसे बेहोश-सी होने लगी। "मैं इसे नहीं पहचानती," वह बोली।

सांपने सिर उठाकर कहा, "तो तुम उसे नहीं जानतीं! लेकिन अगर मुझे दो लंबी लंबी टांगों और तीन बड़ी और एक छोटी उंगली वाला पंजा नजर आए, तो मैं समझ लेता हूं कि यह मेरा दोस्त सारस है।"

चिड़ियाने निश्चित होकर कहा, "तो यह तालाब या झीलके किनारे रहनेवाला सारस है। इसकी सफेद पीठ तो मैं अच्छी तरह पहचानती हूं। हां, इसकी टांगों और पंजोंपर मैंने कभी ध्यान नहीं दिया," चिड़िया बोली।

फिर सांपने धीरेसे चिड़ियाके कानमें कहा, "देखो, कोई और भी यहांसे गुजर रहा है।"

घासमें फिर सरसराहट हुई। चिड़ियाने देखा कि दो टांगें बेढंगी चालसे चल रही हैं। देखने-में ऐसी लगती थीं मानो वे किसी तेल सने कपड़े से ढकी हुई हों। "भला, यह कौन है?" चिड़ियाने आश्चर्यसे कहा, "मैं तो इसे नहीं जानती।"

"यह जानना बहुत सरल है," सांपने कहा। "ये पांव जो भूमिपर देखनेसे बड़े भद्दे मालूम देते हैं पानीमें चप्पूका काम देते हैं। यह मुर्गाबी है और अभी अभी झीलसे आ रही है।"

अब चिड़िया मुर्गाबीको अच्छी तरह पहचान गई। वह आकाशमें उड़ते हुए भी उसे पहचान जाएगी। झीलके पानीमें से झांकते हुए उसके चम-कीले, लाल-बादामी सिर और मुड़ी हुई गर्दनको उसने कई बार देखा था, पर यह कल्पना कभी नहीं की थी कि मुर्गाबीके पांव इतने भद्दे होते हैं।

ठीक उसी समय काले परोंमें लिपटा और

काले बालोंसे ढका एक गोला-सा पेड़से नीचे गिरा। धीरे धीरे वह गोला अपनी कोहनीके सहारे रेंगने भी लगा। चिड़िया उसे देखकर बड़ी हैरान हुई। पहले सारसकी लंबी टांगें और मुर्गाबीके पंजे देखकर चिड़ियाको आश्चर्य हुआ था। अब इस काले परोंवाले गोलेको चलते देखकर उसे उत्सुकता हुई कि यह कौन-सा अजीब जानवर है। उसने उसे निकटसे देखा, तो

मालूम हुआ कि वह गोला कोहनीके बल नहीं, बल्कि बंद किए हुए परोंके ही सहारे चल रहा है। फिर गोला खुलने लगा। उसके अंदरसे छोटे किंतु नुकीले पंजे बाहर निकले, फिर एक पूंछ भी। उन पंजों और पंखोंके बीच छोटा-सा धड़ भी था। "कितना विचित्र जीव है!" चिड़िया बोली। "इसके पर भी हैं, फिर भी मैं नहीं कह सकती कि यह कौन है!"

"अच्छा!" सांपने उसे चिढ़ाते हुए कहा। "तू तो शेखी बघारती थी कि आकाशमें उड़कर सारी दुनियाके बारेमें जानती है। पर अब मुझे मालूम हुआ कि तू इस चमगादड़के बारेमें भी नहीं जानती। तेरा ज्ञान वास्तवमें बहुत कम है।"

चमगादड़ पासके टीलेपर चढ़ गया। फिर उसने अपने पंख फैलाए और एक पेड़की तरफ उड़ गया।

फिर नजर आईं चार भयानक टांगें। वे छोटी और भद्दी थीं। उन पैरोंमें छोटे छोटे पंजे भी थे। आगेके पैरोंके पंजे जरा फैले हुए थे। चिड़िया उन टांगोंको देखकर डर गई। पर सांपने कहा, "डरो मत। अगर टांगें बालोंसे ढकी हुई हों, तो मैं जान लेता हूं कि यह कोई पशु है। इस पशुकी अगली टांगें वास्तवमें चलने-फिरनेके लिए नहीं, बल्कि खोदनेके लिए बनी हैं। यह छछूंदर है। देखना, अभी यह जमीनमें घुस जाएगी।"

छछूंदरने सचमुच जल्दी जल्दी अगले पंजोंसे जमीन खोदी और नजरोंसे ओझल हो गई।

अभी चिड़िया संभल भी न पाई थी कि उसके सामने चार हाथोंवाला एक और जीव दौड़ता हुआ नजर आया। घबराकर चिड़ियाने पूछा, "यह कौन-सा नट है? इसे चार हाथोंकी भला क्या जरूरत पड़ी?"

"यह नट नहीं, गिलहरी है!" सांप बोला, "तुम्हें तो जमीनके प्राणियोंके बारेमें कुछ भी पता नहीं, इसके चार हाथ इसे उछलने-कूदने और पेड़पर चढ़नेमें सहायता देते हैं। इन्हीं से यह बादाम और अखरोट खाया करती है।"

"यह गिलहरी है!" चिड़ियाने असमंजससे कहा। "तुम जीत गए, भाई सांप।" सहसा चिड़िया फुदककर टीलेपर जा बैठी और फिर बोली, "मैं जमीनपर रहने वाले जीवोंके बारेमें कुछ भी नहीं जानती। लेकिन क्या तुम आकाशमें वह काला धब्बा देख रहे हो?"

"हां," सांपने जवाब दिया।

"उसकी टांगें कैसी हैं?" चिड़ियाने पूछा।

सांपने झल्लाकर कहा, "जब वह इतने ऊपर है, तो मैं उसकी टांगें कैसे बता सकता हूं?"

इसपर चिड़ियाने हंसकर कहा, "तो सुनो, यह एक बड़ी चील है। इसके पंजे बड़े तेज हैं। इसकी आंखें भी बड़ी तेज होती हैं। अगर तुमने अभी अपने आपको छिपाया नहीं, तो यह झपटकर तुम्हें आकाशमें ले उड़ेगी," कहकर चिड़िया आकाशमें उड़ गई।

पर सांप अभी संभल भी नहीं पाया था कि चीलने तेजीसे झपट्टा मारा और उसे पंजोंमें दबाकर आकाशमें उड़ चली। इस प्रकार शेखी बघारने वाले उस ज्ञानी सांपका अंत हो गया।

(एक रूसी लोककथा)

kissekahani.com

प्रतिक्रियाका सिलसिला

रेल के डिब्बे में खतरे की जंजीर का बहुत महत्व है। इसे बिना सोचे-विचारे खींचने से बहुत-सी रेल गाड़ियां समय पर नहीं पहुंच सकेंगी और पूरे टाइम-टेबल में गड़बड़ी पैदा हो सकती है।

खतरे की जंजीर तभी खींचिये
... जब
सचमुच खतरा हो।

मध्य रेलवे

झूठे ख़तरे का

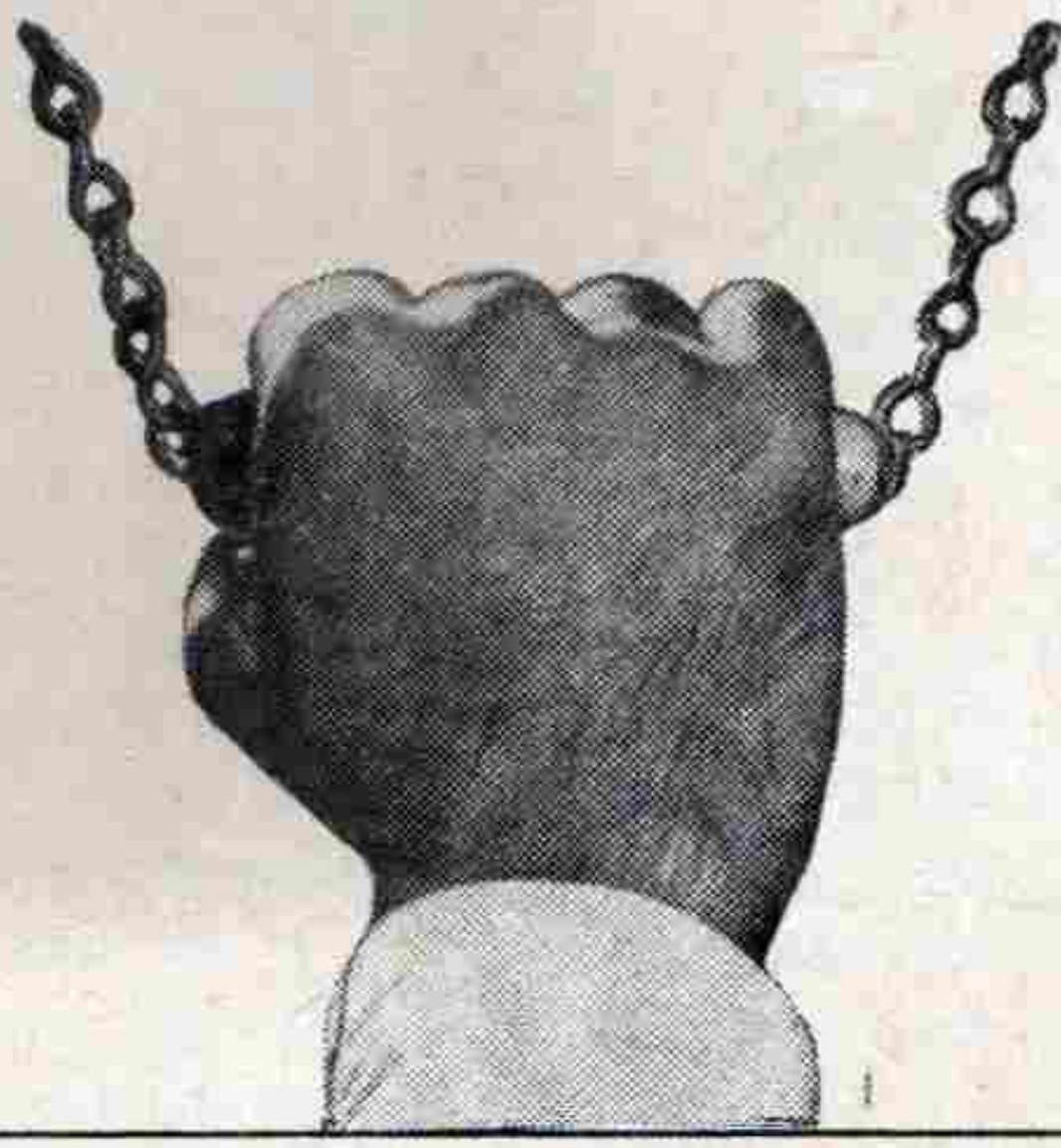

परिणाम है देरी।

एक और एक ग्यारह (पृष्ठ १९ से आगे)

जोरकी आवाज सुनाई दीं। मुन्नाने बालकनी-पर आकर देखा—सेवलमके पिता सेवलमकी बांह पकड़े खड़े थे और उन्होंने चीख चीखकर बिल्डिगके सब लोग जमा कर लिये थे। वह शिकायत कर रहे थे कि बिल्डिगमें वह अकेले मद्रासी हैं इसलिए उनके साथ कोई अच्छा बर्ताव नहीं करता। सेवलमको राजूने इतना मारा था कि उसके खून बहने लगा था और अब वह यह मामला पुलिस तक ले जानेकी तैयारी कर रहे थे। जोशीजी उन्हें समझाकर उनका गुस्सा शांत करनेकी कोशिश कर रहे थे।

जोशीजी कह रहे थे —"आपके मद्रासी होनेसे कोई अंतर नहीं पड़ता; शतानी तो सेवलम भी करता है और राजू भी। और फिर आप यह क्यों सोचते हैं कि आप मद्रासी हैं और दूसरोंसे अलग हैं? क्या हम सब भारतीय नहीं हैं? बड़े खेदकी बात है कि अभी तो हमारे उस नेताको मरे पूरा हफ्ता भी नहीं हुआ, जिसने संसारमें शांति कायम रखनेके लिए अपनी जान दे दी और हम यहां आपसमें छोटी-सी बातके पीछे लड़ रहे हैं कि आप मद्रासी हैं, मैं बंगाली हूं और वह पंजाबी है। कितने दुःखकी बात है।"

तभी बेलू हांफता हुआ आया और मुन्नाकी बांह पकड़कर एक कोनेमें ले गया।

"यह जो अपना राजू है ना, उसने. . . उसने ...सेवलमके पिताकी गाड़ीका ब्रेक निकाल दिया। वह थोड़ी देरमें मंदिर जाने वाले हैं। गाड़ी एक बार चल दी, तो फिर रुकेगी नहीं।"

पर, अब मुन्ना बेलूकी बात नहीं सुन रहा था। वह सोच रहा था कि वह जाकर यह बात सेवलमके पिताको बता दे। ऐसा न हो कि वह गाड़ी स्टार्ट कर दें और दुर्घटना हो जाए। बस, बेलूको वहीं छोड़ कर मुन्ना जल्दी जल्दी उतरकर नीचे आया और कंपाउंडमें आते ही उसने देखा कि सेवलमके पिता गैरेजसे गाड़ी स्टार्ट कर चुके हैं।

"चाचाजी, गाड़ी मत चलाइए. . .गाड़ी मत चलाइए!" चिल्लाता हुआ मुन्ना गैरेज-की ओर दौड़ा। पर गाड़ी चल चुकी थी। तभी मुन्नाकी नजर गेटकी ओर गई, जहां हाथ गाड़ी-में राजूकी छोटी बहन अकेली बैठी थी। आया बच्चीको अकेला छोड़कर जाने कहां चली गई थी। मुन्नाने तेजीसे दौड़कर हाथके धक्केसे हाथ-गाड़ीको आगे ठेल दिया। लेकिन देखते देखते गैरेजसे निकली गाड़ी गेटके खंभेसे टकरा गई और मुन्ना बुरी तरह घायल हो गया।

●

अस्पतालके बरामदेमें मुन्नाका हाल जाननेके लिए, छोटे-बड़े सब बैठे इंतजार कर रहे थे, पर मुन्ना अब नहीं था। यह खबर पाते ही सबकी आंखोंसे आंसुओंकी धार बहने लगी। सेवलम और राजूकी पलकें बार बार एक दूसरेकी ओर उठ जातीं—उनकी नजरोंमें एक खामोश गुनाह था; जैसे वे एक दूसरेके सामने इस बातकोस्वीकार कर रहे हों कि यह सब उनके कारण हुआ है। मुन्नाकी जान लेनेके गुनाहगार वे दोनों हैं।

●

गीताने जब सुना कि बिल्डिगके सब लोगों-ने मिलकर २६ जनवरीका प्रोग्राम स्थगित कर दिया है, तो वह आंखें पोछकर शंकरके यहां पहुंची।

"ऐसा नहीं होगा, शंकर भाई, यह प्रोग्राम जरूर होगा। मुन्नाने इसके लिए कितनी तैयारी की थी। आप सब बच्चोंको बुलाकर रिहर्सल करवाइए। इससे मुन्नाकी आत्माको शांति मिलेगी।"

सभीको उसकी बात माननी पड़ी। कंपाउंड-में स्टेज सजाया गया। इसमें सेवलम और राजूने बड़ी मेहनत की। स्टेजपर प्रधान मंत्री शास्त्रीके चित्रके बराबरमें मुन्नाका चित्र था।

रात गहरे सन्नाटेमें एक ओर सिसकियां गूंज रही थीं और इन सिसकियोंमें डूबे हुए सेवलम और राजूके स्वर सुनाई दे रहे थे —"तुमने जब कहा था, तब हमने हाथ नहीं मिलाए, पर देखो, अब हम हाथ मिला रहे हैं और कसम खाते हैं कि अब हम कभी नहीं लड़ेंगे।"

और फिर अंधेरेमें खामोश खड़ी गीताने महसूस किया कि आंसुओंकी धारसे उसके पैर भीग चुके हैं। उसने झुककर उन दोनोंको उठाया और अपनी बांहोंमें ले लिया। ●

खेल-कूद

टेबिल टेनिस की कहानी

पराग के पिछले अंकोंमें तुम्हें क्रिकेट, हाकी, फुटबाल और लान टेनिसके खेलोंकी जानकारी मिल चुकी है। लो, अब टेबिल टेनिसकी पहली कहानी पढ़ो।

(१)

टेनिसका एक खेल ऐसा भी है, जो मैदानके स्थानपर मेजपर खेला जाता है। इसी लिए उसे 'टेबिल टेनिस' कहा जाता है।

पिछली शताब्दीमें यह खेल 'पिंगपांग' के नामसे विख्यात था। कहीं कहीं इसे 'गोस्सिमा' भी कहा जाता था। कुछ लोगोंका कहना था कि इस खेलका जन्म इंग्लैण्डके कुछ विद्यार्थियोंकी एक 'प्रेरणा' के कारण हुआ। एक मत यह भी है कि भारतमें रहने वाले कुछ अंग्रेज अधिकारियोंने इसे आरंभ किया था। जो भी हो, इतना तो सच है कि १९०२ के आसपास यह खेल 'पिंगपांग' के नामसे फ्रांस, अमरीका और इंग्लैण्डमें काफी विख्यात था। इसके बाद करीब २० वर्षों तक यह खेल अप्रचलित रहा। दूसरे महायुद्धके बाद इसे 'टेबिल टेनिस' के नामसे पुकारा जाने लगा और जिन देशोंमें यह खेला जाता था, उनकी टेबिल टेनिस एसोसियेशनोंकी देखरेखमें इसे खेला जाने लगा।

हरिमोहन

बहुत जल्दी ही इस खेलने लोकप्रियता प्राप्त कर ली और ४० से अधिक देशोंके खिलाड़ी इसकी प्रतियोगिताओंमें भाग लेने लगे। अंतरराष्ट्रीय टेबिल टेनिस प्रतियोगिताओंका संचालन इंटरनेशनल टेबिल टेनिस फेडरेशन करती है।

विश्व टेबिल टेनिस प्रतियोगितामें विजयी दलोंके लिए दो बड़े कप होते हैं—पुरुषोंके लिए स्वेथलिंग कप और महिलाओंके लिए कोरबिलन कप। आरंभमें इंग्लैण्ड, रूमानिया, हंगरी और जैकोस्लोवाकियाकी टीमोंने स्वेथलिंग कप जीते, पर १९५४ में पहली बार एक एशियाई देश-जापानको इसे जीतनेका श्रेय मिला। जापानने यह कप १९५९ तक लगातार जीता। लेकिन १९५९में पेकिंगमें हुई २६ वीं विश्व टेबिल टेनिस प्रतियोगितामें चीनने

टेबिल टेनिस संबंधी सामान्य ज्ञान

सवाल : आजकल टेबिल टेनिसमें कौनसा देश सबसे ज्यादा रुचि लेता है?

जवाब : चीन। वहां इस खेलके ५०,०००,०० रजिस्टर्ड खिलाड़ी हैं।

सवाल : अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओंमें सबसे पहले नाम कमाने वाली भारतीय महिला कौन थी?

जवाब : गुल नासिकवाला। उन्हें सिंगापुर एशियाई प्रतियोगितामें तिहरी सफलता मिली थी।

सवाल : अंतमें कामयाबी पानेके लिए शुरूमें किस खेल-शैलीको अपनाना ठीक है?

जवाब : शुरूमें धीमा और बचावका खेल खेलना ज्यादा ठीक रहेगा। बादमें विरोधी खिलाड़ीके खेलसे परिचित होकर अपने प्रिय स्ट्रोक खेलना शुरू कर सकते हो।

सवाल : खेलमें सफलता पानेके लिए स्वास्थ्य और योग्यताके अलावा अन्य किन गुणोंकी आवश्यकता है?

जवाब : आत्मविश्वास और पूरे ध्यानकी। खेलते समय तुम्हारे मनमें यह भावना होनी चाहिए कि खेलमें तुम ही जीतोगे, तुम्हारा विरोधी नहीं। यह भावना खेलके अंत तक रहनी चाहिए। खेलते समय तुम्हारा ध्यान केवल गेंद और दूसरे खिलाड़ीकी ओर ही रहना चाहिए।

सवाल : एकदम शुरूमें इस खेलका रूप क्या था?

जवाब : १८८१ में रैकेटके स्थानपर सिगारनुमा डिब्बों, गेंदकी जगह बोतलोंके कार्क और नेटकी जगह किताबोंका प्रयोग होता था।

जापानको हराकर इसपर अपना अधिकार कर लिया। फिर भी कौरबिलन कप जापानके पास ही रहा। चीनमें आजकल लाखों खिलाड़ी टेबिल टेनिस खेलते हैं।

भारतमें यूं यह खेल काफी लोकप्रिय है, पर हमारा देश अभी तक इस खेलमें अन्य देशोंसे काफी पीछे है। इसका एक कारण यह है कि हमारे खिलाड़ी अभी तक नए प्रकारके रबर रैकेटोंसे खेलनेके अभ्यस्त नहीं हैं।

भारतक सुधीर ठाकरसी पहले भारतीय खिलाड़ी हैं, जिन्हें अंतरराष्ट्रीय टेबिल टेनिस फेडरेशनने हालमें अधिकृत रूपसे विश्वके चुने हुए और अग्रणी खिलाड़ियोंमेंसे एक स्वीकार किया है। हमारे अन्य प्रख्यात खिलाड़ी हैं— जयंत वोरा, पप्पू हलदन्कर, जे. एम. बनर्जी, गौतम दीवान, दिलीप सम्पत, रतीश चाचड़, एस. वी. रंगराज, के. नागराज और दोशी (ब्वायज़ सिंगिल्सका विजेता)। पुराने पुरुष खिलाड़ियोंमें एस. आर. ईरानी, चन्द्राना, सोमैया, थिरूवेंगडम, के. जयंत, कुमार घोष, यतीन व्यास, कूपर, कापड़िया आदिके नाम मुख्य हैं।

महिला खिलाड़ियोंमें मीना परान्दे, उषा सुंदरराज, जाय डिसूजा, नीला कुलकर्णी, इंदिरा आयंगर, अल्का ठाकुर, रेशेल जान, गुल नासिकवाला, सतारावाला, सईद सुल्ताना, प्रिस्का नन्स, बन्नू कामा, श्राफ, डिसूजा, फिलिस डिलिमा आदिके नाम गिनाए जा सकते हैं।

२५ वर्षीय फारुख खोदाईजीको टेबिल टेनिसमें भारतकी नई आशा कहा जा सकता है। उनका नाम तब रोशन हुआ था, जब उन्होंने लगातार चार साल तक राष्ट्रीय प्रजेता गौतम दीवानको हराया था।

टेबिल टेनिसमें प्रवीणता प्राप्त करनेके लिए उत्तम स्वास्थ्य पहली आवश्यकता है। अधिकांश प्रतियोगिताएं एक ही दिनमें समाप्त हो जाती हैं, और एक ही दिनमें एक खिलाड़ीको सिंगल्स, डबल्स और मिक्स्ड डबल्स प्रतियोगिताओंमें भाग लेना पड़ता है। इसलिए खिलाड़ीमें जीवट और काफी सहन-शक्तिका होना बहुत जरूरी है।

अगले अंकमें हम तुम्हें बताएंगे कि इस खेलको खेलनेके नियम क्या हैं और इसमें प्रवीणता कैसे प्राप्तकी जा सकती है। (क्रमशः)

अक्षर ये ढाई ही...

घर भर की बातों की
बीमारी भारी है :
पापाजी फोन लिये
गप्पें लड़ाते हैं —
'हलो हलो', 'बस कल ही',
'ओ. के.' या 'बहुत खूब!'

दीदी और भैया में
महाभारत छिड़ता है—
"सोनजुही गुड़िया को
मूंछें लगाई क्यों?"
"मेरी किताबों पर
दस्तखत बनाए क्यों?"

मम्मी तब कान ऐंठ
घुड़कियां सुनाती हैं —
"चटपट अब होम-वर्क
करनेमें भिड़ जाओ।"
दिन दिन भर रेडियो
खूब बकबक लगाता है;
गाने भी, खबरें भी, भाषण भी;
भानुमती का-सा पिटारा है!

आया 'जी, मांजी' कह
हुकुम बजाती है,
मुझको कहानियां
गढ़ गढ़ सुनाती है।

एक मैं हूं,
'अम्मां' भर कह पाता;
अक्षर ये ढाई ही
बड़े करामाती हैं।
दूध भी, लोरी भी,
थपकी भी, निंदिया भी —
सब कुछ दिला देते हैं!

—विश्वबंधु

अब तक .....
नाश्ते के लिये ऐसा आहार उपलब्ध नहीं था

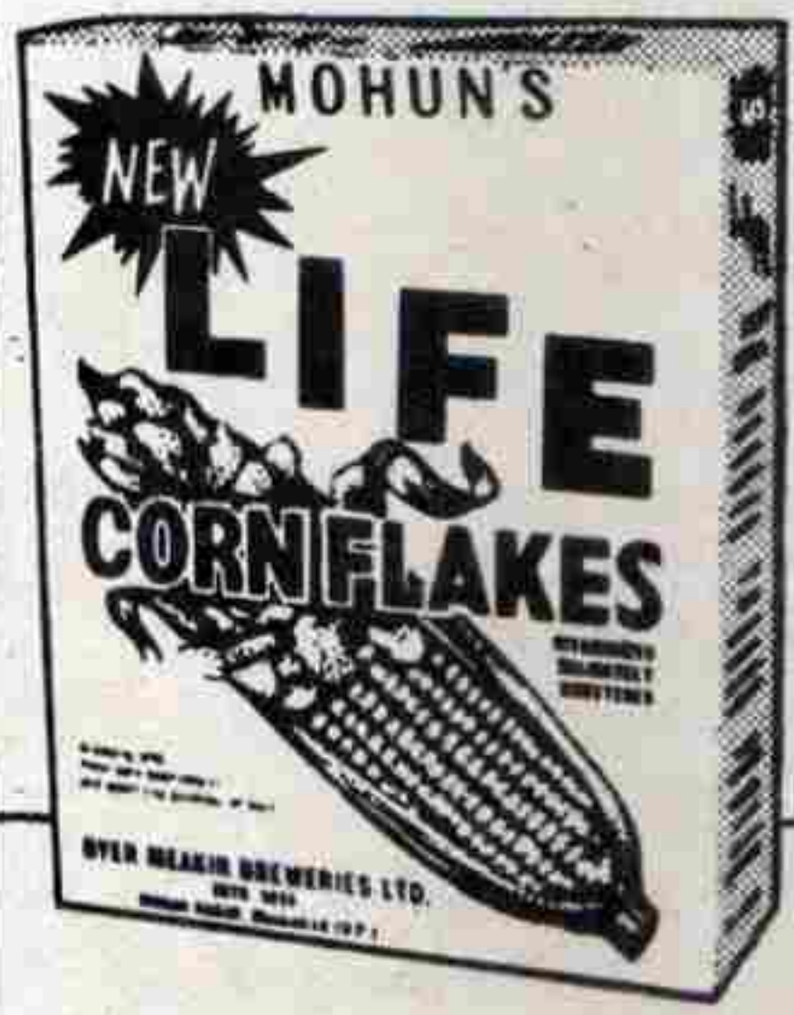

मोहन्ज़
न्यू
लाइफ
कार्न फ़्लेक्स

मोहन्ज़
व्हाइट ओट्स

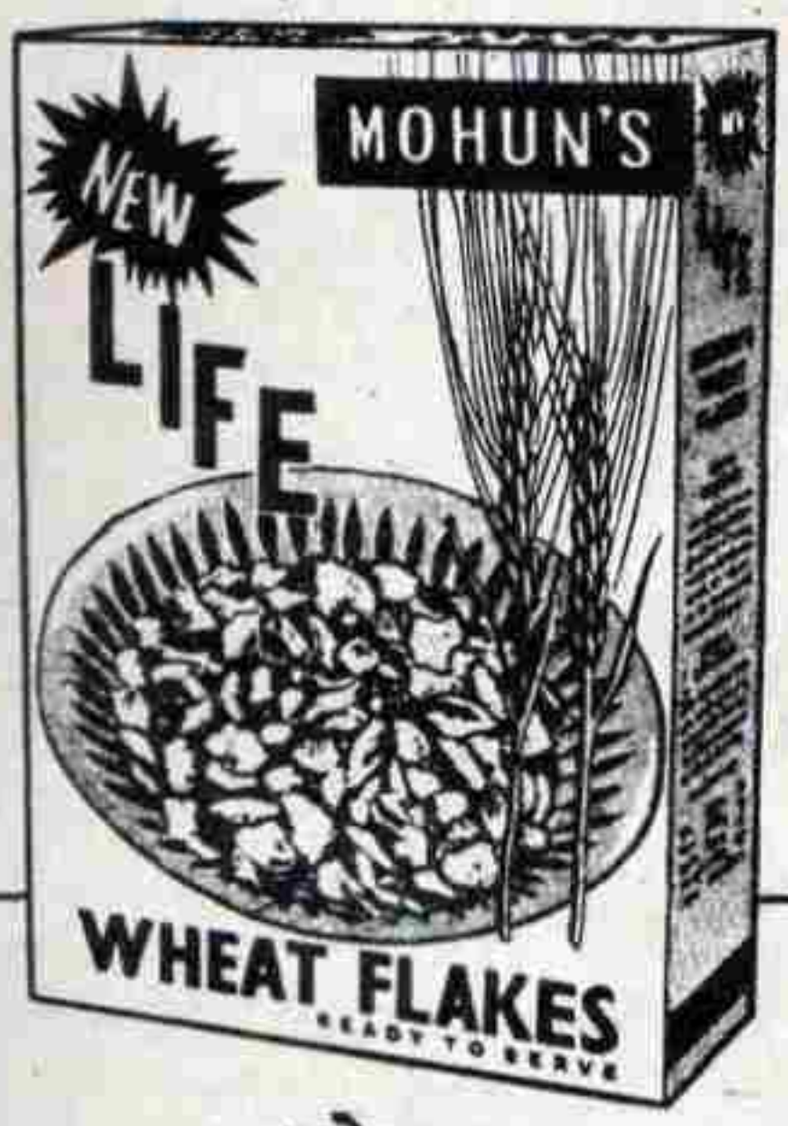

मोहन्ज़
न्यू
लाइफ
व्हीट फ़्लेक्स

मोहन्ज़
पर्ल बार्ले

११० वर्ष से अधिक का अनुभव विश्वास की गारन्टी है

डायर मीकिन ब्रुअरीज़ लि० स्थापित १८५५

मोहन नगर, (गाज़ियाबाद) यू० पी०

सोलन ब्रुअरी — लखनऊ डिस्टिलरी — कसौली डिस्टिलरी

DMB-NP-759

—अरुणकुमार

नाड़ी चलती देखो

कुछ चीजें बहुत मामूली होती हैं, लेकिन समय-पर पास रहनेसे बहुत मजेदार खेल दिखाती हैं। जिस पिनसे तुम अपने ड्राइंग बोर्डपर कागज लगाते हो, उसीकी सहायतासे अपनी नाड़ी भी चलती देख सकते हो—और दोस्तोंको भी उनकी नाड़ीकी गति दिखा सकते हो।

एक ड्राइंग पिन लो और उसे माचिसकी एक सींकके पीछे इस तरह फंसाओ, जैसा कि नीचेके चित्र–२ में दिखाया गया है। अपने किसी भी हाथके अंगूठेकी तरफ, कलाईके ऊपर, अपनी नब्ज या नाड़ी टटोलो और नीचे दिए हुए चित्र–३ की तरह रखो। ध्यान रखो आसपास-की हवा तेजीसे चलती हुई न हो। ऊपर बिजलीका पंखा भी न चल रहा हो। यदि तुमने ड्राइंग पिनको ठीक नाड़ीके ऊपर रखा है, तो तुम्हें माचिसकी सींक रह रहकर झटके-के साथ हिलती दिखाई देगी। अब हाथ-घड़ी-की सेकिंडवाली सूई जब बारहपर आ जाए, तो माचिसकी सींकके झटके गिनो। ठीक एक मिनिटके बाद गिनना बंद कर दो। जहां तक तुमने गिना था, बस वही संख्या प्रति मिनिट तुम्हारी नाड़ीकी गति है।

जब तुम्हारे मित्र इस प्रकार अपनी नाड़ी हिलती हुई देखेंगे, तो तुम्हारे खेलकी बहुत प्रशंसा करेंगे। उन्हें यह बताना न भूलना कि तुमने यह तरकीब 'पराग' में पढ़ी थी।

चित्र–१

चित्र–२

चित्र–३

बादू का पंखा

सामनेके पृष्ठपर दिया हुआ चौकोर चित्र काट लो और इसकी पीठपर इसी नापका कोई भी रंगीन कागज लेई या गोंदसे चिपकाकर भारी पुस्तकोंके बीच दबाकर रातभर सूखने दो। दूसरे दिन कैंचीसे हाशिया साफ कर दो। अब इस पृष्ठको नीचे दी हुई आकृति–१ की तरह आगे-पीछे मोड़ते हुए 'क्रीज' बनाते चले जाओ। जब सारा चित्र मुड़ जाए, तो पीछेका लगभग एक इंच भाग इकट्ठा करके मरोड़ दो और उसे धागेसे बांध दो।

आकृतियां–२ व ३ की तरह पंखा तुम्हारे दोनों तरफ खड़े मित्रोंको अलग अलग रंगका दिखाई देगा तथा तुम्हारे सामने खड़े मित्रों को किसी तीसरे ही रंगका दिखाई पड़ेगा। करके देखो। ●

आकृति–१

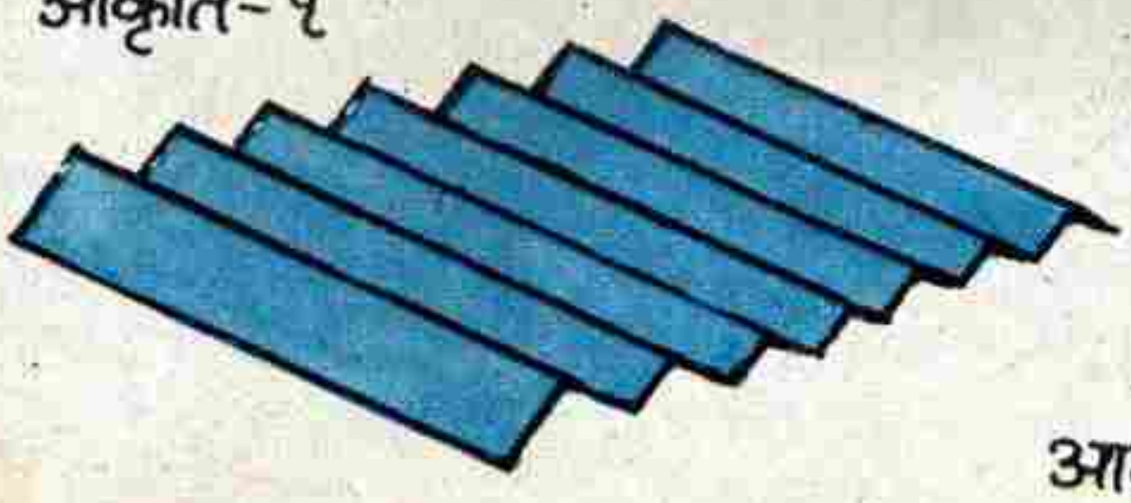

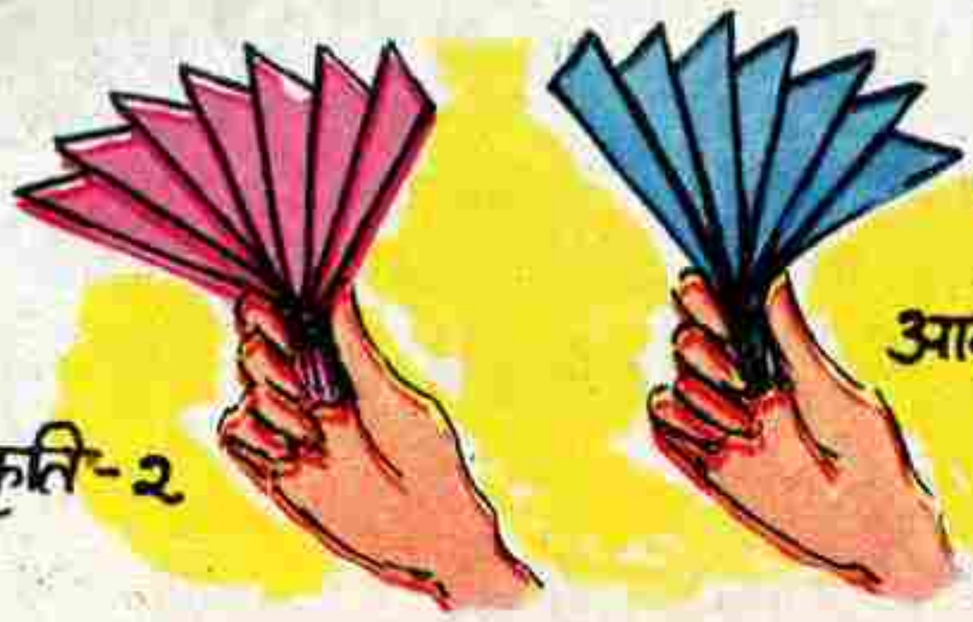

आकृति–२

आकृति–३

kissekahani.com

समाचारों और विचारों के सार के लिए – राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधि से साक्षातकार के लिये

दिनमान

सर्वोत्तम हिन्दी समाचार साप्ताहिक

हिन्दी का एकमात्र ऐसा साप्ताहिक जिसमें देश - विदेश की राजनैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक हलचल की पूरी जानकारी मिलती है। समाचारों और विचारों का सटीक सार जाने - माने लेखकों और पत्रकारों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

दिनमान साप्ताहिक हर रुचि के व्यक्ति के लिए, परिवार के हर सदस्य के लिए।

मूल्य ५० पैसे

टाइम्स आफ़ इन्डिया
प्रकाशन
बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग,
नयी दिल्ली

रामूकी बहादुरी

(पृष्ठ ३९ से आगे)

आंखें भी बरफ हो गई थीं। सात दिन तक जब उन्हें गरमी दिखाई गई, तब कहीं बरफ गलने लगी थी।"

इतना सुनकर फिर किसीकी हिम्मत हस्तक्षेप करनेकी न हुई। सबने कहा, "उसके बाद क्या हुआ?"

"उसके बाद भाई साहब हिमालयकी चोटीके करीब पहुंच ही चुके थे। सिर्फ पौने ग्यारह फीट दूरीपर चोटी रह गई थी। भाई साहब खुशीके मारे बेहाल थे। उन्हें [illegible] आनंदमें वह हमेशा भरत-नाट्यम् नृत्य करने लगते थे। सो, वहां भी उन्होंने अपना नृत्य आरंभ कर दिया। नाचते नाचते वह बरफमें धंस गए। सिर्फ सिरके बाल नजर आ रहे थे। तेनसिंह और हिलारी उस समय बैठे बैठे कमरमें तेल-मालिश कर रहे थे, यह दृश्य देखकर उनके होश उड़ गए। उन्होंने सोचा, हो न हो यह हिम-मानव है और मनुष्योंकी गंध पाकर आ रहा है। डरके मारे उनके प्राण सूख गए और वे वहांसे भाग खड़े हुए। कुछ क्षणोंके बाद जब वे रुके, तो उन्हें ख्याल आया कि वे हिमालयकी चोटीपर भागते हुए आ पहुंचे हैं। भाई साहबने नाचकर अपने हाथों अपना सर्वनाश किया, अब उसके लिए किसीको क्या दोष देना।" इतना कहकर रामूने दुःखसे गर्दन झुका ली।

सभी लड़के चुपचाप बैठे सुन रहे थे। किसीने चूं तक न की। उसके दूसरे दिन उस नगरके सभी लड़के मिले। सबकी सभा हुई। रामू वहां न था।

दीनू बोला, "इसे हम नहीं सह सकते। रामूकी बड़ी बड़ी बातें अब बर्दाश्तके बाहर हैं। हमें मिलकर उसे सबक सिखलाना चाहिए।"

वहां उपस्थित सभी लड़के यही चाहते थे। बहुत सोच-विचारके बाद उन्होंने एक उपाय खोज निकाला।

सवेरे सवेरे रामू घूमने जाया करता था। उस दिन सबने निश्चित किया कि दीनू भालूका वेश धारण करेगा और रामूके बगीचेमें जाकर छिप जाएगा। सुबह जब रामू दरवाजा खोलेगा, तो सामने ही भालूको देखकर कांपने लगेगा। तब सभी लड़के आकर उसे चिढ़ाने लगेंगे—'रामू बहादुरकी जय हो!'

लेकिन लड़कोंका यह उपाय छिपा न रह सका, चूंकि संटू इस बीच रामूका पक्का दोस्त बन गया था। उसीने जाकर उससे सारी बातें बता दीं।

सब कुछ सुनकर रामू बोला, "ठीक है। दीनूको भालू बनकर आने दो, उसे ऐसा मजा चखाऊंगा कि जिंदगी भर याद रखेगा।"

दूसरे दिन सुबह रामू दरवाजा खोलकर बाहर निकला—आज उसने हाथमें एक बेंतकी छड़ी भी ले रखी थी। तभी उसकी नजर एक पेड़के नीचे गई, जहां भालू खड़ा था। रामूको विश्वास हो गया कि वह दीनू ही है, जो भालूका वेश बनाकर उसे डराने आया है।

बस, रामू चुपके चुपके चलकर भालूके पीछे जा कर उसे सिर घुमानेका अवसर दिए बिना उसपर चढ़ बैठा।

"अब बोल, बदमाश, इतना साहस कि तू मुझे डराने आया है? तुझे आज खतम करके ही छोड़ूंगा। और तेरी खालकी डुगडुगी बनाकर बजाऊंगा।" इतना कहकर रामूने आव देखा न ताव तड़ तड़ करके उसके ऊपर छड़ी बरसाने लगा। पहले तो भालूने भय दिखलानेकी चेष्टा की, पर अंतमें चीखता हुआ भाग खड़ा हुआ। लेकिन रामू आज उसे छोड़ने वाला नहीं था। भालूके पीछे पीछे वह भी भागा।

थोड़ी दूर भागनेपर उसे कई लड़कोंके चिल्लानेकी आवाज सुनाई दी। वह रुक गया। लड़के चिल्लाकर बोले, "अरे रामू, उस तरफ मत जाओ। उधर जंगल है। रुक जाओ।"

कुछ देरमें सभी लड़के उसके पास आ पहुंचे। सामने ही दीनू खड़ा था। उसके शरीरपर भालूकी पोशाक लटक रही थी।

रामूने एक बार दीनूको देखा और दूसरी बार जंगलकी ओर भागते हुए भालूको। उसे समझते देर न लगी कि वह अब तक असली भालूके पीछे भाग रहा था। बस, डरके मारे वह रास्तेमें बेहोश होकर गिर पड़ा।

जब उसे होश आया, तो लड़कोंने पूछा, "क्या बात है? बेहोश क्यों हो गए। कोई बीमारी है क्या?"

रामूने इस बीच अपनेको संभाल लिया था। बोला, "बीमारीसे नहीं, भयसे बेहोश हो गया था।"

"भयसे?"

"हां, भाई, मैंने सोचा कि जब भाई साहब या मामाजी सुनेंगे कि मैंने एक छड़ीसे भालूको भगा दिया और उसे थप्पड़से न मार सका, तो वे मुझे ही एक थप्पड़से मार डालेंगे। बस, इसी भयसे बेहोश हो गया था।"

सभी लड़कोंने स्वीकार कर लिया कि अगर बहादुर कोई है, तो वह है रामू। सिर्फ संटू मन ही मन हंस रहा था। ●

किताबकी...

(पृष्ठ १५ से आगे)

"बोलना बंद और काम शुरू," मुन्नूने डांटकर चुन्नूको चुप किया।

शामू अपने गुब्बारोंसे फिर धोखा नहीं खाना चाहता था। उन्हें फेंककर वह चुस्तीसे इधर-उधर भाग रहा था।

बीना कुर्सीपर खड़ी होकर कुछ देखनेकी कोशिश कर रही थी। इतनेमें शामूको कालीनके नीचे कुछ दिखाई दिया। वह खुशीसे चिल्लाया, "यह रहा चश्मा, यह रहा!"

शामूने आव देखा न ताव, झटसे कालीन खींच ली। बीना धड़ामसे काकाकी कुर्सीपर जा पड़ी।

काका आग-बबूला होकर उठ खड़े हुए। "रुको, मैं तुम्हें अभी मजा चखाता हूं, कमबख्तों।" काकाने कदम उठाया ही था कि फर्शपर बिखरी किताबोंसे उन्हें ठोकर लगी और वह गिरते गिरते बचे। परंतु ठोकर लगनेसे काकाका चश्मा किताबोंके नीचेसे निकाल आया।

काकाने झुककर चश्मा उठाया और छड़ीकी ओर लपके। परंतु काकाके दरवाजे तक पहुंचनेसे पहले ही बच्चोंकी वानर-सेना वहांसे गायब हो चुकी थी। ●

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई वर्षोंसे 'पराग' में शिशु-गीत छापे जा रहे हैं। इन शिशु-गीतोंके चयनमें काफी सावधानी बरती जाती है, क्योंकि शुद्ध शिशु-गीत लिखना उतना आसान नहीं है, जितना समझा जाता है। इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चारसे छह साल तकके बच्चे आसानीसे जबानी याद कर लें और अन्य भाषाभाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें। इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलतासे जबानपर चढ़ जाती है।

तब भूल समझ में आई

बंदर मामा रोज रखाते
जाग जाग कर आलू,
पर था नहीं पकड़ में आया
अब तक कोई भालू!

दिन में एक बार जब गुजरे,
खरहा पड़ा दिखाई;
बंदर मामा को तब अपनी
भूल समझ में आई!

—मंगरूराम मिश्र

KISSEKAHANI.COM

भूखा मुझे उठाया है

बीस कचौड़ी, पूड़ी तीस,
दही-बड़े खाए इकतीस,
तीन पाव रबड़ी खाई,
खीर कटोरे भर आई!

लाला सब कुछ खा करके,
बोले यों झल्ला करके,
"पापड़ नहीं खिलाया है,
भूखा मुझे उठाया है!"

—श्रीप्रसाद

तितली रानी

तितली रानी, तितली रानी,
सचमुच हो तुम बड़ी सयानी!
फूलों का मीठा रस पीतीं,
कभी नहीं पीती हो पानी!

प्यारी प्यारी तितली रानी,
मुझ को दे दो अपने पर,
उन्हें लगाकर उड़ जाऊंगा,
मैं अपनी नानी के घर।

—चंद्रपालसिंह यादव 'मयंक'

kissekahani.com

डरपोक चुहिया

राकेट पर चढ़ चुहियारानी,
चली चांद के देश,
सिर पर टोप, लबादा तन पर,
अजब बनाए वेश!

हाथ हिलाकर टा-टा करके,
बोली जब 'गुड-बाई',
घर्र-घर्र आवाज तभी
कानों में पड़ी सुनाई।

भारी आग छोड़ता राकेट
ऊपर उठा गरज कर,
चारों खाने चित्त आ गिरी
चुहिया नीचे डर कर!

—शंभूप्रसाद श्रीवास्तव

साहस !
मनोरंजन !
ज्ञान !

'इंद्रजाल कॉमिक्स' में महाबली वेताल के विस्मयजनक साहसपूर्ण कारनामों .... खूंख्वार जंगल-निवासियों के लोमहर्षक हथकंडों .... जादू-टोने की आश्चर्यजनक घटनाओं के अलावा हर अंक में ज्ञान-विज्ञान, व्यंग्य-विनोद, बोध-कथाओं का भी भरपूर खजाना रहता है।

'इंद्रजाल कॉमिक्स' का हर अंक पठनीय और संग्रहणीय है।

अपनी प्रति अभी से सुरक्षित करा लीजिए।

इंद्रजाल कॉमिक्स

सभी न्यूज-एजेन्टों एवं पुस्तक-विक्रेताओं से हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, तमिल और बंगाली में प्राप्य।

टाइम्स आफ इंडिया प्रकाशन

मूल्य: ६० पैसे

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-५४

बच्चो, नीचेका चित्र है न मजेदार! काश, यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० अक्तूबर तक भेज दो। हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्रकी पृष्ठभूमिको तुम अपनी कल्पनासे और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करनेकी तुम्हें स्वतंत्रता है। सबसे अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियोंको एकसे सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमेंसे दोके चित्रोंको छापा भी जाएगा। लेकिन रंग भरने वालोंकी उम्र १६ सालसे अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर' ही उपयोगमें लाने चाहिएं। चित्रके नीचेवाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है। पूर्तियां भेजनेका पता : **संपादक 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५४), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१।**

यहां से काटो

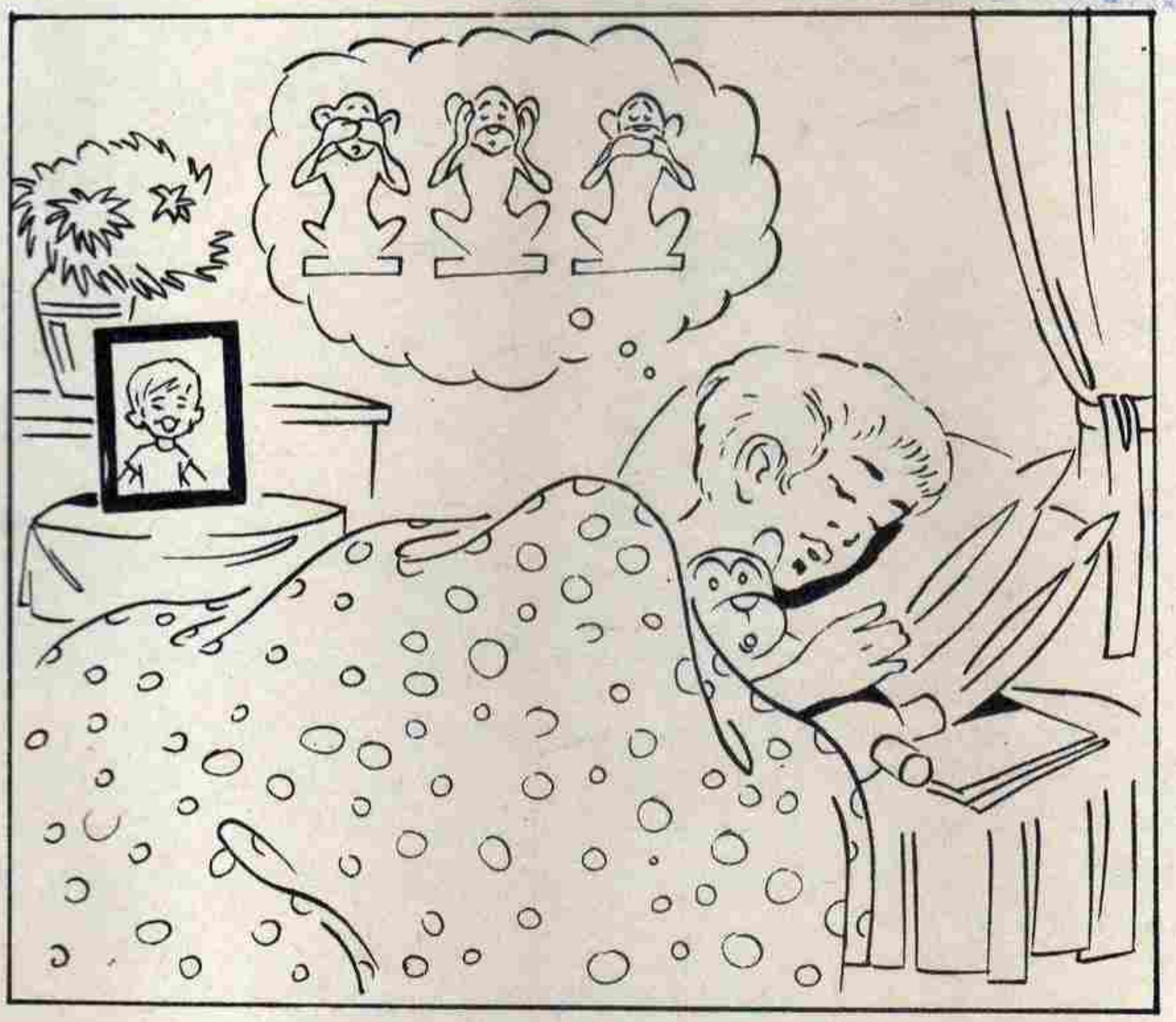

यहां से काटो

यहां से काटो

कूपन

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-५४

नाम और उम्र ----------

पूरा पता ----------

यहां से काटो

पेप्सोडेण्ट में मिले इरियम प्लस से दाँत मोतियों की तरह चमक उठते हैं

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9250627395
mshahid.shahid786@gmail.com

यह देखिए किस तरह : केवल पेप्सोडेण्ट में ही वैज्ञानिक विधि से तैयार किया हुआ तत्त्व इरियम प्लस होता है जिसके कारण चमत्कारी झाग बनता है। यह घना, चमत्कारी झाग मुँह के सभी हिस्सों में पहुँच कर अच्छी तरह सफ़ाई करता है। इसमें दाँतों की स्वाभाविक सफ़ेदी प्रकट करने की विशेषता है जिसके कारण दाँत मोतियों की तरह चमक उठते हैं — ऐसे साफ़ और सफ़ेद जैसे कि पेप्सोडेण्ट से ही हो सकते हैं। साथ ही, इससे मुँह में पेपरमिण्ट की सी ठंडक और ताज़गी महसूस होती है।

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड का
एक उत्कृष्ट उत्पादन

JWT-HDL-5013

रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५१ का परिणाम

'पराग' की रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५१ में जिन तीन चित्रोंको पुरस्कार योग्य चुना गया, उनमेंसे दोको यहां प्रकाशित किया जा रहा है। पुरस्कार-विजेताओंके नाम और पते इस प्रकार हैं :

- **विपिनानंद नौटियाल, दि इंडियन आर्ट स्टुडियो (फोटोग्राफर), १५ बी राजपुर रोड, देहरादून (उ. प्र.)।**
- **हिरण्यमय सिनहा, द्वारा फ्लाइट सार्जेन्ट आर. सी. सिनहा, इक्वीपमेंट डाइरेक्टोरेट, इ–५, ब्लाक नं. ४, पहला माला, विंग ७, वेस्ट आर. के. पुरम्, नई दिल्ली-२२।**
- **घनश्यामदास सारड़ा, द्वारा श्री चोथमल सारड़ा, मारवाड़ी पट्टी, पो. रायगंज, जिला—पश्चिम दिनाजपुर (प. बंगाल)।**

पहला चित्र है विपिनानंद नौटियालका। इस चित्रमें जलकी लहरों, मेंढकों, नाव तथा बच्चेके वस्त्रोंको इतने स्वाभाविक रंगोंसे पूरा किया गया है कि चित्रमें एक अनोखा निखार आ गया है।

इसी प्रकार दूसरा चित्र है हिरण्यमय सिनहाका। यद्यपि इस चित्रके लिए प्रतियोगीने जिन रंगोंका चुनाव किया है वे काफी गहरे हैं, फिर भी चित्रकी पृष्ठभूमिको उभारनेके लिए जिस वातावरणका निर्माण किया गया है, निश्चय ही वह प्रतियोगीके कल्पना-कौशलका द्योतक है।

प्रयास करने वाले दूसरे बच्चोंमें इन लोगोंके प्रयास अच्छे रहे: अलका लक्ष्मण पेडणेकर, बम्बई; विजयकुमार दीक्षित, कानपुर; नवरत्नकुमार, भोपाल; राजिन्दर पाल, बम्बई; विजयकुमार जायसवाल, कलकत्ता; प्रदीपकुमार कोटपाल, मेरठ; दीपक धवन, देहरादून; भगवतीलाल यादव, फतहनगर; अनीता वर्मा, लखनऊ; अनिलकुमार बमरौली; राजीव पारिक, उदयपुर; पंकज गोस्वामी, बीकानेर; सुशीलकुमार गोस्वामी, बीकानेर; विकासचंद्र सक्सेना, लखनऊ; रंजना जोशी, अल्मोड़ा; सुभाष सरकार, इलाहाबाद; अनिल छिब्बर, दिल्ली; सुमनकुमारी साहू, कानपुर; अशोककुमार दुलीचंद जैन, बम्बई; आलोककुमार अवस्थी, बिजनौर; हरीशकुमार वी. भीन्डे, गांधीधाम और देवेंद्रकुमार खंडेलवाल, दुर्ग। ●

दिलीप और उसके साथी मछली पकड़ने गये

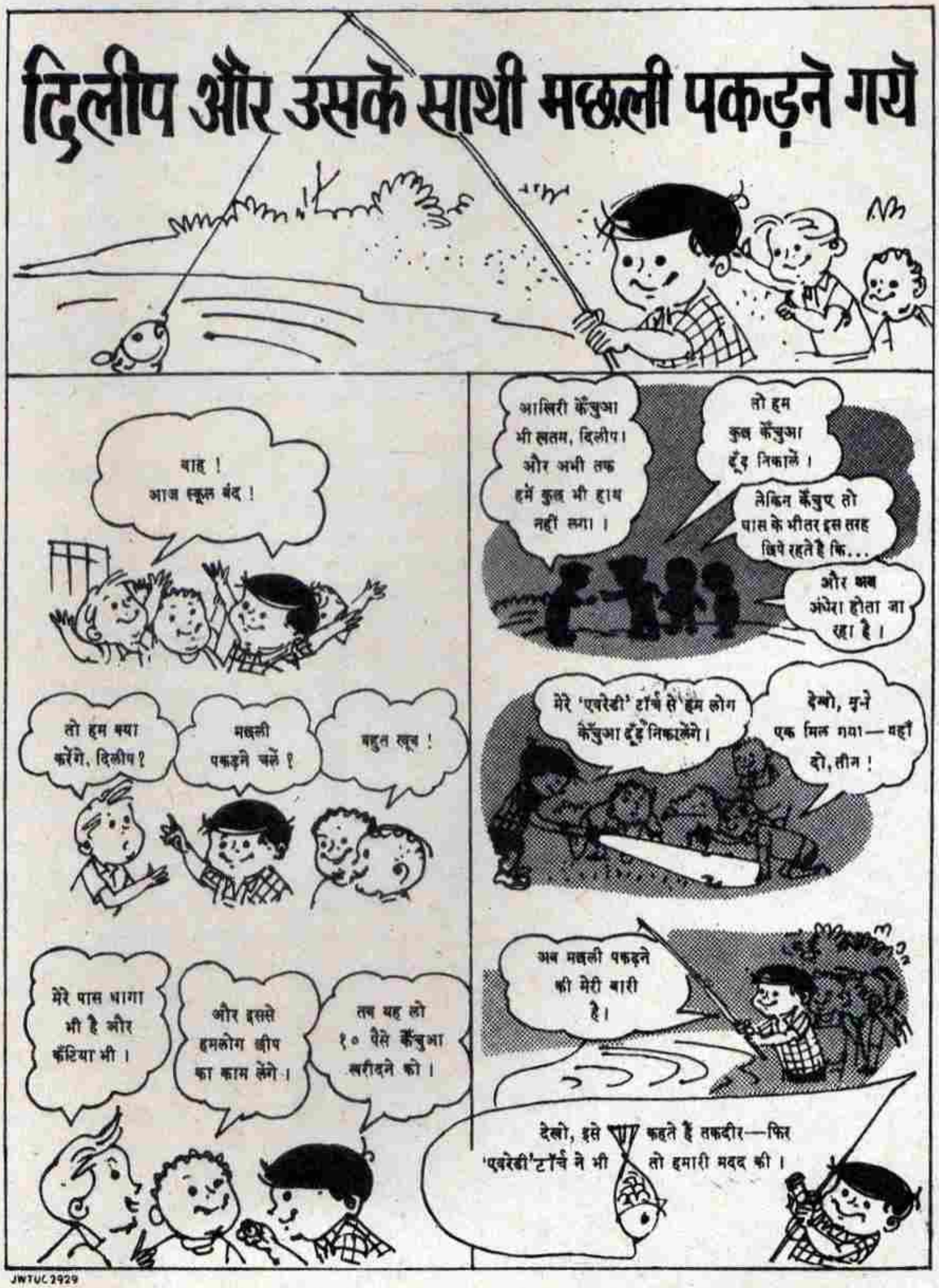

JWTUC 2929

महानगर विशेषांक

नवम्बर १९६६

प्रगतिशील सभ्यता आज नगरों में केन्द्रित हो गई है या दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि किसी भी देश की सभ्यता को जानन के लिए उसके नगरों को एक बार देखना होगा। जिस नगर-बोध की बात आज कहानी, कविता और दर्शन में की जाती है उसी बोध की सारी सामग्री पहली बार एकजुट इस विशेषांक में आप पायेंगे। हिन्दी के सभी तथा भारतीय भाषाओं के अलावा अन्य भाषाओं के लेखकों का भी पूरा सहयोग लेकर इसके लिए रचनाएं जुटाई जा रही हैं। महानगरों के अर्वाचीन-प्राचीन रूप, देश-विदेश में उनके स्वरूप और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य सभी की रंगीन तसवीर इसमें आप देख सकेंगे। महानगर शब्द और नागरिक परिवेश तो एक माध्यम का काम करेगा जिसको आधार मान कर सारे आधुनिक चिंतन का एक विधा-विविध पठनीय और संग्रहणीय विशेषांक इस बार पूजा दिवाली पर आपके हाथों होगा।

ज्ञानोदय

पृष्ठ ३५० से अधिक :
मूल्य : ३ रुपये वार्षिक
ग्राहकों के लिए निःशुल्क

विज्ञापन के लिए अनूठा अवसर —
९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता–२७

बनेट कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, स्वत्वाधिकारी के लिए प्यारेलाल साह द्वारा टाइम्स ऑफ इण्डिया प्रेस बम्बई में मुद्रित और प्रकाशित तथा आनंदप्रकाश जैन द्वारा संपादित; पो. आ. बाक्स २०७, दिल्ली ऑफिस ७, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली–१; कलकत्ता ऑफिस : १३ / १ और १३ / २, गवर्नमेण्ट प्लेस ईस्ट

CIBA

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9250627395
mshahid.shahid786@gmail.com

बिनाका बेबी पावडर, मम्मी प्लीज । मैं एक सुकोमल, मखमल के समान मृदु व दुलार योग्य बेबी बनना चाहती हूं । बच्चे की त्वचा की सुरक्षा के लिए सीबा ने इस पावडर में सर्वाधिक मृदु कीटाणुनाशक ब्राडोसॉल का सम्मिश्रण किया है । मैं भी इसके द्वारा सुरक्षा चाहती हूं, प्लीज ।

Binaca
baby powder with a gentle baby-antiseptic